नववर्ष विशेषांक
जनवरी-2022
मूल्य-40/-
वर्ष 12
अंक 4
नारायण-मंत्र-साधना
विज्ञान
ऋणहर्ता प्रयोग
रोग मुक्ति साधना
कुल देवी देवता सा.
सरस्वती जयंती-
मेधा साधना

# रायपुर में आयोजित साधना शिविर के दृश्य

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

# आत्म-प्रकाश

|| ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ||

समस्त ऋणों से मुक्ति दिलाने में सहायक : ऋणहर्ता प्रयोग

परिवार में सुरक्षा, शांति, एवं सुख-समृद्धि हेतु : कुलदेवता-देवी साधना

जीवन के सभी क्षेत्रों में उन्नति हेतु : मेधा साधना

## सद्गुरुदेव



## स्तम्भ



## साधनाएँ



## ENGLISH



## विशेष



## स्तोत्र



## योग



## आयुर्वेद



प्रेरक संस्थापक

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद

पूजनीया माताजी

(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक

श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक

राजेश कुमार गुप्ता
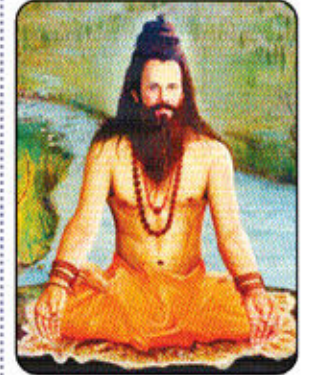
प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक

श्री अरविन्द श्रीमाली

द्वारा

प्रगति प्रिंटर्स

A-15, नारायणा, फेज-1

नई दिल्ली: 110028

से मुद्रित तथा

'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'

कार्यालय :

हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर से

प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति 40/-

वार्षिक 405/-



सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039

WWW address : http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org E-mail : nmsv@siddhashram.me

## नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अत: उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में बाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अत: इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अत: पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

## प्रार्थना

*|| अहं चिन्त्यं मन: चिन्त्यं प्राण चिन्त्यं गुरोश्वर:।*
*सर्व सिद्धि प्रदातव्यं तस्मै श्री गुरुवै नम:।। ||*

**मेरा शरीर और जीवन मात्र गुरु का ही स्मरण करता रहे, मेरा मन हर क्षण गुरु चरणों में लीन रहे, मेरे प्राण गुरु रूपी ईश्वर में अनुरक्त रहे, संसार में केवल गुरु ही हैं, जो मुझे समस्त प्रकार की सिद्धियाँ एवं मुक्ति प्रदान कर सकते हैं। ऐसे सद्‌गुरुदेव को मैं प्रत्येक क्षण स्मरण करता हुआ प्रणाम करता हूँ।**

# भलाई का संदेश

स्वामी विवेकानन्द अमरीका जाने वाले थे। अमरीका जाने से पूर्व माँ शारदा का आशीर्वाद लेने गए और कहा, माँ मैं अमरीका जा रहा हूँ, मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए। यह सुनकर भी माँ पर तो जैसे कोई प्रभाव ही नहीं पड़ा। स्वामी जी ने माँ से फिर आशीर्वाद माँगा, माँ फिर चुप्पी साधे रहीं।

बड़ी देर बाद माँ ने स्वामी जी से कमरे की ताक में पड़ा चाकू ले आने को कहा। उन्होंने चाकू तो झट से लाकर दे दिया। पर आशीर्वाद से चाकू का क्या रिश्ता है, यह बात वे नहीं समझ सके।

इधर माँ ने चाकू पाते ही आशीर्वाद की झड़ी सी लगा दी। स्वामी जी को बड़ा आश्चर्य हुआ और वे माँ से चाकू और आशीर्वाद का सम्बन्ध पूछ ही बैठे।

माँ ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, बेटा। जब मैंने तुम से चाकू माँगा, तो तुम चाकू का फल तो अपने हाथ में पकड़े रहे और दूसरी ओर से चाकू मुझे थमा दिया। इससे मैं समझ गई कि तुम सारी बुराइयों को अपने पास रखकर लोगों की भलाई करोगे। स्वयं चाहे तुम विष ले लो, परन्तु लोगों में अमृत ही बांटोगे। मैं तुम्हें हृदय से आशीर्वाद दे रही हूँ।

इतना सुनकर स्वामी जी बड़े निश्छल भाव से कहने लगे, माँ मैंने तो यह सब सोचा भी नहीं था, मैं चाकू का फल इस कारण पकड़े रहा, जिससे तुम्हें चोट न लगे।

माँ और भी प्रसन्न होकर कहने लगी कि तब तो और भी अच्छा है, तुम्हारे तो स्वभाव में ही भलाई है, तुम किसी का बुरा कभी नहीं करोगे तुम जन्म से ही महान हो, सहज संत हो।

इस तरह माँ से भलाई का संदेश लेकर स्वामीजी ने प्रसन्नतापूर्वक विदा ली।

प्रज्ञा
पुरुष से पुरुषोत्तम

**धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का सर्वोत्तम आधार है, साधक का उत्तम स्वास्थ्य। अतः योग एवं प्राणायाम को जीवन का अंग बनायें।**

*मनुष्य जीवन बुद्धि और ज्ञान से आभूषित होता है और प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन में क्रिया करता है, युग पुरुष किस प्रकार धरती पर अवतरित होकर मानव जाति का कल्याण करते हैं, उन्हीं तथ्यों को स्पष्ट करते हुये, पूज्य सद्गुरुदेव के अमृत वचन उन्हीं की अनूठी ओजस्वी शैली में–*

**अद्वैत स्थापनमचार्य, शंकर लोक सद्‌गुरुं**
**प्रस्थान त्रै भाषयादि, ग्रंथकारम नमामयम**
**अहं ब्रह्म स्वरुपिणम, मत प्रकृति**
**पुरुषात्मकम जगत शून्यं च शून्यं च।।**

जीवन क्षणभंगुर नाशवान है, और धीरे-धीरे काल इस देह को अपने जबड़ों में फंसाता हुआ शरीर को समाप्त कर देता है। देह को समाप्त करने की क्रिया यमराज की है। परन्तु अक्षर और उनसे रचित स्तोत्र एवं ग्रंथ कालजयी होते हैं क्योंकि वे स्तोत्र काल के भाल पर विराट रूप में अंकित होते हैं। वे स्तोत्र ऐसे होते हैं जैसे पूरे आकाश मंडल में बिजली ने उन ग्रंथों की पंक्तियां लिख दी हों, और सारा विश्व उन पंक्तियों को पढ़कर के चमत्कृत होने लग गया हो। ये श्लोक ऐसे ही होते हैं जैसे कि एक सुगंध ने पूरे वायुमण्डल में अद्वितीय अष्टगंध से इन श्लोकों को अंकित किया हो।

**ये श्लोक ऐसे भी होते हैं कि काल की छाती पर पैर रखकर जब काव्यकार, स्तोत्र रचयिता अपने अक्षरों और पंक्तियों के माध्यम से जो कुछ लिखता है उसको काल मिटा नहीं सकता। यह उसके बस की बात नहीं होती, क्योंकि अक्षर दो प्रकार के होते हैं, शब्द दो प्रकार के होते हैं, पंक्तियाँ दो प्रकार की होती हैं स्तोत्र दो प्रकार के होते हैं और उच्च कोटि के विद्वान उन स्तोत्रों को, उन पंक्तियों को कुछ इस प्रकार से पूरे ब्रह्माण्ड में अंकित करते हैं जो किसी भी दृष्टि से मिटाए नहीं जा सकते।**

प्रयत्न तो प्रत्येक क्षण करता है। यमराज नहीं चाहता कि कोई वस्तु जीवित रहे, यमराज नहीं चाहता कि यह शरीर लम्बे समय तक इस पृथ्वी पर विचरण करे। यमराज इस बात को भी नहीं चाहता कि ग्रंथ अपने आप में गतिशील हों। परन्तु सामान्य प्राणी यमराज से मुकाबला नहीं कर पाते, संघर्ष नहीं कर पाते और उनके ये अक्षर धूमिल हो जाते हैं, धीरे-धीरे
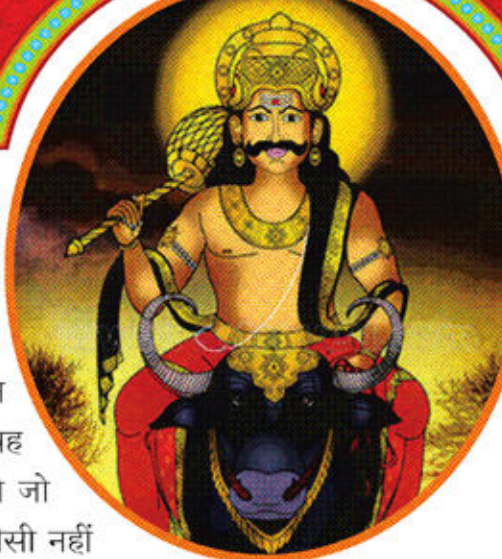
काल उन अक्षरों को, उन पंक्तियों को समाप्त कर देता है और यह देश, यह विश्व उन पंक्तियों से वंचित रह जाता है परन्तु ये पंक्तियां काल के गर्भ में जाने लायक ही होती हैं, ये पंक्तियों मिटने लायक ही होती हैं, ये पंक्तियां धूल-धूसित होने के लिए ही होती हैं क्योंकि इन पंक्तियों में वह ताकत, वह क्षमता, वह ऊर्जा, वह चेतना, वह प्राणस्विता नहीं होती जो यमराज के ललाट को डसने में आबद्ध हो, ये पंक्तियां वैसी नहीं होती कि यमराज की छाती पर पद प्रहार कर उनको लिखा जाए।

ये पंक्तियां ऐसी भी नहीं होती हैं जिन्हें आने वाली पीढ़ियां प्रयत्न करके भी, संभाल सकें। ऐसी पंक्तियां तो वह लिख सकता है जो कालजयी पुरुष होता है। ऐसे स्तोत्रों की रचना वह कर सकता है जिसने काल पर विजय प्राप्त की हो। ऐसे ग्रंथ वह विद्वान रच सकता है, जो अपने आप में इस विश्व से, इस काल से, यम से संघर्ष कर इस बात को सिद्ध कर देता है, कि व्यक्ति तो एक सामान्य (चीज है) उसकी पंक्तियों को काल भी समाप्त नहीं कर सकता, मिटा नहीं सकता।

**परन्तु ऐसे पुरुष बहुत कम होते हैं, सैकड़ों हजारों वर्षों के बाद कोई एक व्यक्तित्व अवतरित होता है जो इस प्रकार की पंक्तियों की, पदों की रचना कर हमेशा-हमेशा के लिए आकाश मंडल में टांग देता है, वायु में सुगंध के द्वारा लिख देता है, पृथ्वी पर छोटी-छोटी बूंदों के माध्यम से अंकित कर देता है, फूलों में पराग-कणों की भांति स्थायित्व दे देता है। और विश्व को अद्वितीय बनाने, सौन्दर्ययुक्त बनाने और श्रेष्ठतम बनाने के लिए उसके मुंह से जो कुछ भी निकलता है वह अपने आप में अमिट होता है।**

**यदि उसकी तुलना ही कर दी जाय यदि, उसके समान और किसी ग्रंथ की या श्लोक की रचना कर दी जाय तो उसका व्यक्तित्व भी अपने आप में कोई अर्थ नहीं रखता, क्योंकि श्रेष्ठता (उस वस्तु की) होती है जिसके अंदर प्राण होते हैं और प्राण नश्वर देह में (भी) होते हैं।** परन्तु इस प्रकार के पदों में, इस प्रकार के स्तोत्रों में महाप्राण होते हैं। और महाप्राण को यमराज स्पर्श नहीं कर पाते, महाप्राण को संसार विस्मृत नहीं कर पाता। क्योंकि महाप्राण तो अजन्मा है, अगोचर है, अद्वितीय है, अद्वेग है, और पूरे वायुमण्डल में अंकित है। वह युग धन्य हो उठता है जिस युग में ऐसे महापुरुष का प्रादुर्भाव होता है, ऐसे अद्वितीय युग पुरुष अवतरित होते हैं। काल के भाल पर अपना नाम अंकित करने वाले महापुरुष इस पृथ्वी पर आकर कुछ समय तक विचरण कर, फिर दूसरे लोक में चले जाते हैं क्योंकि वे तो एक लोक के ही नहीं किंतु ब्रह्माण्ड के समस्त लोकों में उनकी गति होती है—वह चाहे ब्रह्म लोक हो, विष्णु लोक हो, भगवान शंकर का शिव लोक हो, रंभा, उर्वशी अप्सराओं से युक्त इंद्र लोक हो, या कोई अन्य लोक हो जो अज्ञेय है, अगोचर है।
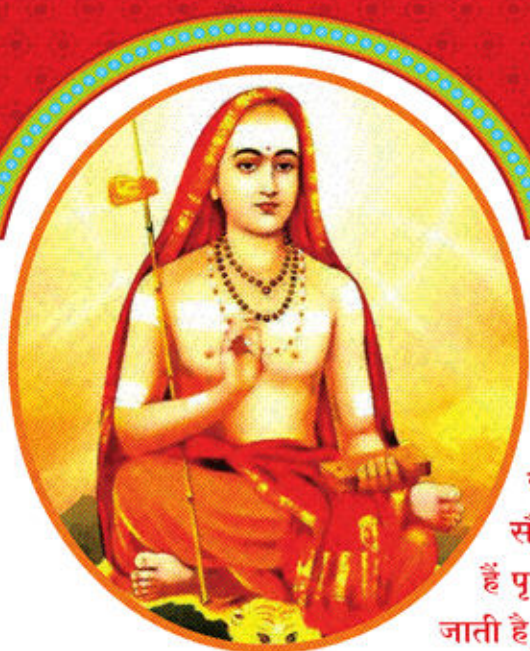
**ऐसे युगपुरुष को युग प्रणाम करता है, ऐसे युग पुरुषों को दिशाएं सिर झुका कर वरमालाएं पहनाती हैं, दसों दिशाएं ऐसे व्यक्तित्व का श्रृंगार करती हैं आकाश छाया की भांति उन पर झुककर अपने आप को सौभाग्यशाली समझता है और जहां-जहां भी उनके पैर बढ़ते हैं पृथ्वी स्वयं खड़ी होकर नतमस्तक हो जाती है, प्रणम्य हो जाती है, और इस बात का अनुभव करती है कि वास्तव में ही मेरे इस विराट फलक का, मेरी इस विराट पृथ्वी का वह भाग कितना सौभाग्यशाली है, कि जहां इस प्रकार के युगपुरुष ने चरणचिह्न अंकित किए।**

प्रकृति निरन्तर इस बात के लिए प्रयत्नशील होती है कि ऐसे युग-पुरुष का अवतरण हो। प्रत्येक युग इस बात का चिंतन करता है कि ऐसे अद्वितीय व्यक्तित्व का प्रादुर्भाव हो, और यह निश्चित है कि कई सौ-हजार वर्षों के बाद ऐसे युग-पुरुष का, ऐसे श्लाका पुरुष का अवतरण होता है।

साधारणत: एक अनुभव होता है कि एक पुरुष ने जन्म लिया, ऐसा विश्वास होता है कि देहधारी ने इस पृथ्वी पर जन्म लेकर कुछ कार्य किया। ऐसा अनुभव होता है कि जैसे सैकड़ों, हजारों, लाखों व्यक्ति जन्म लेते हैं और निरंतर गतिशील होते हुए काल के गर्भ में समा जाते हैं। परन्तु प्रश्न यह उठता है कि क्या काल सभी को हृदयगंम कर सकता है? प्रश्न यह उठता है कि काल में क्या इतनी क्षमता होती है कि ऐसे व्यक्तियों को, ऐसे युग-पुरुषों को उद्धृष्ट कर सके? क्या यह संभव हो सकता है कि काल की दाढ़ों में ऐसे व्यक्तित्व समाहित हो सकें?

यह संभव नहीं है, यह कदापि संभव नहीं है!

ऐसा संभव हुआ ही नहीं है–**इसलिए कि ऐसे युग-पुरुष का काल स्वयं अभिनन्दन करता है, दसों दिशाएं एकटक उस युग-पुरुष की ओर ताकती रहती हैं, पृथ्वी और आकाश दोनों मिलकर उस व्यक्तित्व की महिमा को मंडित करने की सफल-असफल कोशिश करते रहते हैं। मेघ अपनी बूंदों के माध्यम से इस बात का एहसास कराता है कि वास्तव में ही यह एक अद्वितीय व्यक्तित्व है।** इन्द्र स्वयं इस बात से ईर्ष्या करता है कि ऐसे महापुरुष के पैरों के नीचे जो रजकण आ गए हैं वे रजकण धन्य हैं, हीरे-मोतियों से भी ज्यादा मूल्यवान हैं, माणिक्य और अन्य रत्नों से भी ज्यादा श्रेष्ठ हैं क्योंकि उन रजकणों में सुगंध होती है, उन रजकणों में एक विराटता होती हैं, उन रजकणों में एक अद्वितीयता होती है, और उस अद्वितीयता को प्राप्त करने के लिए योगी, यति, संन्यासी, लालायित रहते हैं–भले ही वे योगी और संन्यासी उन पंच भूतात्मक व्यक्तियों को दिखाई नहीं देते हों। भले ही वे गोचर या अगोचर हों, भले ही वे इस पृथ्वी पर गतिशील होते हुए अनुभव नहीं होते हों।

प्रेम कभी दावा नहीं करता, वह सदैव देता है।
प्रेम और वासना में उतना ही अन्तर है,
जितना कंचन और काँच में।

परन्तु उनमें और इस प्रकार के **युग-पुरुष में एक बहुत बड़ा अंतर होता है जिस अंतर को काल मिटा नहीं सकता, यमराज समाप्त नहीं कर सकता और युग उस अंतर को ''नहीं'' नहीं कह सकता क्योंकि ऐसा इतिहास पुरुष गोचर होते हुए भी अगोचर है,** अगोचर होते हुए भी गोचर है। वह दिखाई देते हुए भी नहीं दिखाई देता है, और वह नहीं दिखाई देते हुए भी दिखाई देता है, क्योंकि वह देहगत अवस्था में जीवित नहीं रहता, क्योंकि वह इस चर्ममय शरीर का दास नहीं होता, क्योंकि वह इस शरीर के आवरण में ढंका हुआ नहीं होता। वह इसके अंदर, बहुत अंदर उतरकर उन प्राणमय कोषों में समाहित होता है जो कि होते हुए भी नहीं दिखाई देते हैं।

वह व्यक्ति अस्थि-चर्ममय होकर सामान्य मनुष्यों की तरह दिखाई देता है, लीला करता है, विचरण करता है, सुख-दु:ख, हानि-लाभ, जीवन-मरण को सबके सामने रखता हुआ अपने मार्ग पर बराबर गतिशील रहता है। उसकी गति को कोई अवरूद्ध नहीं कर पाया, उसकी गति को आकाश अनुभव नहीं कर पाया। उसकी गति को दसों दिशाएं अवलोकित नहीं कर पाईं और उसकी गति को काल अवरूद्ध नहीं कर पाया।

**क्योंकि वह गति नहीं है वह एक चेतना है, वह एक प्रकाश पुंज है, एक ज्योति है, वह जीवन की एक अद्धितीयता है, वह इस पृथ्वी का सौन्दर्य है, वह इस युग का अन्यतम शलाका पुरुष है, वह इस आकाश की एक अद्‌भुत सौन्दर्ययुक्त गहराई है और यदि ब्रह्मा स्वयं आकाश की ओर उड़े तो भी ऐसे शलाका पुरुष का सिर कहां तक है, इसको नाप नहीं सकता। और यदि विष्णु स्वयं गरूड़ पर आरूढ़ होकर, पाताल में गमन करते हैं तो भी उसके पद चिह्न देख नहीं पाते, उसकी थाह नहीं ले पाते।**

इतने अद्धितीय युग-पुरुष को पाकर केवल एक ही शब्द ब्रह्मा और विष्णु के मुख से उच्चरित होता है कि नेति-नेति।

**जो दृश्यमान होते हुए भी अदृश्यमान है, जो दिखाई देते हुए भी नहीं दिखाई देते हैं, जो नहीं दिखाई देते हुए भी पूर्ण रूप से दिखाई देते हैं, जो नित्य लीला विहारी हैं, जो प्रेम हैं, जो श्रद्धा हैं, जो करुणा हैं, जो श्रेष्ठता है, दिव्यता है, तेजस्विता है और वह सब कुछ जो इस पृथ्वी पर हजारों-हजारों वर्षों से लिखा गया है।**

उसके चेहरे पर एक तेजस्विता है, आभा-मण्डल है, उसकी आंखों में एक अथाह करुणा का सागर लहलहाता रहता है। उसके ललाट की भृकुटि तीनों लोकों को दृश्य करती रहती है, और उसके भाल पर जो त्रिवली होती है वह ब्रह्म लोक, विष्णु लोक और रुद्र लोक की व्याख्या करती है। ये तीनों रेखाएं सत्व, रज, तमस गुणों का विशुद्ध वर्णन हैं।
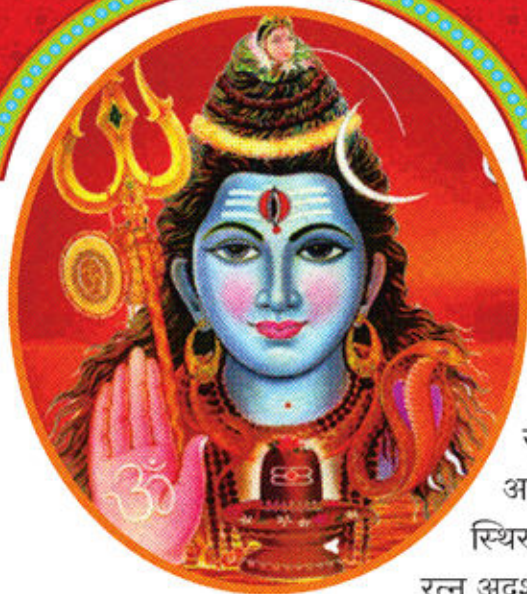
ये तीनों पंक्तियां उस व्यक्ति की विराटता को स्पष्ट करती हैं, क्योंकि ये तीन पंक्तियां जहां उसके मस्तक पर अंकित होती हैं, वहीं ये तीनों पंक्तियां उसकी ग्रीह्वा पर भी पूर्ण रूप से दृश्यमान होती हैं। इसलिए साक्षात सरस्वती स्वयं उसके कंठ में बैठकर अपने आप को गौरवशाली अनुभव करती है क्योंकि उसके कंठ में काव्य इसी प्रकार से स्थिर होते हैं जिस प्रकार से इस पृथ्वी के गर्भ में लाखों करोड़ों रत्न अदृश्यमान हैं और ग्रीह्वा की इन तीन पंक्तियों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि वास्तव में ही वह युग-पुरुष है।

ललाट की इन तीनों पंक्तियों के माध्यम से ही उच्च कोटि के योगी, यति और संन्यासी यह अनुभव करते हैं कि यह सामान्य कलेवर में लिपटा हुआ व्यक्तित्व कुछ फिट का नहीं, कुछ इंचों का नहीं अपितु श्रेष्ठतम है, अद्वितीय है और विश्व को विजय प्रदान करने के लिए ही इस पृथ्वी पर अवतरित हुआ है।

### *देवता क्या हैं?*
### *कोई अद्‌भुत तत्व नहीं हैं!*

देवता, कोई ऐसा शब्द भी नहीं है कि जिसके बारे में हम चौंके, जिसके बारे में हम नवीन धारणा बनाएं। देवता ठीक वैसी ही योनि है जैसी गंधर्व योनि है, जैसी भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षस, किन्नर, अप्सरा योनियां हैं। उन गोचर और अगोचर योनियों में देवता भी एक योनि है, जो नहीं दिखाई देते हुए भी दिखाई देते हैं।

**वेदों ने, देवताओं का वर्णन किया है। वहां कुछ देवता दृश्यमान हैं–अग्नि देवता, वायु देवता, सूर्य देवता, चन्द्रमा देवता–जिनको हम नित्य देख पाते हैं। परन्तु कई देवता ऐसे हैं जिनको हम स्थूल आंखों से नहीं देख पाते जैसे–इंद्र हैं, मरुद गण हैं, ब्रह्मा हैं, विष्णु हैं, महेश हैं, महाकाली हैं, छिन्नमस्ता हैं, भुवनेश्वरी हैं, त्रिपुरसुन्दरी हैं। इन दोनों प्रकार की देवियों और देवताओं में कोई अंतर नहीं है। अंतर है तो केवल इतना कि जब तक अंत:करण में दीपक प्रज्वलित नहीं होता, तब तक अंदर ज्ञान की चेतना जाग्रत नहीं होती। जब तक आत्म-चक्षु पूर्णरूप से जागृत नहीं होते ,जब तक कुण्डलिनी सहस्त्रार पर जाकर नृत्य नहीं करती तब तक उन देवियों और देवताओं को उन नंगी आंखों से नहीं देखा जा सकता।**

ठीक इसी प्रकार से ऐसे अवतरित उच्च कोटि के योगियों को भी हम देख नहीं पाते। बस यही अनुभव कर पाते हैं कि यह पांच या छ: फुट का व्यक्तित्व है, यह अनुभव कर पाते हैं कि यह इतने वजन का व्यक्ति है।

**प्रत्येक वर्ष सिर्फ एक बुरी आदत को मूल से छोड़ दिया जाय तो कुछ वर्षों में बुरा से बुरा व्यक्ति भी अच्छा बन सकता है।**

परन्तु क्या ऐसे व्यक्तित्व का मूल्य वजन से, लम्बाई से या चौड़ाई से आंका जा सकता है?

**यह तो स्थूल आँखें हैं, स्थूल नेत्र हैं और वे नेत्र कुछ भी देखने में समर्थ नहीं हैं। जिस प्रकार से हमारे नेत्र ब्रह्मा को साक्षात् नहीं देख पाते, विष्णु के साक्षात् दर्शन नहीं कर पाते, रुद्र की अद्वितीय गतिविधियों को समझ नहीं पाते उसी प्रकार उन नेत्रों के माध्यम से ऐसे उच्चकोटि के योगियों के आत्म को भी नहीं देख पाते, उनकी विराटता को भी नहीं देख पाते, उनकी विशालता को भी अनुभव नहीं कर पाते।**

और मनुष्य तो एक सामान्य व्यक्तित्व है वह व्यक्ति सामान्य है जो उत्पन्न होता है, और मृत्यु के गर्भ में समा जाता है। वह व्यक्ति सामान्य है जो योनिज होता है और एक दिन श्मशान में जाकर सो जाता है, वह व्यक्ति सामान्य है जो जन्म लेता है और उसको किसी प्रकार का कोई भान नहीं होता और निरन्तर समाप्त होने की प्रक्रिया में गतिशील होता है। ऐसे मनुष्यों का कोई मूल्य नहीं होता। युग ऐसे मनुष्यों का अभिनन्दन नहीं करता। आकाश ऐसे व्यक्तियों के चरणों में अपना सिर नहीं झुकाता, पृथ्वी ऐसे व्यक्ति के चरणों के प्रति नमन नहीं हो पाती। परन्तु सम्पूर्ण प्रकृति युग-पुरुषों का अभिनंदन करती है, क्योंकि ये केवल मात्र व्यक्तित्व नहीं होते अपितु सम्पूर्ण युग को समेटे हुए एक विराट व्यक्तित्व होते हैं, जिनको देखने के लिए स्पर्श करने के लिए, अनुभव करने के लिए देवता-गण भी तरसते रहते हैं।

**देवता और मनुष्य, गंधर्व, यक्ष, किन्नर ये सभी इस बात के लिए लालायित रहे हैं कि वे इस पृथ्वी पर अवतरित हों, वे इस पृथ्वी की लीलाएं देख सकें, वे इस पृथ्वी पर गतिशील हो सकें, और वे इस पृथ्वी को कुछ प्रदान कर सकें। परन्तु यह संभव नहीं हो पाता क्योंकि देवताओं में इतनी सामर्थ्य नहीं होती कि वे जन्म ले सकें, देवताओं में वह क्षमता नहीं हो पाती कि वे इस पृथ्वी पर अवतरित हो सकें। उन देवताओं में यह विशेषता नहीं होती कि किसी प्रकार से मनुष्य बनकर पृथ्वी पर गतिशील होने की क्रिया करे।**

यह एक कठिन कार्य है, यह कांटों भरा कार्य है, यह ठीक वैसा ही कार्य है जैसे शूलों की शर-शैय्या पर लेटा हुआ व्यक्ति हो, यह एक ऐसा कार्य है जैसे अंधड़, और तूफान में व्यक्ति निरन्तर अपने गंतव्य मार्ग पर गतिशील हो, यह एक ऐसा ही कार्य है जहां घटाटोप अंधकार में भी प्रकाश बिंदु दृश्यमान हो सके।

देवताओं में इतनी सामर्थ्य नहीं होती, देवताओं में इतनी क्षमता नहीं हो पाती। हमने उनको देवता शब्द से संबोधित किया है और देवता का तात्पर्य है जो कुछ प्राप्त करने की क्रिया करता है वह देवता है और वह देवता प्राप्त करता है इस देहधारी मनुष्य से, जप-तप, पूजा-पाठ, ध्यान, धारणा,
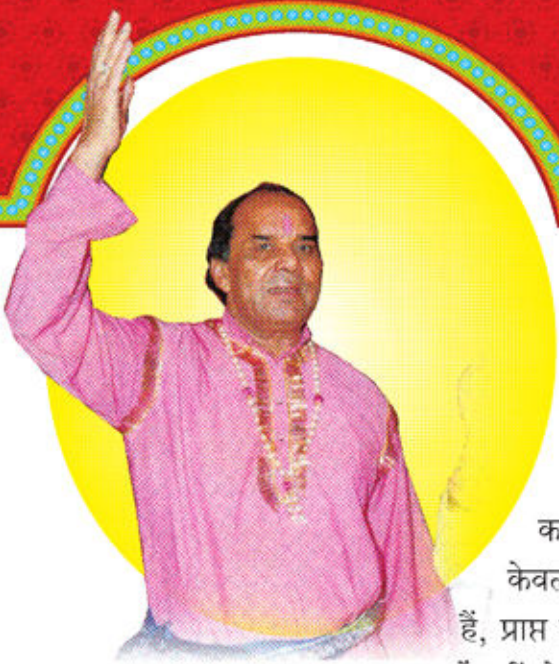
समाधि, स्तोत्र और विभिन्न प्रकार के मंत्रों का उच्चारण।

क्योंकि देवता का तात्पर्य ही लेना है, स्वीकार करना है। परंतु क्या देवता पुन: देने में समर्थ है ?

शास्त्रों में ऐसा विधान नहीं है। देवता ऐसा प्रदान नहीं कर सकते क्योंकि उनके नाम से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि वे केवल लेने की क्रिया जानते हैं, स्वीकार करने की क्रिया जानते हैं, प्राप्त करने की क्रिया जानते हैं परन्तु प्रदान करने की क्रिया का भान उन्हें नहीं होता।

जिस प्रकार चन्द्रमा स्वयं प्रकाशवान नहीं है, वह सूर्य के प्रकाश से देदीप्यमान है। यदि सूर्य नहीं है तो चन्द्रमा का भी अस्तित्व नहीं होता, यदि सूर्य नहीं है तो चन्द्रमा की किरणें भी पृथ्वी पर नहीं छिटकतीं, यदि सूर्य नहीं है तो चन्द्रमा दिखाई नहीं दे सकता क्योंकि चन्द्रमा का सारा आधार बिंदु सूर्य है। ठीक उसी प्रकार देवताओं का आधार बिंदु ऐसे उच्चकोटि के युग-पुरुष होते हैं जो इन देवताओं से ऊपर होते हैं, जिनकी देवता अभ्यर्थना करते हैं, जिनकी देवता प्रार्थना करते हैं, जिनके सामने देवता हाथ बांध कर खड़े होते हैं क्योंकि देवताओं की द्युति, देवताओं का प्रकाश, देवताओं के द्वारा प्रदान करने की क्षमता इस प्रकार के उच्चकोटि के ऋषियों और महापुरुषों के माध्यम से ही प्राप्त हो सकती है।

**और इस प्रकार के महापुरुष इसलिए पृथ्वी पर अवतरित होते हैं कि देवता लोग इस पृथ्वी पर विचरण करने के लिए लालायित होते हैं। वे इस बात को अनुभव करना चाहते हैं कि दुख क्या है, सुख क्या है, हर्ष क्या है, विषाद क्या है, प्रेम क्या है, अश्रु क्या है, हृदय की उद्वेलना क्या है, और एक दूसरे की सामीप्यता क्या है।** ये संचारी भाव देवताओं में नहीं होते, ये संचारी भाव दैत्यों में भी नहीं होते। ऐसा वरदान तो केवल मनुष्य जाति को ही मिला है, और जो इन संचारी भावों में गतिशील हैं वह अपने आप में एक आनन्द अनुभव करता है क्योंकि आनन्द की अनुभूति प्रेम के द्वारा संभव है, क्योंकि आनन्द की अनुभूति सौन्दर्य के द्वारा संभव है।

**और जहां प्रेम है जहां हर्ष है वहां विषाद भी है, जहां मिलन है वहां विरह भी है, वहां तड़फ है, वहां बेचैनी भी है। और यह तड़फ, यह बेचैनी, यह उच्छृंखलता, यह वियोग, यह मिलन जीवन का सौन्दर्य है और जो इस सौन्दर्य को प्राप्त नहीं कर पाते वे अपने आप में अभागे होते हैं, और देवता इन तत्वों से परे होते हैं, वे इन तत्वों को समझ नहीं पाते, वे इन तत्वों में समाविष्ट नहीं हो पाते। जब तक समाविष्ट नहीं हो पाते तब तक देवता एकांगी होते हैं। और एक ही प्रकार के रंग से बना हुआ चित्र अद्वितीय नहीं बन सकता। जिसमें विविध रंग होते हैं, विविध आयाम होते हैं, विविध श्रेष्ठता होती है और विभिन्नता होती है उस विविधता को ही सौन्दर्य कहते हैं।**

**इच्छाएं कभी तृप्त नहीं होती।
अतः इनको नियंत्रित रखो।**
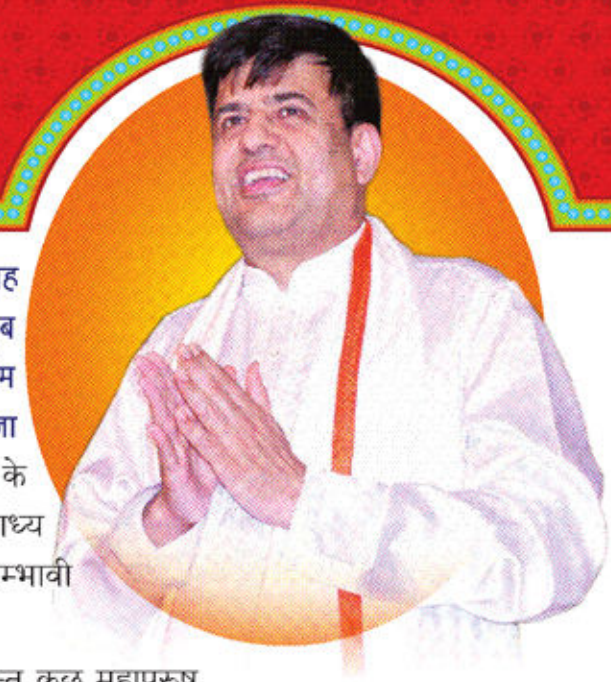
**प्रत्येक देवता सौन्दर्यवान बनना चाहता है और वह सौन्दर्यवान तभी हो सकता है जब उसमें कोमलता हो, जब उसमें स्नेह हो, जब उसमें आदर की भावना हो, जब उसमें प्रेम करने की क्षमता हो, जब उसमें सौन्दर्य को समझने की चेतना हो।** यह सब मनुष्य के द्वारा ही संभव है। मनुष्य जन्म लेने के बाद मृत्यु की पगडंडी पर गतिशील होने के लिए ही बाध्य होता है। क्योंकि जो उत्पन्न होता है उसका नाश अवश्य सम्भावी है।

जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु निश्चित है। परन्तु कुछ महापुरुष, कुछ अद्वितीय पुरुष, कुछ युग पुरुष ऐसे होते हैं, जो मृत्यु की पगडंडी पर नहीं चलते अपितु अमृत के सागर पर पांव रखते हुए गतिशील होते हैं। वे युग-पुरुष पृथ्वी पर नहीं चलते अपितु वायुमंडल पर अपने चरण-चिह्नों को छोड़कर गतिशील होते हुए भी अगतिशील रहते हैं, क्योंकि सामान्य व्यक्तित्व ऐसे युग-पुरुषों को नहीं समझ पाता। और ऐसे ही युग-पुरुष अयोनिज कहलाते हैं।

ऐसा लगता है कि जैसे किसी मां के गर्भ से जन्म लिया हो, ऐसा लगता है कि जैसे किसी मां के गर्भ में नौ महीने का वास किया हो, ऐसा लगता है कि जैसे किसी मां के उदर में वृद्धि को प्राप्त हुआ हो। परन्तु ऐसा अनुभव ही होता है। वास्तविकता कुछ और ही होती है।

**उसके गर्भ में केवल उतना ही वजन रहता है जितना एक गुलाब के पुष्प का होता है। भगवान सदाशिव जब पार्वती को अमर कथा सुना रहे थे और जब उन्होंने डमरु नाद किया तो सारे पक्षी, कीट, पतंग (पशु) उस स्थान से सैकड़ों-हजारों मील दूर चले गए। एक भी प्राणी वहां रहा नहीं क्योंकि जगत-जननी पार्वती के हठ की वजह से औढरदानी भगवान शिव उन्हें अमरत्व का ज्ञान देना चाहते थे, उसे बताना चाहते थे कि किस प्रकार से अमरत्व प्राप्त किया जा सकता है, उसे बताना चाहते थे कि किस प्रकार से व्यक्ति जन्म लेकर के मृत्यु के गर्भ में समाहित नहीं होता, उसे बताना चाहते थे कि किस प्रकार से व्यक्ति काल की दाढ़ों में नहीं फंस सकता।**

परन्तु ऐसा ज्ञान प्रत्येक प्राणी को तो दिया जाना संभव नहीं है। तब तो इस सृष्टि पर करोड़ों-करोड़ों व्यक्तित्व खड़े हो जाएंगे और पृथ्वी उन अवांछनीय व्यक्तियों के बोझ से दबकर रसातल में चली जाएगी। इसलिए व्यक्ति जन्म लेता है और पुराना होकर के समाप्त हो जाता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर भगवान सदाशिव ने डमरु का निनाद किया और उसके निनाद से, उसकी चोट से, उसकी आवाज से सैकड़ों-सैकड़ों मील दूर तक देवता, गंधर्व, यक्ष, किन्नर, भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षस, जीव, कीट, पतंग, पशु और पक्षी रहे ही नहीं। और **जब ऐसा भगवान शिव ने अनुभव किया तो अमरनाथ के पास स्वयं अमृत्व बनकर सदाशिव उस अद्वितीय ज्ञान को देने के लिए उद्धृत हुए जिसे अमरत्व कहा**
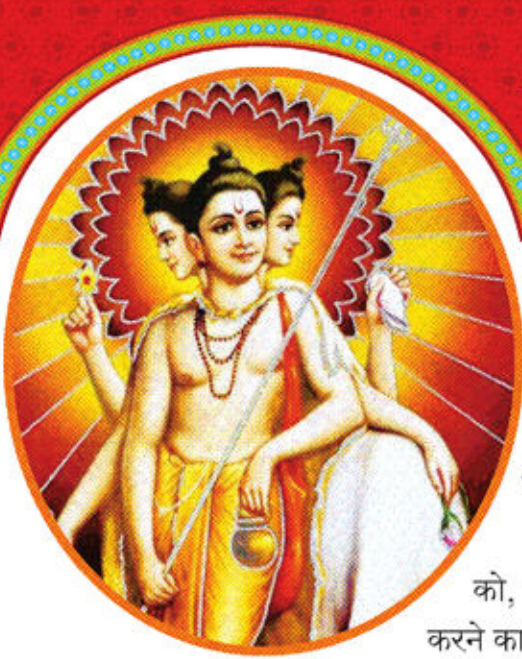
**जाता है जिसके माध्यम से व्यक्ति जरा मरण से रहित हो जाता है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अयोनिज बन जाता है, जिसके माध्यम से व्यक्ति वृद्धता की ओर गतिशील नहीं हो पाता, जिसके माध्यम से व्यक्ति काल की ओर नहीं जा पाता।**

और जब ऐसा हुआ कि त्रिपुरारी ने उस अमरकथा को, उस गुह्य विद्या को, उस गोपनीय रहस्य को उद्घाटित करने का निश्चय किया जो अत्यंत रहस्यमय है, अत्यंत गोपनीय है, अत्यंत दुर्लभ है। उस समय एक कबूतरी और एक कबूतर बैठे हुए थे और डमरु के निनाद से वे दोनों उड़ गए, परन्तु एक अंडा कबूतरी के उदर से निकला अंडज वहीं रह गया क्योंकि उस अंडे में यह क्षमता नहीं थी कि वह गतिशील हो सके, उड़ सके। और ज्योंहि अमर कथा प्रारम्भ हुई त्योंकि वह अंडा फूट गया, और उसमें से जो जीव निकला उसने उस अमरत्व कथा का श्रवण किया।

कुछ ही समय के बाद सदाशिव को भान हुआ कि मेरे और पार्वती के अलावा भी कोई प्राणी है जो इस रहस्य को सुन रहा है, और समझ रहा है। उन्होंने त्रिशूल फैंका और वह कबूतर वहां से उड़ा।

उसी समय वेदव्यास की पत्नी भगवान सूर्य को अर्घ्य दे रही थी। मंत्र उच्चारित करने के लिए उनका मुख खुला था, कि वह प्राणी उनके मुंह के माध्यम से उदरस्थ हो गया। सदाशिव वेद व्यास के घर के बाहर त्रिशूल गाढ़कर बैठ गये कि जब भी यह बालक बाहर निकलेगा तभी इसको समाप्त करना आवश्यक होगा क्योंकि इसने उस गुप्त विद्या को समझ लिया है जो कि अत्यंत गोपनीय है। इस प्रकार इक्कीस वर्ष बीत गए।

बहुत बड़ी अवधि! अंदर जो शिशु गतिशील हो रहा था, उसने मां से पूछा–''अगर मेरे भार से तुम व्यथित हो रही हो तो मैं बाहर निकल सकता हूँ। भगवान सदाशिव मेरा कुछ भी अहित नहीं कर सकते क्योंकि मैं उस अमरत्व को समझ चुका हूँ।''

**वेद व्यास की पत्नी ने कहा, ''गुलाब के फूल से भी कम वजन मुझे अपने पेट में अनुभव हो रहा है।''** ठीक उसी प्रकार जो अवतरित होते हैं उनकी मां के गर्भ में भी कोई वजन अनुभव नहीं होता। उतना ही वजन होता है कि जितना कि एक गुलाब के फूल का होता है। ऐसे प्राणियों का, ऐसे व्यक्तियों का जन्म कभी-कभी ही होता है, ऐसे युगपुरुष यदा-कदा ही पृथ्वी लोक पर विचरण करते हैं और वे नित्य लीला विहारिणी के इंगित पर अपनी लीलाओं का समापन करते हुए अपने प्रवचनों से, अपने कार्यों से, अपनी विद्वता और ज्ञान से जनमानस को प्रभावित करते हुए इस भौतिकता के अंधकार को दूर कर आध्यात्मिकता के प्रकाश को फैलाने में सहायक होते हैं।

**दूसरों को उपदेश देने वाले तो बहुत मिलेंगे,**
**पर ऐसे लोग नहीं**
**जो उपदेश के अनुसार स्वयं आचरण करते हैं।**
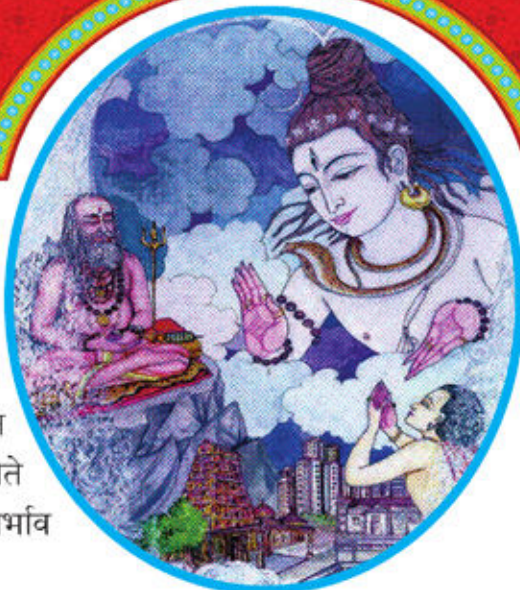
पिछले अध्याय में मैंने इंगित किया था कि देवता लोग भी मनुष्य योनि में जन्म लेकर मनुष्य रूप में अवतरित होकर इस पृथ्वी पर विचरण करने का सफल-असफल प्रयास करते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि वे सफल हो ही जाएं। फिर भी देवता लोग भी इस पृथ्वी तल पर आने के लिए मचलते हैं, प्रयत्न करते हैं और सफल होते हैं। परन्तु ऐसा तब होता है जब ऐसे महापुरुष का आविर्भाव होता है।

**मैंने शुकदेव की कथा के माध्यम से बताया कि वेद व्यास की पत्नी के गर्भ में इक्कीस वर्ष तक रहने के बाद उस गर्भस्थ बालक शुकदेव ने कहा–''यदि मेरी वजह से तुम्हें पेट में कोई भार अनुभव हो रहा हो तो मैं बाहर निकलने के लिए तैयार हूँ क्योंकि मैं अमर कथा का श्रवण कर चुका हूँ और यह भी मुझे ज्ञात है कि भगवान शिव का त्रिशूल मुझे समाप्त नहीं कर सकता यह अलग बात है कि भगवान की अकृपा या उनका तीसरा नेत्र मुझे भस्म कर सकता है, मुझे श्राप दे सकता है परन्तु मेरा समापन नहीं कर सकता। क्योंकि मैंने अपने जीवन में भगवान सदाशिव, मदनान्तक त्रिपुरारी और पराम्बा जगत जननी मां पार्वती के दर्शन किए हैं और उनके पारस्परिक संवाद और परिसंवादों को सुना है, हृदयंगम किया है और मुझे यह ज्ञात हुआ है कि अमरत्व क्या है, अमर होने की कला क्या है, बुढ़ापे को कैसे परे धकेल सकते हैं, यौवन को किस प्रकार से अक्षुण्ण रखा जा सकता है और मृत्यु रूपी पाश से अपने आपको कैसे बचाया जा सकता है।''**

और वेदव्यास की पत्नी ने जो उत्तर दिया वह अपने आप में मनन योग्य है। उसने कहा–**''तुम मेरे गर्भ में हो, और इक्कीस वर्ष से हो। नौ महीनों से नहीं, साल भर से भी नहीं, पांच वर्षों से भी नहीं, इक्कीस वर्षों से हो मगर इक्कीस वर्षों में भी मुझे ऐसा प्रतीत नहीं हुआ कि गुलाब के फूल से भी ज्यादा वजन मेरे उदर में हो।''**

इस प्रसंग के द्वारा मैं यह स्पष्ट करने का प्रयत्न कर रहा हूँ कि इस प्रकार के युग-पुरुष, इस प्रकार के देव-पुरुष, इस प्रकार के महापुरूष अयोनिज होते हैं। वे योनि के द्वार से जन्म नहीं लेते। यह बात तो सत्य है कि वे किसी न किसी मां के गर्भ का चयन करते हैं और लीला विहारी के रूप में मां के गर्भ में नौ महीने रहते भी हैं परन्तु जिस समय जन्म का क्षण आता है उससे पहले तक मां को यह भान नहीं होता कि मेरे पेट में किसी प्रकार का वजन है, उस मां को भान ही नहीं होता कि मेरे पेट में किसी प्रकार का दर्द है, उस मां को यह चिंतन ही नहीं रहता कि मैं किसी प्रकार से उदर पीड़ा से युक्त हूं।

**उसको ऐसा लगता है कि जैसे मैं सामान्य रूप से कार्य कर रही हूँ। और ठीक उस समय जब वह बालक, जब वह महापुरुष, जब वह युग-पुरुष जन्म लेने की क्रिया का प्रारम्भ करते हैं तो उस**

**वृद्धावस्था आने पर सभी अंग जीर्ण हो जाते हैं, किन्तु तृष्णा ही कभी जीर्ण नहीं होती।**

**समय मां लगभग अवचेतन मानस में चली जाती है या दूसरे रूप में कहें तो तंद्रा रूप में परिवर्तित हो जाती है। सही शब्दों में कहा जाए तो यह क्षण ऐसा होता है जब न निद्रा होती है, न जाग्रत अवस्था होती है तथा उसे कुछ भान ही नहीं रहता। उसे भान तो तब होता है जब युग-पुरुष अवतरित होकर के उसके पार्श्व में लेट जाता है और उसका शिशु रुदन सुनकर मां की तंद्रा भंग हो जाती है और अचानक उसे एहसास होता है जैसे मेरे गर्भ से एक बालक की उत्पत्ति हुई है।**

वही संचारी भाव, वही चिंतन, वही प्रक्रिया जो एक मां की होती है ठीक वैसी ही क्रिया और प्रतिक्रिया का प्रारम्भ हो जाता है और वह उस बालक को, शिशु को अपने स्तनों से लगा देती है, अपने वक्षस्थल से लगा देती है।

उसे एहसास होता है कि इस बालक ने मेरे गर्भ से जन्म लिया है। और वही मातृत्व उसके पूरे शरीर को, और मन को आच्छादित कर देता है। जब ऐसे महापुरुष जन्म लेते हैं, तो केवल ब्रह्माण्ड में उसके जन्म लेने की क्रिया ही सम्पन्न नहीं होती अपितु सैकड़ों-सैकड़ों देवता उसी क्षण किसी न किसी गर्भ से किसी न किसी स्थान पर जन्म लेते हैं। परन्तु वे आस-पास के क्षेत्र में ही जन्म लेते हैं जहां युग-पुरुष अवतरित होते हैं, क्योंकि उन देवताओं का चिंतन तो यह है कि वे मृत्यु लोक में रहें भी और उन भगवान एवं युग-पुरुष की नित्य लीलाओं को देखकर के नेत्रों को सुख पहुंचा सकें, आत्मा को प्रसन्नता दे सकें ओर अपने जीवन को धन्य कर सकें।

इससे भी बढ़कर यह बात होती है कि वे मनुष्य योनि में जन्म लेकर उन सारे संचारी भावों का अनुभव करते हैं जिन्हें हर्ष, विषाद, सुख-दु:ख, लाभ, हानि और जितनी भी क्रियाएं, प्रतिक्रियाएं होती हैं उनका भान करते हैं, उनका अनुभव करते हैं और ज्यादा से ज्यादा उस युग-पुरुष के पास रहने का प्रयत्न करते हैं, चाहे वे बाल रूप में हों, चाहे शिशु रूप में हों और वे चाहे अन्य रूपों में हों।

**जिस प्रकार देवता अयोनिज होते हैं उसी प्रकार अप्सराएं भी अयोनिज होती हैं । उन सभी अप्सराओं का यह चिंतन रहता है कि वे जन्म लेकर उस महापुरुष के आस-पास विचरण करें, अपने सौन्दर्य, अपने यौवन, अपनी रूपोज्जवला, अपनी प्रसन्नता और अपनी चेष्टाओं से उस युग-पुरुष के पास ज्यादा से ज्यादा वे रहने का प्रयत्न करती हैं।**

वे अप्सराएं भी उस स्थान के आस-पास ही जन्म लेती हैं। उनकी क्रियाएं भी वैसी ही होती हैं जैसी क्रियाएं देवता लोग करते हैं। और वे शनै:-शनै: काल के प्रवाह के साथ-साथ बड़ी होती हैं, यौवनवान होती हैं, सौन्दर्य का आगार होती है और अद्वितीय बनकर उस लीला विहारी को प्रसन्न करने का प्रयत्न करती हैं और ज्यादा से ज्यादा उनकी सामीप्यता का अवसर ढूंढती रहती हैं, अवसर प्राप्त

**वे पुरुष धन्य हैं जो अपने क्रोध को अपनी बुद्धि विवेक से उसी प्रकार शांत कर लेते हैं जैसे अग्नि को जल से रोक दिया जाता है।**

करती हैं और उन्हें प्रसन्न करने की चेष्टा करती है।।

**भगवान श्री कृष्ण के साथ भी यही हुआ। जब उन्होंने जन्म लिया, या दूसरों शब्दों में कहूं कि अवतरित हुए तो सैकड़ों देवता और अप्सराओं ने आस-पास के क्षेत्र में ही जन्म लिया, गोपों के रूप में, बालिकाओं के रूप में और कई रूपों में। यही चिंतन राम के समय में हुआ, यही चिंतन बुद्ध के समय में हुआ और यही चिंतन सभी अवतारों के साथ हुआ। हमारे शास्त्रों में चौबीस अवतारों की गणना की गई है।**

प्रश्न यह उठता है कि एक सामान्य व्यक्ति, एक सामान्य मानव, एक योनिज व्यक्ति किस प्रकार से अनुभव करे, कौन-सी प्रक्रिया अपनाएं जिससे उसे यह ज्ञात हो सके, कि कौन व्यक्ति युग पुरुष के रूप में अवतरित हुए हैं?

सामान्य मनुष्य के पास, सामान्य बालक के पास दिव्य दृष्टि नहीं होती, कोई चेतना दृष्टि नहीं होती, कोई पूर्ण दृष्टि नहीं होती, कोई कुण्डलिनी जागरण अवस्था नहीं होती और कोई ऐसी क्रिया नहीं होती जिसकी वजह से वह ज्ञात कर सके कि यह बालक केवल बालक नहीं है अपितु एक अद्वितीय युग-पुरुष है जो इस पृथ्वी लोक पर आकर एक विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपने कर्मक्षेत्र को आगे बढ़ाने की ओर सचेष्ट है, प्रयत्नशील है। इसके सात बिंदु शास्त्रों ने निर्धारित किए हैं जिनके माध्यम से एक साधारण मनुष्य भान कर सकता है कि इस भीड़ में, इन सैकड़ों शिशुओं में इन हजारों बालकों में वह कौन-सा शिशु या बालक है जो अयोनिज है, या जो युग-पुरुष है, जो देव-पुरुष है, जो अद्वितीय व्यक्तित्व है।

ये चिंतन, ये विचारबिंदु कोई कठिन नहीं है। आवश्यकता है भगवती नित्य लीला विहारिणी की कृपा की, आवश्यकता है इसकी ओर चेष्टारत होने की, आवश्यकता है चर्म चक्षुओं के माध्यम से समझने की, क्षमता प्राप्त करने की और इस बात की चेष्टा करने की और उस युग-पुरुष के प्रति पूर्ण श्रद्धानत होने की, क्योंकि ब्रह्म और माया का अस्तित्व हजारों-हजारों वर्षों से गतिशील है।

**जहां ब्रह्म है वहां माया भी है। और माया उस व्यक्ति की आंखों पर एक परदा डाले रहती है, उसके मन में संशय-असंशय का भाव जाग्रत किए रहती है, उसके मन में विश्वास और अविश्वास की दीवार खड़ी किए रहती है। वह सहज ही विश्वास नहीं कर पाता कि यह व्यक्ति, यह बालक, यह शिशु, यह पुरुष जो हमारे ही समान हंसता है, मुस्कुराता है, रोता है, खाता है, पीता है, विचरण करता है और वैसी ही लीलाएं, वैसी ही क्रियाएं करता है जैसा एक साधारण व्यक्ति करता है क्या एक युग-पुरुष हो सकता है?**

और मैंने कहा कि यह तो पराम्बा की कृपा होती है कि हर व्यक्ति के मन में यह चिंतन, यह

मनुष्य की महानता उसके कपड़ों से नहीं
अपितु उसके चरित्र से आंकी जाती है।
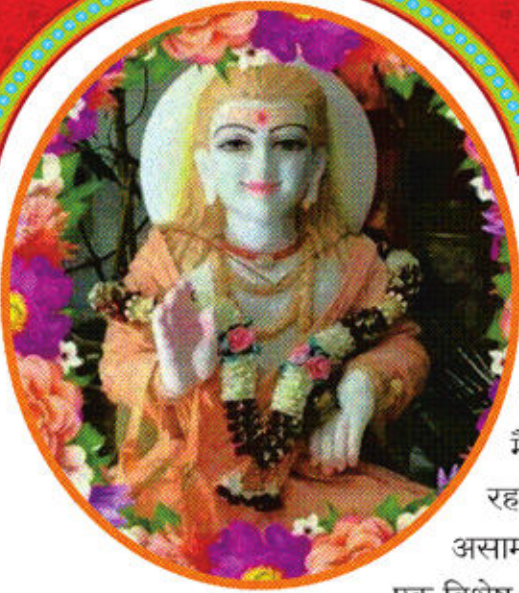
विचार, यह भाव, यह धारणा स्पष्ट होती है, और जब यह धारणा स्पष्ट होती है तब उस देव-पुरुष को पहचानने की क्षमता प्रारम्भ हो जाती है। जब उसके मन में यह ज्ञात हो जाता है कि जिस बालक को मैं देख रहा हूं, जिस व्यक्ति को मैं अपनी इन गोचर इन्द्रियों, इन आंखों के माध्यम से देख रहा हूं वह सामान्य नहीं है, उसकी सामान्यता में भी असामान्यता है, उसकी क्रिया में भी अक्रिया है, उसके हास्य में भी एक विशेष गंभीरता है, उसकी आंखों में अथाह करुणा है, उसकी वाणी में अजस्र प्रवाह है और उसकी वक्तव्य कला में एक चुम्बकीय आकर्षण है, तो उन छोटी-छोटी परन्तु गंभीर चेष्टाओं के माध्यम से वह लगभग समझ लेता है कि शिशुओं की इस भीड़ में यह बालक कुछ हटकर है यह अद्वितीय है।

और शास्त्रों ने जो चिह्न इंगित किए हैं, वे चिह्न देवताओं के लिए, उन अप्सराओं के लिए, उन सामान्य मानवों के लिए स्पष्ट संकेत करते हैं कि यही युग-पुरुष हैं, वही देव-पुरुष है जिनकी सामीप्यता के लिए हम इस पृथ्वी पर अवतरित हुए हैं।

**प्रथम तो यह है कि उसका व्यक्तित्व दूसरे व्यक्तियों की अपेक्षा हटकर होता है—उसकी लम्बाई, उसकी चौड़ाई, उसका कद, उसका काठ और उसका सारा शरीर अपने आप में पूर्ण पुरुषोचित्, स्पष्ट दिखाई देता है। उस अप्सरा का सम्पूर्ण व्यक्तित्व एक अलग ढ़ंग से आभास होता है।**

**दूसरा चिन्तन अथवा क्रिया (चिह्न) यह होता है कि उसके मुख-मंडल पर एक अपूर्व तेज होता है एक प्रकाश होता है। ऐसा प्रकाश नहीं जो आंखों को चौंधिया दे। ऐसा प्रकाश भी नहीं जो आंखों को बंद कर दे, ऐसा प्रकाश भी नहीं कि जो आंखों को अंधेरे से ग्रस्त कर दे। अपितु ऐसा प्रकाश जो अत्यंत शीतल है, जो चन्द्रमा की तरह अमृत बिंदुओं से अभिसिंचित है, परन्तु सूर्य के समान दैदीप्यमान भी है, तेजस्वीवान भी है, क्षमतावान भी है और उसके चेहरे पर कुछ ऐसा भाव है, कुछ ऐसी विशेषता है जो अन्य लोगों में नहीं है। वह भले ही अन्य बालकों की तरह लीला करे, वह भले ही अन्य बालकों की तरह विचरण करे, वह भले ही अन्य बालकों की तरह रोए, हंसे, खिलखिलाए, मुस्कराए और वे सब क्रियाएं करे जो एक सामान्य बालक करता है।**

परन्तु उसकी क्रिया में भी अक्रिया होती है, उसके कार्य में भी अकार्य होता है, उसका प्रत्येक क्षण अपने आप में सजीव एवं चेतनायुक्त होता है क्योंकि उसकी आंखों में अथाह करुणा होती है। शीतलता, तेजस्विता और अथाह करुणा से भरी आंखें अपने आप में इंगित कर देती हैं कि यह बालक, यह शिशु सामान्य नहीं है, यह बालिका एक सामान्य लड़की नहीं है, अपितु अवश्य ही अप्सरा का प्रारम्भ और स्पष्ट रूप है, निश्चय ही देवता है। और जिसके चेहरे पर तेजस्विता, शीतलता, अथाह करुणा, गरिमा, गंभीरता और पूर्णता होती है वह निश्चय ही युग-पुरुष होता है।

**शास्त्रों ने इस प्रकार के युग-पुरुष को पहचानने के लिए तीसरी क्रिया स्पष्ट की है कि उसकी वाणी में एक अलग प्रकार का प्रवाह होता है। और ऐसा प्रवाह जो गतिशील होता हुआ सामने वाले और सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों को अपनी ओर खींचता है, अपने समीप लाने की कोशिश करता है। क्योंकि उसके शब्द मात्र खोखले शब्द नहीं होते अपितु वे स्वयं ब्रह्म स्वरूप होते हैं। उसके प्रत्येक शब्द में चुम्बकीय आकर्षण होता है। वे शब्द ऐसे नहीं होते कि सुनकर हवा में उड़ा दिए जाएं। वे शब्द ऐसे नहीं होते जो निरर्थक होते हैं, वे शब्द ऐसे भी नहीं होते जिनके पीछे कोई अर्थवत्ता नहीं हो और इसके माध्यम से यह जाना जा सकता है कि यह निश्चय ही अद्बितीय युग-पुरुष है।**

जो व्यक्ति इस प्रकार की क्रियाओं के माध्यम से, इस प्रकार की चेष्टाओं के माध्यम से, इस प्रकार के बिन्दुओं का अवलोकन कर थोड़ा-सा विचार करते हैं, चिंतन करते हैं वो निश्चय ही उस भीड़ में से उस युग-पुरुष को ढूंढ़ निकालते हैं जो पृथ्वी का उद्धारक होता है, जो उस युग का नियंता होता है, जो उस अंधकार में प्रकाश की किरण फैलाने के लिए अवतरित होता है, और जो अपने आप में युग-पुरुष, इतिहास-पुरुष, देव-पुरुष और अद्बितीय व्यक्तित्व पुरुष होता है। (शेष अगले अंक में)

मैं आपको पूर्ण आशीर्वाद देता हूं कि आप अपने शिष्यत्व को उच्चता की ओर अग्रसर करते हुए पूर्णत्व प्राप्त करें।

आशीर्वाद आशीर्वाद आशीर्वाद

**-पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमालीजी**

**(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी)**

**'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'**

पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है,क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में संग्रहित है।

# तांत्रोक्त महालक्ष्मी यंत्र एवं दरिद्रता निवारक गुटिका

वर्तमान परिवेश के अनुसार जीवन में अर्थ की महत्ता को नकारा नहीं जा सकता। जब आपका भाग्य या प्रारब्ध आपका साथ न दे रहा हो या अर्थ की न्यूनता हो तो साधक के लिए आवश्यक हो जाता है कि वह दैवीय सहायता प्राप्त करे और मंत्र साधना का सहारा लेकर प्रारब्ध के लेख को बदले। इसके लिए महालक्ष्मी साधना श्रेष्ठ साधना है, जिसके लिए तांत्रोक्त महालक्ष्मी यंत्र एवं गुटिका इस दीपावली के शुभ सौभाग्य योग में विशेष रूप से प्राण प्रतिष्ठित किये गये हैं।

और दीपावली पर हजारों की संख्या में साधकों ने यह साधना सम्पन्न की है जो साधक किन्हीं कारणों वश यह महालक्ष्मी साधना सम्पन्न नहीं कर सके, उनके लिए यह साधना सामग्री सिद्ध करवा कर एक बार फिर से उपलब्ध कराई जा रही है। यदि आप चाहें तो उपहार स्वरूप इसे प्राप्त कर से सम्पन्न कर सकते हैं।

## विधि

किसी भी बुधवार की प्रातः यंत्र को स्थापित कर अक्षत, फूल, कुंकुम से पूजन करें फिर दूध से बने प्रसाद का भोग लगाकर लक्ष्मी माला से 1 माला निम्न मंत्र का जप करके इसे स्थापित करें।

**मंत्र**

*।। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै फट्।।*

फिर साथ में प्राप्त दरिद्रता निवारण गुटिका को अपने ऊपर सात बार घुमाकर निर्जन स्थान पर फेंक दें एवं शेष सामग्री लाल कपड़े में बांधकर अपने पूजा स्थान या बक्से में रख दें। आप चाहे तो यह मंत्र 11 दिन तक जप सकते हैं।

405/-

**नारायण मंत्र साधना विज्ञान**

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को भी बनाकर प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 405/- + 45/- डाक खर्च = 450/- Annual Subscription 405/- + 45/- postage = 450/-

# कुबेर लक्ष्मी

## दरिद्रता निवारक प्रयोग

**यह दरिद्रता निवारण का सरल प्रयोग है।**

**इस प्रयोग में पूजा स्थान में लक्ष्मी के चित्र के साथ-साथ कुबेर यंत्र स्थापित करना आवश्यक है। इस प्रयोग में अपने सामने घी का दीपक तथा अगरबत्ती अवश्य जलायें।**

यह साधना प्रयोग बुधवार को प्रारंभ करना चाहिए, पूजन कक्ष में कुबेर यंत्र स्थापित करके अबीर, गुलाल, चावल, फल इत्यादि समर्पित करने के पश्चात् 3 माला मंत्र जप के साथ-साथ दूध एवं नित्य एक कमल पुष्प अवश्य अर्पित करना चाहिए, यह प्रयोग सम्पूर्ण दरिद्रता नाशक प्रयोग है, इस मंत्र का प्रथम दिन 3 माला मंत्र जप स्फटिक माला से करना है फिर अगले 7 दिनों तक नित्य 1 माला मंत्र जप करना है। इसके जप करने से दरिद्रता दूर होती है, और लक्ष्मी साधक के घर में स्थिर होती है। फिर प्रत्येक बुधवार को 1 माला जप कर लें।

### मंत्र

*कुबेर त्वं धनाधीश गृहे ते कमला स्थिता।*
*तां देवीं प्रेषयाशु त्वं मद्गृहे ते नमो नमः।।*

-साधना सामग्री- 500

## 02.02.22 या किसी भी बुधवार से

**यदि किसी के जीवन में सबसे बड़ा दुख है**
**तो वह है 'ऋण' और**
**ऋण का जहर पूरे शरीर में फैलकर ऋणी**
**के मस्तिष्क में प्रभाव डालता है।**

कहीं आप

# ऋण के दलदल

## में तो नहीं फंस गये ?

# ऋणहर्ता प्रयोग

जिस प्रकार दल-दल में डूबने वाला व्यक्ति उस दल-दल से बाहर निकलने का जितना प्रयास करता है वह उतना ही अधिक फंसता है, ठीक यही स्थिति कर्ज में डूबे व्यक्ति की होती है। एक कर्जे को उतारने के लिए दूसरा कर्ज लेता है और उसे उतारने के लिए तीसरा। हर समय इस आशा में रहता है कि किसी न किसी प्रकार कर्जे को उतार दूंगा, लेकिन यह दल-दल ऐसा है कि जिससे बचकर बहुत कम ही बाहर आ पाते हैं। एक लोकोक्ति है इस संसार में सभी विश्राम करते हैं, निद्रा लेते हैं, लेकिन काल चक्र, ऋण और ऋण का सहयोगी ब्याज कभी विश्राम नहीं करते, इनका चक्र चौबीसों घंटे घूमता रहता है।

मनुष्य के जीवन में तीन प्रकार के ऋण आते हैं, प्रथम माता-पिता का ऋण, द्वितीय गुरु ऋण और तीसरा धन ऋण। इन तीनों ऋणों को व्यक्ति को अपने जीवन में उतार देना चाहिए अन्यथा इन ऋणों का दोष उसे अपने अगले जीवन में भोगना पड़ता है और ऋण हमेशा बढ़ता है, जब कि ऋण का शाब्दिक अर्थ घटना है।

**ऋण एक ऐसा कष्ट है कि व्यक्ति परिस्थिति वश ले तो लेता है**
**किंतु अपना स्वाभिमान गिरवी रख देना पड़ता है।**
**बाद में तो फिर यही उसके मन-मस्तिष्क पर दबाव डालकर उसे खोखला बना देता है,**
**मानो भीतर ही भीतर दीमक लग गयी हो.....**

## मातृ-पितृ ऋण

मां-बाप का ऋण व्यक्ति पर इसलिए होता है कि उनके कारण ही वह इस मनुष्य जीवन में प्रवेश कर सका और इस संसार में सभी प्रकार के आनन्द सुख का मार्ग उनके द्वारा बना, अत: जो व्यक्ति अपने जीवन में माता-पिता की सेवा नहीं करता है तो उसे 'ऋण दोष' लगता है और यह दोष उसे अपने जीवन में नहीं तो अगले जीवन में उतारना ही पड़ता है।

## गुरु ऋण

दूसरा ऋण गुरु ऋण होता है, गुरु का तात्पर्य है जो आपको दीक्षा दे, ज्ञान दे, जीवन के वास्तविक स्वरूप का दर्शन कराएं, उस गुरु के प्रति यदि जाने-अनजाने दोष हो जाय, अवज्ञा हो जाय, गुरु का अपमान किया जाय, गुरु के वचनों का पूर्ण रूप से पालन नहीं किया जाय, गुरु सेवा में कमी रहे, अर्थात् मन, वचन, कर्म से किसी भी रूप में गुरु की श्रद्धा में कमी आने पर गुरु ऋण सहस्त्र गुणा बढ़ जाता है। ऋण व्यक्ति के जीवन में इस प्रकार जुड़ जाता है कि उसे सांसारिक जीवन में बाधाओं के चंगुल में फंसा देता है और इस महा चंगुल से मुक्ति पाने का उपाय गुरु के पास ही होता है।

## लक्ष्मी ऋण

तीसरा ऋण आर्थिक ऋण है जो व्यक्ति अपनी क्षमता से बाहर अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति हेतु, सांसारिक भोग-विलास में डूबने हेतु, झूठी शान, शौकत में वृद्धि करने हेतुलेता है इसके अतिरिक्त असत्य भाषी, आलसी, क्रिया हीन, साधना हीन, व्यक्ति को भी जीवन में आर्थिक कर्जे का बोझा ढोना ही पड़ता है।

एक बार मैंने गुरुदेव से पूछा कि मानव जीवन के तीन सबसे बड़े दुख कौन से हैं ? तो गुरुदेव ने कहा - कि जब पुण्य का क्षय होता है तो पाप अपना प्रभाव डालतेहैं, और जब साधना से, सद्विचारों से, सुकार्यों से व्यक्ति मुंह मोड़ लेता है तथा अहंकार एवं किसी भी बल के घमंड से अपने को महान समझने लगता है तो उसके जीवन में तीन दोष में से एक दोष अवश्य ही आ जाता है, प्रथम बीमारी, द्वितीय वाद-विवाद अर्थात् मुकदमा, तृतीय ऋण (दरिद्रता)। इन तीन दोषों में सबसे भयानक है ऋण दोष, कर्जा। क्योंकि यह कर्जा जीवन में अब तक किये गये सारे कारजों (कार्य) पर पानी फेर देता है, अत: व्यक्ति को अपने जीवन में इन तीन दोषों से मुक्ति अवश्य ही पा लेनी चाहिये।

## पूर्व जन्म के दोष

ऊपर जो तीन ऋणों का वर्णन आया है यदि किसी व्यक्ति ने अपने जीवन में इन्हें पूरा नहीं किया, तो ये दोष उसके अगले जन्म में प्रभाव डालते हैं, और उसके कारण ही मनुष्य गरीब घर में पैदा होता है, आगे बढ़ने के साधन उपलब्ध नहीं होते हैं, घर-परिवार में कलह का वातावरण रहता है, व्यक्ति शारीरिक और मानसिक तौर पर दु:खी रहता है और सत्य कहा जाय तो उसका जीवन एक प्रकार से नीरस एवं कष्ट से गुजरते हुए बीत जाता है।

जैसा गुरुदेव ने कहा कि तीन दु:ख प्रधान होते हैं। उनमें यदि आपके पास तीसरा दोष दु:ख ऋण अर्थात् लक्ष्मी की कमी नहीं है तो आप बीमारी की बाधा को पार कर सकते हैं, मुकदमे, वाद-विवाद, लड़ाई-झगड़े के कुचक्र से निकल सकते हैं, लेकिन यदि धन का ऋण है तो ये तीनों दोष वृद्धि करते हैं।

हे दरिद्रता ! तुम कठोर हृदया हो, तुम्हारे कारण मुझे कटु वचन सुनने पड़ते हैं, नीचा देखना पड़ता है। मुझमें कायरता, क्रोध समा गया है, निम्नता आ गई है।

**अत: तुम्हें, मैं अपने से दूर करने के लिए कृत संकल्प हूँ।**

## ऋण दोष का निवारण कैसे हो ?

जितनी बड़ी बीमारी होती है उसके लिये यह आवश्यक नहीं कि उसका इलाज भी उतना ही बड़ा हो। कई बार बड़ी-बड़ी औषधियां काम नहीं करती, वहीं साधारण-सी औषधि से रोग जड़ से समाप्त हो जाता है।

ऋण की माता का नाम है निर्धनता और निर्धनता को नष्ट कर देने वाली देवी है, लक्ष्मी और जब तक साधक लक्ष्मी की विशेष साधना नहीं करता तब तक उसे ऋण से मुक्ति नहीं मिल सकती और जिस दिन साधक यह संकल्प कर ले कि मैं इस निर्धानता के नाश के लिए कृत संकल्प हूँ, क्रियाशील हूँ, परिश्रम के लिए तैयार हूँ, लक्ष्मी की आराधना के लिए, लक्ष्मी को सम्मान देने के लिए तत्पर हूँ, तभी वह अपने जीवन में इस दोष से मुक्त हो सकता है।

लक्ष्मी उपासना में ऋण दोष को दूर करने के लिये विभिन्न प्रकार के प्रयोग वेदोक्त ग्रन्थों में दिये गये हैं। विश्वामित्र संहिता में भी एक अत्यन्त श्रेष्ठ प्रयोग दिया गया है, और इसके अतिरिक्त साबर साधनाओं में भी ऋण निवारण प्रयोग है। लेकिन व्यक्ति जब तक अपने जीवन में माता-पिता की सेवा और गुरु सेवा और इसके साथ इन दोनों के प्रति अपने ऋण के महत्व को नहीं समझेगा, तब तक उसे धन ऋण से पूर्ण मुक्ति नहीं मिल सकती।

# ऋणहर्ता प्रयोग

विश्वामित्र ने जब अपना राजपाट छोड़ कर संन्यास धारण कर लिया तो उन्होंने देखा कि निर्धनता के कारण व्यक्ति का जीवन कष्टमय हो जाता है और वह संसार के कुचक्र में ही फंसा रहता है। इसलिये उन्होंने ज्येष्ठा लक्ष्मी साधना की रचना की। इस प्रयोग को जो साधक सात दिन तक सम्पन्न करता है, और उसके उपरान्त 'ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र' का प्रतिदिन जप करते हुए एक लाख मंत्र सम्पन्न कर लेता है तो उसे किसी न किसी माध्यम से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है, और वह अपना ऋण उतारने में समर्थ होता है।

इस साधना में मुख्य रूप से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त 'ज्येष्ठा लक्ष्मी यंत्र', 'नौ लक्ष्मी सिद्धि श्रीफल' आवश्यक है, ये फल ज्येष्ठा लक्ष्मी की शक्तियों के द्योतक हैं, और इनका पूजन अवश्य करना चाहिये।

## प्रयोग विधि विधान

**विनियोग**

ॐ अस्य श्री ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्रस्य ब्रह्माऋषि: अनुष्टुपछंद:। ज्येष्ठालक्ष्मी देवता ह्रीं बीजम्। श्रीं शक्ति: ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोग:।

अब ज्येष्ठा लक्ष्मी का ध्यान कर उस यंत्र को ताम्र के पात्र में पुष्प का आसन देकर स्थापित करें-

ॐ रक्त ज्येष्ठायै विद्महे नील ज्येष्ठायै धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्।

अब हाथ में सुगन्धित पुष्प लेकर 'यंत्र' में ज्येष्ठा लक्ष्मी की भावना रखते हुए निम्न मंत्र पढ़ें–

ॐ संविन्मये परे देवि परामृत रस प्रिये। अनज्ञां देहि ज्येष्ठायै परिवारार्चनाय मे।

अब नौ श्रीफल को जो ज्येष्ठा की नौ शक्तियों के प्रतीक हैं, उनको पूर्व दिशा से प्रारम्भ करते हुए क्रमश: निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए स्थापित करने चाहिये–

1. ॐ लोहिताक्ष्यै नम: 2. ॐ विरूपायै नम: 3. ॐ करात्यै नम:
4. ॐ नील लोहितायै नम: 5. ॐ समुदायै नम: 6. ॐ वारूण्यै नम:
7. ॐ पुष्ट्यै नम: 8. ॐ अमोघायै नम: 9. ॐ विश्वमोहिन्यै नम:

अब साधक अष्टगंध से इस पूरी सामग्री के चारों ओर एक घेरा बना दें तथा चारों दिशाओं में चार दीपक जलाकर रखें तथा निम्न ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र की 5 माला का जप लक्ष्मी माला से अवश्य करें–

**ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र**

**ऐं ह्रीं श्रीं ज्येष्ठालक्ष्मि स्वयंभुवे ह्रीं ज्येष्ठायै नम:।**

इसके पश्चात् साधक सारी सामग्री को एक थाली द्वारा ढक दें और दूसरे दिन पुन: इस प्रयोग को सम्पन्न करें, इस प्रकार सात दिन तक प्रयोग करने के पश्चात् साधक बाद में केवल ज्येष्ठा लक्ष्मी का मंत्र ही जपें।

जो साधक एक लाख मंत्र जप कर लेता है तो उसे जीवन में ऋण सम्बन्धी किसी प्रकार की बाधा का सामना नहीं करना पड़ता है। मंत्र जप पूरा होने पर सारी सामग्री नदी या तालाब में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री- 600/-

किसी भी प्रकार की

# रोग मुक्ति के लिए

यदि स्वयं को या परिवार के किसी सदस्य को कोई बीमारी हो या कोई ऐसा रोग हो जो असाध्य होऔर उसका निदान या निराकरण नहीं हो रहा हो तो यह प्रयोग अचूक लाभदायक और महत्वपूर्ण माना जाता है।

यह प्रयोग 31.01.2022 की रात्रि को या किसी भी अमावस्या को सम्पन्न किया जाता है। अमावस्या के दिन ही पीपल के 100 पत्ते लावें, जो डण्ठल युक्त हों और निम्न यन्त्र प्रत्येक पीपल के पत्ते पर अंकित करें। जब 108 पत्ते तैयार हो जाय तब उनकी पूजा करें और पाँच माला निम्न मंत्र की उन पत्तों के सामने फेरें।

## मंत्र

**॥ ॐ रोगानशेषा अमुकं फट् स्वाहा ॥**

ऊपर मैंने जिस यंत्र का जिक्र किया है, वह यंत्र निम्न प्रकार से है, जो कि पीपल के पत्तों पर स्याही से अंकित किया जाना चाहिए।

## यंत्र

| 12 | 3 | 1 | 30 |
|---|---|---|---|
| 29 | 25 | 5 | 6 |
| 4 | 26 | 2 | 27 |
| 8 | 7 | 24 | 39 |

जब मंत्र जप पूरा हो जाए, तब उन पीपल के पत्तों को रोगी पर सात बार फेर कर जल में (कुए, तालाब या समुद्र) में बहा दें, ऐसा करने पर वह रोग हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो जाता है और उसी दिन से रोगी अनुकूल स्थिति अनुभव करने लग जाता है।

यह प्रयोग स्वयं के लिए, पारिवारिक सदस्यों अथवा परिचितों के लिए सम्पन्न किया जाता है और इस प्रयोग से आशातीत सफलता प्राप्त होती है।

रोगमुक्ति माला-200/-

# श्रीसूर्यस्य प्रातःस्मरणम्

प्रातः स्मरामि खलु तत्सवितुर्वरेण्यं रूपं हि मण्डलमृचोऽथ तनुर्यजूंषि।
सामानि यस्य किरणाः प्रभवादिहेतुं ब्रह्माहरात्मकमलक्ष्यमचिन्त्यरूपम् ।।1।।

प्रातर्नमामि तरणिं तनुवाङ्मनोभि-र्ब्रह्मेन्द्रपूर्वकसुरैर्नतमर्चितं च ।
वृष्टिप्रमोचनविनिग्रहहेतुभूतं त्रैलोक्यपालनपरं त्रिगुणात्मकं च।।2।।

प्रातर्भजामि सवितारमनन्तशक्तिं पापौघशत्रुभयरोगहरं परं च।
तं सर्वलोककलनात्मककालमूर्तिं गोकण्ठबन्धनविमोचनमादिदेवम् ।।3।।

श्लोकत्रयमिदं भानोः प्रातःकाले पठेत्तु यः।
स सर्वव्याधिनिर्मुक्तः परं सुखमाप्नुयात्।।4।।

मैं उन सूर्य भगवान् के श्रेष्ठ रूप का प्रातःसमय स्मरण करता हूँ, जिनका मण्डल ऋग्वेद, तनु यजुर्वेद और किरणें सामवेद हैं तथा जो ब्रह्मा और शंकर के रूप हैं। जो जगत् की उत्पत्ति, रक्षा और नाश के कारण हैं, अलक्ष्य और अनित्यस्वरूप हैं।।1।। मैं प्रातःकाल शरीर, वाणी और मन के द्वारा ब्रह्मा, इन्द्र आदि देवताओं से स्तुत और पूजित, वृष्टि के कारण एवं विनिग्रह के हेतु, तीनों लोकों के पालन में तत्पर और सत्त्व आदि त्रिगुण रूप धारण करने वाले तरणि (सूर्य भगवान्) को नमस्कार करता हूँ।।2।। जो पापों के समूह तथा शत्रुजनित भय एवं रोगों का नाश करने वाले हैं, सबसे उत्कृष्ट हैं, सम्पूर्ण लोकों के समय की गणना के निमित्त भूत कालस्वरूप हैं और गौओं के कण्ठबन्धन छुड़ाने वाले हैं, उन अनन्त शक्ति सम्पन्न आदि देव सविता (सूर्य भगवान्) को मैं प्रातःकाल भजता हूँ।।3।। जो मनुष्य प्रातःकाल सूर्य के स्मरण रूप इन तीनों श्लोकों का पाठ करेगा, वह सब रोगों से मुक्त होकर परम सुख प्राप्त कर लेगा।।4।।

वैशम्पायनजी ने पूछा-विप्रवर!
आकाश में प्रतिदिन जिसका उदय होता है, यह कौन है?
इसका क्या प्रभाव है?

**तथा किरणों के इन स्वामी का प्रादुर्भाव कहाँ से हुआ है ?**

मैं देखता हूँ-देवता, बड़े-बड़े मुनि, सिद्ध, चारण, दैत्य, राक्षस तथाब्राह्मण आदि समस्त मानव इनकी ही सदा आराधना किया करते हैं।

# भगवान सूर्य

## तथा

# संक्रान्ति में दान का माहात्म्य

**व्यासजी बोले – वैशम्पायन! यह ब्रह्म के स्वरूप से प्रकट हुआ, ब्रह्म का ही उत्कृष्ट तेज है। इसे साक्षात् ब्रह्ममय समझो। यह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष–इन चारों पुरुषार्थों को देने वाला है। निर्मल किरणों से सुशोभित यह तेज का पुंज पहले अत्यन्त प्रचण्ड और दुःसह था। इसे देखकर इसकी प्रखर रश्मियों से पीड़ित हो सब लोग इधर-उधर भागकर छिपने लगे। चारों ओर के समुद्र, समस्त बड़ी-बड़ी नदियाँ और नद आदि सूखने लगे। उनमें रहने वाले प्राणी मृत्यु के ग्रास बनने लगे। मानव-समुदाय भी शोक से आतुर हो उठा। यह देख इन्द्र आदि देवता ब्रह्माजी के पास गये और उनसे यह सारा हाल कह सुनाया।**

**तब ब्रह्माजी ने देवताओं से कहा–'देवगण! यह तेज आदिब्रह्म के स्वरूप से जल में प्रकट हुआ है। यह तेजोमय पुरुष उस ब्रह्म के ही समान है। इसमें और आदिब्रह्म में तुम अन्तर न समझना। ब्रह्मा से लेकर कीटपर्यन्त चराचर प्राणियों सहित समूची त्रिलोकी में इसी की सत्ता है। ये सूर्यदेव सत्वमय हैं। इनके द्वारा चराचर जगत् का पालन होता है। देवता,** जरायुज, अण्डज, स्वेदज और उद्भिज आदि जितने भी प्राणी हैं–सबकी रक्षा सूर्य से ही होती है। इन सूर्यदेवता के प्रभाव का हम पूरा-पूरा वर्णन नहीं कर सकते। इन्होंने ही लोकों का उत्पादन और पालन किया है। सबके रक्षक होने के कारण इनकी समानता करने वाला दूसरा कोई नहीं है। पौ फटने पर इनका दर्शन करने से राशि-राशि पाप विलीन हो जाते हैं। द्विज आदि सभी मनुष्य इन सूर्यदेव की आराधना करके मोक्ष पा लेते हैं। सन्ध्योपासना के समय ब्रह्मवेता ब्राह्मण अपनी भुजाएँ ऊपर उठाये इन्हीं सूर्य देव का उपस्थान करते हैं और उसके फलस्वरूप समस्त देवताओं द्वारा पूजित होते हैं। सूर्यदेव के मण्डल में रहने वाली सन्ध्यारूपिणी देवी की उपासना करके सम्पूर्ण द्विज स्वर्ग और मोक्ष प्राप्त करते हैं। इस भूतल पर जो पतित और जूठन खाने वाले मनुष्य हैं, वे भी भगवान सूर्य की किरणों के स्पर्श से पवित्र हो जाते हैं। सन्ध्याकाल में सूर्य की उपासना करने मात्र से द्विज सारे पापों से शुद्ध हो जाते हैं। **जो मनुष्य चाण्डाल, गोघाती ( कसाई ), पतित, कोढ़ी, महापातकी और उपपातकी के दिख जाने पर भगवान् सूर्य का दर्शन करते हैं, वे भारी से भारी पाप से भी मुक्त हो पवित्र हो जाते हैं। सूर्य की उपासना करने मात्र से मनुष्य को सब रोगों से छुटकारा मिल जाता है। जो सूर्य की उपासना करते हैं, वे इहलोक और परलोक में भी अन्धे, दरिद्र, दुखी और शोकग्रस्त नहीं होते।** श्रीविष्णु और शिव आदि देवताओं के दर्शन सब लोगों को नहीं होते, ध्यान में ही उनके स्वरूप का साक्षात्कार किया जाता है, किंतु भगवान् सूर्य प्रत्यक्ष देवता माने गये हैं।

**सूर्यदेव के मण्डल में रहने वाली सन्ध्यारूपिणी देवी की उपासना करके सम्पूर्ण द्विज स्वर्ग और मोक्ष प्राप्त करते हैं। इस भूतल पर जो पतित और जूठन खाने वाले मनुष्य हैं, वे भी भगवान सूर्य की किरणों के स्पर्श से पवित्र हो जाते हैं।**

देवता बोले–ब्रह्मन्! सूर्य देवता को प्रसन्न करने के लिए आराधना, उपासना करने की बात तो दूर है, इनका दर्शन ही प्रलयकाल की आग के समान प्रतीत होता है जिससे कभी भूतल के सम्पूर्ण प्राणी इनके तेज के प्रभाव से मृत्यु को प्राप्त हो गये। समुद्र एवं जलाशय नष्ट हो गये। हम लोगों से भी इनका तेज सहन नहीं होता, फिर दूसरे लोग कैसे सह सकते हैं। इसलिये आप ही ऐसी कृपा करें, जिससे हम लोग भगवान् सूर्य का पूजन कर सकें। सब मनुष्य भक्तिपूर्वक सूर्य देवता की आराधना कर सकें–इसके लिये आप ही कोई उपाय करें।

व्यासजी कहते हैं–देवताओं के वचन सुनकर ब्रह्माजी ग्रहों के स्वामी भगवान् सूर्य के पास गये और सम्पूर्ण जगत् का हित करने के लिये उनकी स्तुति करने लगे।

**ब्रह्माजी बोले–देव! तुम सम्पूर्ण संसार के नेत्रस्वरूप और निरामय हो। तुम साक्षात् ब्रह्मरूप हो। तुम्हारी ओर**

**सन्ध्योपासना के समय ब्रह्म देवता ब्राह्मण अपनी भुजाएँ ऊपर उठाये इन्हीं सूर्य देव का उपस्थान करते हैं और उसके फलस्वरुप समस्त देवताओं द्वारा पूजित होते हैं। सूर्यदेव के मण्डल में रहने वाली सन्ध्यारुपिणी देवी की उपासना करके सम्पूर्ण द्विज स्वर्ग और मोक्ष प्राप्त करते हैं।**

**ब्रह्माजी ने सूर्य के कहने से विश्वकर्मा को बुलाया और वज्र की सान बनवाकर उसी के ऊपर प्रलयकाल के समान तेजस्वी सूर्य को आरोपित करके उनके प्रचण्ड तेज को छांट दिया।**

**देखना कठिन है। तुम प्रलयकाल की अग्नि के समान तेजस्वी हो। सम्पूर्ण देवताओं के भीतर तुम्हारी स्थिति है। तुम्हारे श्रीविग्रह में वायु के सखा अग्नि निरन्तर विराजमान रहते हैं। तुम्हीं से अन्न आदि का पाचन तथा जीवन की रक्षा होती है। देव! तुम्हीं सम्पूर्ण भुवनों के स्वामी हो। तुम्हारे बिना समस्त संसार का जीवन एक दिन भी नहीं रह सकता।** तुम्ही सम्पूर्ण लोकों के प्रभु तथा चराचर प्राणियों के रक्षक, पिता और माता हो। तुम्हारी ही कृपा से यह जगत् टिका हुआ है। भगवन्! सम्पूर्ण देवताओं में तुम्हारी समानता करने वाला कोई नहीं है। शरीर के भीतर, बाहर तथा समस्त विश्व में सर्वत्र तुम्हारी सत्ता है। तुमने ही इस जगत् को धारण कर रखा है। तुम्हीं रूप और गन्ध आदि उत्पन्न करने वाले हो। रसों में जो स्वाद है, वह तुम्हीं से आया है। इस प्रकार तुम्हीं सम्पूर्ण जगत् के ईश्वर और सबकी रक्षा करने वाले सूर्य हो। प्रभो! तीर्थों, पुण्य क्षेत्रों, यज्ञों और जगत् के एकमात्र कारण तुम्ही हो। तुम परम पवित्र, सबके साक्षी और गुणों के धाम हो। सर्वज्ञ, सबके कर्ता, संहारक, रक्षक, अन्धकार, कीचड़ और रोगों का नाश करने वाले तथा दरिद्रता के दुखों का निवारण करने वाले भी तुम्हीं हो। इस लोक तथा परलोक में सबके श्रेष्ठ बन्धु एवं सब कुछ जानने और देखने वाले तुम्हीं हो। तुम्हारे सिवा दूसरा कोई ऐसा नहीं है, जो सब लोकों का उपकारक हो।

आदित्य ने कहा–महाप्रज्ञ पितामह! आप विश्व के स्वामी तथा स्रष्टा हैं, शीघ्र अपना मनोरथ बताइये। मैं उसे पूर्ण करूँगा।

ब्रह्माजी बोले–सुरेश्वर! तुम्हारी किरणें अत्यन्त प्रखर हैं। लोगों के लिये वे अत्यन्त दुःसह हो गयी हैं, अतः जिस प्रकार उनमें कुछ मृदुता आ सके, वही उपाय करो।

आदित्य ने कहा–प्रभो! वास्तव में मेरी कोटि–कोटि किरणें संसार का विनाश करने वाली ही हैं, अतः आप किसी युक्ति द्वारा इन्हें खरादकर कम कर दें।

तब ब्रह्माजी ने सूर्य के कहने से विश्वकर्मा को बुलाया और वज्र की सान बनवाकर उसी के ऊपर प्रलयकाल के समान तेजस्वी सूर्य को आरोपित करके उनके प्रचण्ड तेज को छांट दिया। उस छँटे हुए तेज से ही भगवान् श्री विष्णु का सुदर्शन चक्र बन गया। अमोघ यम दण्ड, शंकरजी का त्रिशूल, काल का खंग, कार्तिकेय को आनन्द प्रदान करने वाली शक्ति तथा भगवती दुर्गा के विचित्र शूल का भी उसी तेज से निर्माण हुआ। ब्रह्माजी की आज्ञा से विश्वकर्मा ने उन सब अस्त्रों को फुर्ती से तैयार किया था। सूर्यदेव की एक हजार किरणें शेष रह गयीं, बाकी सब छाँट दी गयीं। ब्रह्माजी के बताये हुए, उपाय के अनुसार ही ऐसा किया था।

कश्यप मुनि के अंश और अदिति के गर्भ से उत्पन्न होने के कारण सूर्य आदित्य के नाम से प्रसिद्ध हुए।

भगवान् सूर्य विश्व की अन्तिम सीमा तक विचरते और मेरु गिरि के शिखरों पर भ्रमण करते रहते हैं। ये दिन–रात इस पृथ्वी से लाख योजन ऊपर रहते हैं। विधाता की प्रेरणा से चन्द्रमा आदि ग्रह भी वहीं विचरण करते हैं। सूर्य बारह स्वरूप धारण करके बारह महीनों में बारह राशियों में संक्रमण करते रहते हैं। उनके संक्रमण से ही संक्रान्ति होती है, जिसको प्रायः सभी लोग जानते हैं।

मकर संक्रांति में सूर्योदय के पहले स्नान करना चाहिए, इस समय किया गया तर्पण, दान और पूजन अक्षय होता है। रविवार का व्रत परम पवित्र और हितकर है। यह समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला, ऐश्वर्यदायक, रोगनाशक और मोक्ष प्रदान करने वाला है।

**त्रिसन्ध्यमर्च येत सूर्ये स्मरेद भक्त्या तु यो नरः।**
**न स पश्यति दारिद्रयं जन्मजन्मनि चार्जुन।।**

(आदित्य हृदय)

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं–हे अर्जुन जो मनुष्य प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल में सूर्य की अर्घ्यादि से पूजा और स्मरण करता है, वह कभी दरिद्र नहीं होता, सदा धन–धान्य से समृद्ध रहता है।
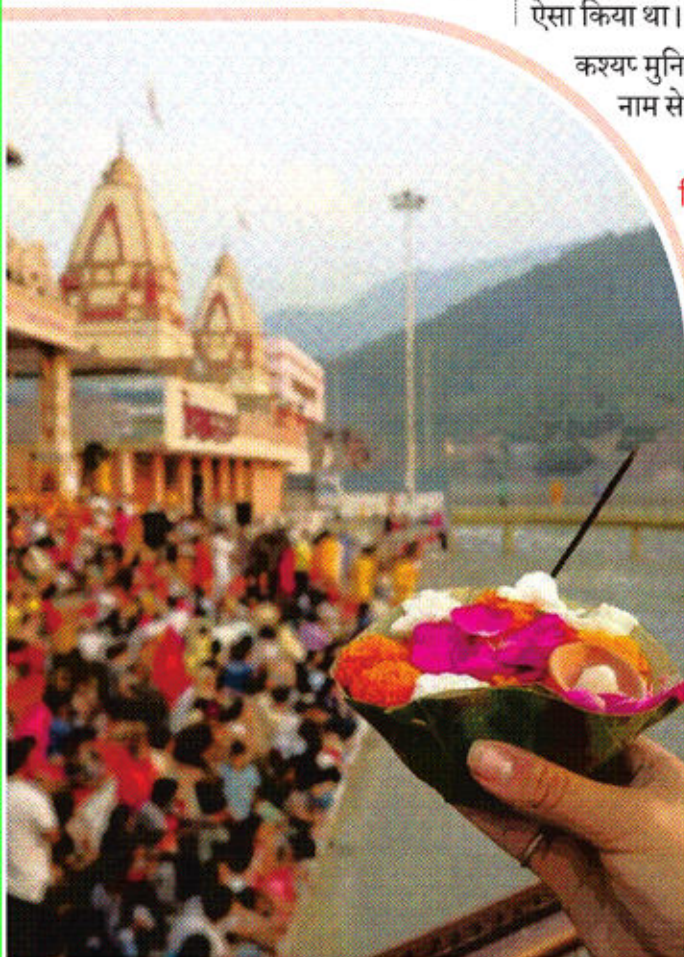
कभी-कभी शब्द अपना मूल अर्थ खो बैठते हैं और वे शब्द अपने आप में ही भ्रष्ट हो जाते हैं, उदाहरण के लिए हिन्दी व्याकरण में 'लिंग' शब्द का अर्थ प्रतीक चिह्न है, इसीलिए पुलिंग और स्त्रीलिंग दो शब्द पढ़ाये जाते हैं।

परन्तु ये शब्द बीतते-बीतते अपभ्रंश हो कर गलत अर्थ को ले बैठे और इसका तात्पर्य जनन इन्द्रिय हो गया। इस प्रकार हिन्दी और संस्कृत में कई ऐसे शब्द हैं, जिनका वास्तविक अर्थ कुछ और था परन्तु समय बीतते-बीतते उसका अर्थ ही भ्रष्ट हो गया, 'तन्त्र' भी एक ऐसा ही शब्द है।

# तंत्र का तो यह स्वरूप नहीं है

## तंत्र की व्याख्या

तंत्र का वास्तविक अर्थ 'सुनियोजित तरीके से किसी कार्य को सम्पन्न करने की क्रिया है' इसीलिए हमारे भारतवर्ष में स्वतंत्रता के बाद 'प्रजातंत्र' का नाम दिया गया, इसका तात्पर्य यह है कि प्रजा के हित को व्यवस्थित तरीके से सम्पन्न करने की क्रिया का नाम प्रजातंत्र है।

पर तन्त्र आगे चलकर अपने मूल अर्थ को खो बैठा और आज जन साधारण में तंत्र का अर्थ मारण-मोहन-वशीकरण आदि रह गया है। तंत्र या तांत्रिक शब्द उच्चारित करते ही, सामान्य आदमी चौंक जाता है या यों कहूँ कि वह थोड़ा सा भयभीत हो जाता है। इसका मूल कारण उसके मन में तंत्र की गलत व्याख्या और गलत अर्थ है।

गुरु गोरखनाथ जी को अत्यन्त सम्माननीय दृष्टि से देखा जाता था। भगवान श्रीकृष्ण को वेदव्यास ने 'तंत्राचार्य', 'तंत्र शिरोमणी' और 'तन्त्रज्ञ' नाम से सम्बोधित किया है। वशिष्ठ, विश्वामित्र, कणाद आदि ऋषि तन्त्रज्ञ कहलाने में गौरव अनुभव करते थे, परन्तु गोरखनाथ के बाद साधुओं की एक ऐसी जमात पैदा हो गई जो आलसी, कामचोर और विषय वासनाओं में ही लिप्त रहने वाली थी। एक प्रकार से देखा जाए तो साधुओं की यह जमात भ्रष्ट हो गयी थी।

ऐसे योगी भगवे कपड़े पहन कर कान छिदा कर बड़े-बड़े कुण्डल पहन लेते थे। गांजा और सुलफा के दम लगा कर लाल सुर्ख आँखें रखते थे। बात-बात में गाली देना, इनका स्वभाव बन गया था और मारण-मोहन-वशीकरण के अलावा इनके मुंह से कोई बात ही नहीं निकलती थी।

समाज में सबसे ज्यादा गन्दगी और विषयवासना ऐसे लोगों ने ही फैलाई। अपने स्वार्थ के लिए इन्होंने त्रिपुरा रहस्य के श्लोक का अर्थ अपने स्वार्थ की दृष्टि से बना दिया।

शक्ति उपासना में तीन पद्धतियाँ प्रचलित हैं–

1. दक्षिण मार्ग, 2. मिश्र मार्ग एवं 3. कौल अथवा वाम मार्ग।

दक्षिण मार्ग तो परम श्रेष्ठ है, पर वाम मार्ग की उपासना में पंच मकारों का उल्लेख जगह-जगह पर आता है। आध्यात्मिक रूप से इन पांच मकारों की प्रशंसा करते हुए, ग्रन्थ में लिखा है—

मद्यं मासं च मीनं च मुद्रा मैथुन मेव च।
मकारपंचक प्रादुर्योगिनां मुक्तिदायकम्।।

अर्थात् मद्य (शराब), मांस, मीन (मछली खाना), मुद्रा (अर्थात् कहीं पर भी नग्न हो कर मन चाहे तरीके से क्रियाएं करना) और मैथुन–यह पांच आध्यात्मिक मकार ही योग जनों को मोक्ष प्रदान करने वाले हैं।

ऐसे भ्रष्ट और अन्य साधुओं ने इस श्लोक के आधार पर समाज में खुले आम मांस खाना, शराब पीना और मुद्रा तथा मैथुन का धड़ल्ले से प्रयोग प्रारम्भ कर दिया। यदि कोई इन्हें टोकता भी, तो ये इस श्लोक का उदाहरण समाज के सामने रख देते और बता देते कि पूर्ण मोक्ष प्राप्त करने के लिए और साधना में सिद्धि प्राप्त करने के लिए ये पांचों मकार अनिवार्य हैं।

## पंच मकार की वास्तविकता

पूरे तन्त्र साहित्य में इस प्रकार पंच मकार की व्याख्या है ही नहीं। इसका सर्वथा गलत अर्थ और स्वार्थमय प्रयोग किया गया है। पंच मकार तो सही और वास्तविक स्वरूप है।

स्पष्ट है, कि शराब और मांस का प्रयोग करने वाले व्यक्ति तामसी प्रकृति के ही हो सकते हैं। सात्विक प्रकृति के लोग तो इन पदार्थों का उपयोग तो दूर, नाम सुनना भी पसन्द नहीं करते। आज भी समाज में मांसाहारी और शराबी को हेय दृष्टि से देखा जाता है और तन्त्र साहित्य में भी ऐसे शराबियों और मांस खाने वाले साधुओं की सर्वत्र निन्दा ही की गई है।

हकीकत में तो बात यह है, कि वाम मार्ग में इस श्लोक की भाषा सांकेतिक है या यों कहा गया कि सारा तन्त्र साहित्य सांकेतिक भाषा में ही लिखा हुआ है और जब तक इसके वास्तविक अर्थ को नहीं समझेंगे तब तक इसकी व्याख्या भी नहीं कर पायेंगे।

यहाँ पर मैं इन पंच मकारों की सही व्याख्या और शास्त्रोचित अर्थ स्पष्ट कर रहा हूँ, जिससे कि आम साधक के मन में तन्त्र का वास्तविक स्वरूप स्पष्ट हो सके और ऐसे ढोंगी, पाखण्डी साधुओं का पर्दाफास किया जा सके।

### मद्य

'कुलार्णव तन्त्र' में मद्य की सही व्याख्या की गई है। वहाँ पर नारियल के पानी को मद्य कहा गया है, योगिनी तन्त्र में कहा गया है–साधक को भूलकर के भी मद्यपान नहीं करना चाहिए। मद्य का तो तात्पर्य है–

ब्रह्मस्थानसरोजपात्रलसिता ब्रह्माण्डतृप्तिप्रदा।
या शुभ्रांशुकलासुधाविगलिता सापान योग्यासुरा।।
सा हाला पिबतामनर्थफलदा श्रीदिव्यभावाश्रिता:।
यापीत्वा मुनय:परार्थकुशला निर्वाण मुक्तिगता:।।

अर्थात् सिर के मध्य में जो सहस्त्रार पद्मदल कमल हैं, उसमें अमृत रूपी चन्द्रमा की कला के समान मधुर अमृतमय शराब या हाला भरी हुई है। इसको पीने से अर्थात् सहस्त्रार को जाग्रत करने से साधक की सारी इच्छाएं फलदायक हो जाती हैं, वह दिव्य हो जाता है और मृत्युभय से मुक्त होकर पूर्ण मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

'योगिनी तन्त्र' में कहा गया है कि गुड़ और अदरक के रस को मिला कर सेवन करना ही मद्यपान करना है, जहाँ पर भी शास्त्रों में मद्य या सुरा का विधान है, वहाँ-वहाँ इस प्रकार की वस्तुओं का ही प्रयोग अभीष्ट है।

'तन्त्र तत्व' में बताया गया है—

न मद्यं माधवीमद्यं शक्तिरसोद् भवम्।
सामर स्यामृतोल्लासो मैथुनं तत् सदा शिवम्।।

अर्थात् मद्य का तात्पर्य मदिरा नहीं है, सहस्त्रार में जो अमृत तत्व का निर्माण होता है, उसका पान करना ही मद्यपान है।

भैरव, देवी या अन्य किसी भी साधना में मद्य का तात्पर्य शराब का उल्लेख नहीं है और न कहीं पर भी शराब चढ़ाने या पीने का विधान है।

मांस

'योगिनी तन्त्र' में मांस का अर्थ नमक तथा अदरक बताया है–

मांसं मत्स्यं नु सर्वेषा लवणाद्रकमीरितम्।

अर्थात् जहाँ पर भी शास्त्रों में मांस खाने या देवताओं को चढ़ाने का विधान आया है, वहाँ पर नमक और अदरक को मिला कर चढ़ाना ही मांस का भोग लगाना है। 'कुलार्णव तन्त्र' में भी मांस के स्थान पर नमक और अदरक का ही विधान बताया है–

मा शब्दाद् रसना ज्ञेया संदशान् रसनाप्रियान्।
एतद यो भक्षये देवि सएंवा धक।।

अर्थात् मांस का तात्पर्य रसना प्रिय इन्द्रियाँ हैं। इसका तात्पर्य उन पर नियंत्रण प्राप्त करना है। अर्थात् रसना प्रिय इन्द्रियों का परित्याग कर जो संयमित जीवन व्यतीत करता है, वही वास्तव में मांस साधक योगी है। पापी रूपी पशु को ज्ञान रूपी खड्ग से मार कर जो योगी मन को चित्त में लीन कर लेता है, वही सही अर्थों में मांसाहारी है।

मांस का तात्पर्य पशुमांस का उल्लेख शास्त्रों में कहीं पर भी नहीं है। मांस लोलुपो ने इस शब्द का अनर्थ कर पशुवध प्रारम्भ कर दिया और देवी या भैरव के नाम पर खुद के खाने के लिए एक नया तरीका निकाल लिया।

'भैरवयामल तन्त्र' में तो कहा है जो पशु चढ़ाता है या भक्षण करता है, वह अधम है, उसको 'तन्त्रज्ञ' कहा ही नहीं जा सकता।

## मत्स्य

तन्त्र शास्त्र में मत्स्य का विधान कई स्थानों पर आया है, भ्रष्ट तांत्रिकों ने इसका तात्पर्य मछली भक्षण कहा है। जबकि सम्पूर्ण तन्त्र साहित्य में ऐसा विधान नहीं है। 'योगिनी तन्त्र' में कहा है कि मत्स्य का तात्पर्य मूली और बैंगन को प्रसाद के रूप में चढ़ाना या भक्षण करना ही मत्स्य भक्षण है। इसी योगिनी तन्त्र में आगे कहा है नमक का सेवन करना ही मत्स्य सेवन है। तन्त्र प्रकाश में कहा गया है–

अहंकारो दम्भो मदपिशुनतामत्सरद्विष:।
षडेतान् मीनान वै विषयहरजालेन
विधृतान्।।
पचन् सिद्धियाग्नो
नियमितकृतिर्धीवरकृति:।
सदा खादेत् सर्वांज्ञ च जलचराणां
कुपिशितम्।।

अर्थात् अहंकार, दम्भ, मद, पिशुनता, मत्सर, द्वेष–ये छ: मछलियाँ हैं। साधक बुद्धिमत्तापूर्वक वैराग्य के जाल में इनको पकड़े और सद्विद्या रूपी अग्नि पर पका कर खावे तो निश्चित रूप से मुक्ति होती है। इनके अतिरिक्त जल में रहने वाली मछनियों को खाना तो सर्वथा धर्म विरुद्ध पाप कर्म है।
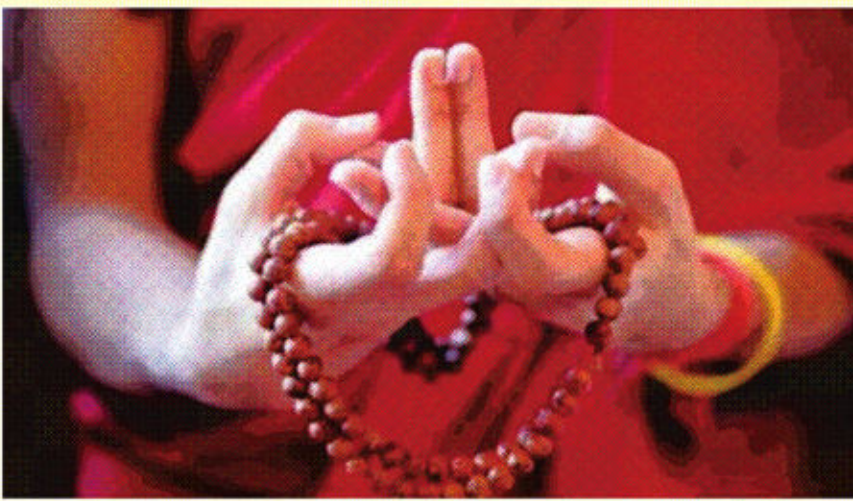
## मुद्रा

कलार्णव तन्त्र में कहा गया है। पंच मुद्राओं का ज्ञान गुरु मुख से ही समझना चाहिए। मुद्रा का तात्पर्य है कच्चा चावल या धान, कीलतन्त्र में कहा गया है—

आशाततृष्णा जुगुप्सा भयविशद्धृणा: मानलज्जा प्रकोपो।
ब्रह्माग्नावष्टमुद्रा: परसुकृतिजन: पच्यमाना: समन्तात्।।

अर्थात् आशा, तृष्णा, जुगुप्सा, भय, घृणा, घमण्ड, लज्जा, क्रोध–ये आठ कष्टदायक मुद्राएं हैं। योगी ब्रह्मरूपी अग्नि में इनको पका कर ही सेवन करते हैं, जिससे उनकी मुक्ति हो जाती है।

उपासना और साधना में अपने आन्तरिक भावों को व्यक्त करने के लिए बाह्य शरीर से जो भाव भंगिमाएं दिखाते हैं, उन्हीं ही 'मुद्रा' कहते हैं, वे मुद्राएं आन्तरिक भावों की अभिव्यक्ति है, इसके माध्यम से ही साधक अपने इष्ट देवता से बात-चीत करता है। ये भंगिमाएं उंगुलियों के माध्यम से व्यक्त की जाती है।

दुष्ट और घटिया तांत्रिक, मुद्राओं का तात्पर्य नग्न रहना और खुले आम अश्लील हरकतें करना बताते हैं, जो कि सर्वथा शास्त्र मर्यादा विपरीत है।

## मैथुन

मैथुन का तात्पर्य देवताओं को सुन्दर पुष्पों का समर्पण है मगर दुष्ट तांत्रिकों ने मैथुन का तात्पर्य सम्भोग मान लिया है और इससे समाज में बहुत ज्यादा गन्दगी फैली है।

योगिनी तन्त्र में कहा है–

सहस्रारोपरि बिन्दौ कुण्डल्या मेलनं शिवे।
मैथुनं शमनं दिव्यं यतीना परिकीर्तितम्।।

अर्थात् सिर में सहस्रदल पदम पर बिन्दु स्थान पर सहस्रार का कुण्डलिनी से जो मिलन होता है, वही योगियों का परम मैथुन है। मैथुन का तात्पर्य मिलाना है, जब कुण्डलिनी सहस्रार चक्र से मिलती है, तो उसे 'मैथुन' कहा जाता है।

सामान्य भाषा में स्त्री और पुरुष के मिलन को मैथुन कहा गया है, पर तन्त्र की परिभाषा में इसका तत्पर्य हाड़-मांस वाले स्त्री-पुरुष नहीं हैं।

यहां स्त्री से तात्पर्य कुण्डलिनी शक्ति है, जो मूलाधार में सोयी हुई रहती है और जो शक्ति स्वरूपा है। सहस्रार में शिव का स्थान है, इस शिव और शक्ति का मिलन ही वास्तविक मिलन अथवा मैथुन कहा गया है।

'भैरव यामल तन्त्र' में कहा गया है, जो योगी या साधक मैथुन का तात्पर्य स्त्री और पुरुष का मिलन समझता है, वह अधम है, नीच है, पापी है।

वास्तव में ही पंच मकारों का मूल अर्थ तो उत्तम है, पर भोगी और काम लोलुप साधुओं ने इसका गलत अर्थ निकाल कर बुरे तरीके से व्यवहार करना, प्रारम्भ कर दिया है, जिसके कारण जनसाधारण में तन्त्र विद्या की उपेक्षा हो रही है। तन्त्र के प्रति उनके मन में घृणा सी होने लगी है।

वास्तव में तो तन्त्र अत्यन्त उच्च स्तरीय साधना है। पंच मकार का मूल अर्थ समझकर ही उसका प्रयोग करना चाहिए, जो इस प्रकार से भगवती पराम्बा की उपासना करता है, दयामयी माँ उसके समस्त प्रकार के भव बन्धन काटकर उसे मोक्ष प्रदान कर देती है।

(मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान पत्रिका से)

शिष्य के जीवन में गुरु ही सर्वस्व होता है। इसलिए देवी-देवताओं की साधना करने के साथ गुरु साधना को ही जीवन में प्राथमिकता देनी चाहिए।

# शिष्य धर्म

त्वं विचितं भवतां वदैव देवाभवावोतु भवतं सदैव।
ज्ञानार्थ मूल मपरं विहंसि शिष्यत्व एवं भवतां भगवद् नमामि।।

- शिष्य सभी कुछ तो गुरु से प्राप्त करता है – भौतिक स्तर पर भी तथा आध्यात्मिक स्तर पर भी। परंतु उसके मन में किसी प्रकार की कोई आकांक्षा नहीं होती – न तो भौतिक सफलता की, न ही सिद्धि या साधनाओं की।
- ऐसा इसलिए नहीं कि शिष्य ध्येय रहित होता है अपितु इसलिए कि उसे ज्ञात होता है कि गुरु तो माँ समान है जो कि स्वयं ही उसकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति कर देगी या उसके जीवन को यथोचित मार्गदर्शन दे देगी। फिर व्यर्थ में कामना करने की क्या आवश्यकता?
- एक माँ अबोध बालक के हाथ में चाकू नहीं थमाती क्योंकि उसे ज्ञात है कि बालक स्वयं की हानि कर बैठेगा। इसी प्रकार सद्‌गुरुदेव भी सिद्धि रूपी दुधारी तलवार को शिष्य को तब तक हस्तगत नहीं करने देते जब तक कि उन्हें विश्वास न हो जाएं कि शिष्य में अब उतना संयम, उतना सामर्थ्य आ गया है कि वह शक्ति को संभाल सकें। एक वास्तविक शिष्य इस बात को समझता है तथा वह परिणाम की परवाह किए बगैर साधनाएं करता रहता है क्योंकि वह जानता है कि जब उसमें पात्रता होगी तो सद्‌गुरुदेव तत्क्षण सभी सिद्धियां उसमें उड़ेल देंगे।
- हर कार्य करते समय, साधना सम्पन्न करते समय, हर मंत्र जप या यज्ञ करते समय शिष्य अनुभव करता है कि सद्‌गुरुदेव उसके समीप ही कहीं है तथा सूक्ष्म रूप से उसका मार्गदर्शन कर रहे हैं तथा उसकी त्रुटियों को सुधार रहे हैं। यही निरंतर भावना वास्तविक गुरु पूजा है, गुरु वंदना है, गुरु आराधना है तथा जो शिष्य इस भावना के साथ अग्रसर होता है तो विफलता उसको स्पर्श भी नहीं कर सकती।

जो शिष्य अपने अहम, छल, कपट आदि को छोड़कर भौतिक श्रेष्ठताओं को भुलाकर गुरुचरणों में झुक जाता है वही सफल होता है।

# गुरु वाणी

- प्रत्येक व्यक्ति जब जन्म लेता है तो शूद्र के रूप में होता है, इसलिए कि उसको ज्ञान नहीं होता। उसको इस बात का ज्ञान नहीं होता कि मैं क्या हूँ और जब गुरु के पास में आता है, तब गुरु उसको एक नया संस्कार देते हैं। उसको यह समझाते हैं कि यह उचित है, यह अनुचित है और आज से तुम मेरी जाति के हो, मेरे गोत्र के हो, मेरे नाम के हो, मेरे ही पुत्र हो।
- हमारा पूरा शरीर अपने आप में शूद्रमय है और शूद्रमय शरीर ब्राह्मणमय शरीर बने यही जीवन का धर्म यही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। ऐसा नहीं है, तो शूद्र बन कर ही जीवन व्यतीत हो जाता।
- इसी शरीर को भगवान का देवालय कहा है मंदिर कहा है। ये भगवान का मंदिर है। इसलिए 'शरीर शुद्धं रक्षेत' शरीर को शुद्ध और पवित्र बनाए रखना आवश्यक है, इसलिए आवश्यक है, कि हमें हर क्षण यह ध्यान रहे कि अन्दर मूल मंदिर में भगवान बैठे हुए हैं या जिनको हमने गुरु कहा है।
- गुरु है वही शिव हैं। शिव यानी कल्याण करने वाला, जो हमारा कल्याण कर सकें। जो इसमें भेद मानता है, वह अधम है। गुरु और शिव में भेद रहता है, जब तक हम शूद्र रहते हैं, तब तक भेद रहता है। और एक क्षण ऐसा आता हैं, जब साक्षात् उस शिवत्व का, उस कल्याण रूप का दर्शन करने लग जाते हैं।
- शिष्य को गुरु के हाथ, गुरु के पैर, गुरु की आंख, गुरु का नेत्र, गुरु का मस्तिष्क कहा गया है। क्योंकि गुरु अपने आपमें कोई साकार बिम्ब नहीं है, निराकार को एक मूर्ति का आकार दिया गया है। ये सारे शिष्य मिलकर के एक गुरुत्वमय बनता है, एक आकार बनता है।

- क्या आपके घर में हर समय अशान्ति रहती हैं?
- क्या घर का कोई सदस्य बीमार ही रहता हैं?
- क्या परिवार के सदस्यों को भयानक स्वप्न दिखाई देते हैं?
- क्या घर में कभी-कभी अजीब सी दुर्गन्ध आती हैं?

**31.01.22 या किसी भी अमावस्या से**

## तो जान लीजिए

## आपके कुल देवता-कुल देवी प्रसन्न नहीं है

## और आपने जाने-अनजाने में उनको भुला दिया है

जिनकी कृपा से कुल परिवार में शांति एवं सम्पन्नता आती हैं।

कुल देवी-कुल देवता पूरे परिवार की रक्षा करते हैं, आने वाले संकटों को हटा देते है।

इसीलिए सारी पूजाओं में यज्ञ में कुल देवता-देवी पूजा का विधान है, कुल देवी-कुल देवता साधना करने से परिवार में पितृ दोष भी दूर हो जाता है।

# कुल देवता कुल देवी साधना

## या देवी सर्वभूतेषु मातृ–रूपेण संस्थिता।
## नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

**व्यक्ति की पहचान सर्वप्रथम उसके कुल से होती है। प्रत्येक व्यक्ति का जिस प्रकार नाम होता है, गोत्र होता है, उसी प्रकार कुल भी होता है। 'कुल' अर्थात् खानदान या उसकी वंश परम्परा।** जिस वंश से वह संबंधित होता है , वह वंश तो हजारों-लाखों वर्षों से चला आ रहा है, लेकिन आज सामान्य व्यक्ति अपने कुल की तीन-चार पीढ़ियों से अधिक नाम नहीं जानता। यह कैसी विडम्बना है? यदि किसी व्यक्ति से उसके परदादा के भाइयों के नाम पूछे जाएं, तो वह बता नहीं पाता है। यह न भी याद रहे तो भी अपने कुल और गोत्र का सदैव ध्यान रखना तो आवश्यक ही है क्योंकि प्रत्येक कुल परम्परा में उस कुल के पूजित कोई देवी-देवता अवश्य होते हैं इसलिए वार, त्यौहार, पर्व आदि पर स्वर्गीय दादा, परदादा के साथ ही कुल देवता अथवा कुलदेवी को भोग अर्पण अवश्य ही किया जाता है।

कुल देवता का तात्पर्य है - जिस देवता की कृपा से कुल में अभिवृद्धि हुई है, परिवार को सदैव एक अभय छत्र प्राप्त होता रहा है।

आज तीव्र जीवन शैली में हम अपनी मूल संस्कृति से उतना अधिक सम्पर्कित नहीं रह सके हैं, परंतु यदि कुल की परम्पराओं और कुल के अस्तित्व को देखना हो, तो आज भी भारत के कुछ प्रमुख नगरों को छोड़कर शेष सभी स्थानों में खास कर ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर भारतीय देव संस्कृति आज भी कई रूपों में जीवित है। कुल के देवताओं का अलग से मंदिर होता है, उनकी पूजा होती है, और मात्र इसी से कई प्राकृतिक आपदाओं और बीमारियों में उनकी रक्षा होती है।

बाल्मीकि रामायण में देखने को मिलता है कि विश्वामित्र के आश्रम में विद्या अर्जित कर पुनः अयोध्या लौटने पर भगवान राम ने अपने कुल के सभी देवी देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए साधना की थी। राजमहल के अंदर ही एक मंदिर में सभी देवी देवताओं की दिव्य जाग्रत मूर्तियां थीं। उन्हीं की साधना करने से भगवान राम को सभी कुल देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त हुआ जिसके कारण वे आने वाले समय में युगपुरुष सिद्ध हो सके।

यदि ध्यान दिया जाए तो विशेष साधनाओं के पूर्व जिस प्रकार गणपति पूजन, गुरु पूजन, भैरव स्मरण आदि आवश्यक रूप से सम्पन्न किया जाता है उसी प्रकार संक्षिप्त रूप में कुलदेवताभ्यो नमः प्रभृत शब्दों का भी उच्चरण किया जाता है। यह कुलदेवता के प्रति अभिवादन है जिससे उनका आशीर्वाद प्राप्त हो एवं साधना में सफलता प्राप्त हो सके। वस्तुतः कुल देवता ही साधक को समस्त प्रकार के वैभव, उन्नति, शक्ति, प्रतिष्ठा, सुख, शांति प्रदान करने में सक्षम होते हैं, यदि उन्हें साधना द्वारा प्रसन्न कर लिया जाए तो।

जिस प्रकार मां-बाप स्वत: ही अपने पुत्र-पुत्रियों के कल्याण के प्रति चिंतित रहते हैं,
ठीक उसी प्रकार कुलदेवता या कुलदेवी अपने कुल के सभी मनुष्यों पर कृपा करने को तत्पर रहते हैं,

ठीक माता-पिता और एक कुशल अभिभावक की तरह जब अपने कुल के मनुष्यों को उन्नति करते,
समृद्धि और साधन से युक्त होते हुए उस कुल के देवता देखते हैं तो उन्हें अपूर्व आनन्द होता है।

मूल रूप से कुलदेवता अपनी कृपा कुल पर बरसाने को तैयार रहते हैं,
परंतु देवयोनि में होने के कारण बिना मांगे स्वत: देना उनके लिए उचित नहीं होता है।
परंतु यह देने की क्रिया तभी होती है, जब साधक मांग करता है।
इसलिए प्रार्थना, आरती पूजा का विधान होता है। इस साधना द्वारा निश्चय ही कुलदेव की कृपा से जीवन संवर जाता है और भौतिक सफलता के लिए तो यह शीघ्र प्रभावी साधना है।

# कुलदेवता-कुलदेवी साधना विधान

यह दो सप्ताह की साधना है जो किसी भी अमावस्या से प्रारंभ की जा सकती है। अर्थात् यदि साधना सोमवार को प्रारंभ की जाए, तो पन्द्रह दिन बाद सोमवार को ही उस साधना का समापन भी किया जाना चाहिए। इस साधना हेतु 'कुलदेवता यंत्र', 'कुलदेवी भैषज' एवं 'प्रत्यक्ष सिद्धि माला' की आवश्यकता होती है। इसके अलावा साधना में कोई विशेष कर्मकाण्ड नहीं होता है।

प्रात: अथवा रात्रि में स्नान कर पूर्व की ओर मुख कर अपने सामने गुरु चित्र रख कर सद्गुरु का संक्षिप्त पूजन सम्पन्न करें। फिर दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि मैं अपने कुल देवता और कुल देवी को प्रसन्न करने के लिए इस साधना को सम्पन्न कर रहा हूँ और उनकी कृपा प्राप्त करने की प्रार्थना कर रहा हूँ जिससे वे मुझे जीवन में हर प्रकार की सफलता एवं समृद्धि प्रदान करें तथा विपत्तियों से मेरी रक्षा करें। इस भाव को मन में धारण कर निम्न संकल्प का उच्चारण करें -

ॐ अद्य अमुक गोत्रीय: (अपना गोत्र बोलें), अमुक शर्माऽहं (नाम बोलें) स्व कुलदेवता प्रीत्यर्थं सकल मनोकामना पूर्ति निमित्तं कुलदेवता साधनां सम्पत्स्ये।

जल को भूमि पर छोड़ दें, फिर कुलदेवता यंत्र को जल से धोकर पोछ दें और किसी पात्र में पुष्प का आसन देकर स्थापित करें। फिर यंत्र पर कुंकुम, अक्षत व नैवेद्य चढ़ाएं।

'कुलदेवी भैषज' को मौली से लपेट कर यंत्र के मध्य भाग में स्थापित करें, फिर निम्न मंत्र को पांच बार बोलते हुए भैषज पर कुंकुम से पांच बिन्दी लगाएं -

ॐ एतोस्मानं श्री खण्डचन्दनं समर्पयामि ॐ कुल देवतायै नम:।

इसके बाद 'प्रत्यक्ष सिद्धि माला' से निम्न मंत्र की 21 माला नित्य पन्द्रह दिन तक करें -

**कुल देवता मंत्र**

।। ॐ ह्रीं कुल देवतायै मनोवांछितं साधय साधय फट्।।

अंतिम दिन यंत्र के समक्ष घर का बना हुआ नैवेद्य (मिष्ठान्न) अर्पित करें। साधना समाप्ति पर समस्त सामग्री को नैवेद्य के साथ किसी कपड़े में लपेट कर सरोवर , नदी अथवा मंदिर में अर्पित कर दें। शीघ्र ही साधना के परिणाम सामने आते है, एवं साधक को अपने कुल देवता और कुल देवी के सूक्ष्म दर्शन होते हैं या उनकी कृपा प्राप्त होती हैं।

साधना सामग्री- 540/-

05.02.2022

बसंत पंचमी

# जीवन

के सभी क्षेत्रों में उन्नति कीजिए

# मेधा साधना

हमें कृतज्ञ होना चाहिए, उन अनेक ज्ञात-अज्ञात ऋषि-मुनियों का,

जिन्होंने निःस्वार्थ भाव से न केवल अन्य क्रिया-कलापों के द्वारा मनुष्य मात्र के कल्याण की भावना रखी, अपितु मानसिक रूप से, विचारात्मकक्रिया का अवलम्बन लेकर ज्ञान के सागर का मंथन किया

और साधनात्मक ज्ञान की एक सम्पूर्ण परम्परा हमारे लिए छोड़ी।

सम्भवतः इसी कारणवश आज भी मानव जाति का अस्तित्व है,

अन्यथा जिस प्रकार घृणा, वैमनस्य, युद्ध, नरसंहार, रक्तपात का इतिहास मिलता है, उसके पश्चात् तो कदाचित् धरा पर मानव जीवन का अस्तित्व ही समाप्त हो गया होता।

**मेधा से युक्त अर्थात् मेधावी होने के लिए यह आवश्यक नहीं, कि व्यक्ति ने शास्त्रों का अध्ययन किया हो अथवा किसी विशेष मापदण्ड पर खरा उतरता हो। कोई भी व्यक्ति चाहे वह किसी भी आयु वर्ग का हो अथवा किसी भी व्यवसाय से सम्बन्धित हो, वह मेधावी की श्रेणी में आने का पात्र हो सकता है, यहां तक कि एक निरक्षर व्यक्ति भी मेधावी हो सकता है।**

'मुनि एकान्त में रहता है और मनन करता है' पूज्यपाद गुरुदेव ने कभी मुनि शब्द की यह सरल व्याख्या स्पष्ट की थी। निश्चय ही ऐसा सत्पुरुष एकान्त में उस तत्व का चिन्तन करेगा, जो मानव के अस्तित्व के साथ से ही उसके लिए रहस्य एवं कौतुक का पर्याय रहा है, किन्तु इसी चिन्तन के क्रम में कई ऐसे आयाम एवं विश्राम भी आते हैं, जो कालान्तर में सम्पूर्ण मानव जाति के लिए केवल पथ-प्रदर्शक ही नहीं, पथ भी बन जाते हैं। इन्हें ही हम सरल शब्दों में साधनाएं कहते हैं। 'मुनि' का मूल लक्ष्य तो कुछ और ही होता है, किन्तु समाज के लिए उसके ये आयाम ही सार्थक हो जाते हैं।

दूसरी ओर किसी भी मुनि की यह सहज भावना होती है, कि वह सम्पूर्ण मानव जाति को शीतलता एवं तृप्ति देने का कार्य भी करे और इसी भावना से परिपूर्ण होने पर उसके द्वारा कुछ अद्वितीय साधनाएं उद्भूत हो ही जाती हैं। इस दृष्टि से जैन मुनियों का योगदान अनुपमेय है। स्वयं सरल, आशा एवं तृष्णा से रहित जीवन जीते हुए भी उन्होंने जिन विविध प्रकारों की साधना पद्धतियां स्पष्ट कीं, उनसे ज्ञात होता है कि वे यथार्थतः कितने अधिक करुणा से ओत-प्रोत थे।

सम्पूर्ण साधना साहित्य इसी प्रकार मनन का एक विपुल भण्डार है। यह ज्ञान का भी भण्डार है और इसे व्यवहार का भी भण्डार कहा जा सकता है, क्योंकि ज्ञान व व्यवहार एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। यह सिक्का है जीवन का, जिसके किसी भी पक्ष को नकारा नहीं जा सकता और न ही नकारने से उसका अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा यदि हम हठपूर्वक नकारना भी चाहेंगे, तो एक प्रकार से उपेक्षा ही करेंगे तथा यह उपेक्षा कालान्तर में हमें ही पीड़ादायक सिद्ध होगी। जैन मुनिजन इस तथ्य से परिचित थे और इसी कारणवश जैन साधनात्मक साहित्य में ज्ञान व व्यवहार का उचित समन्वय भी देखने को मिलता है।

जहां ज्ञान व व्यवहार का उचित अनुपात होता है, वहीं महासरस्वती का भी निवास होता है। दम्भ युक्त ज्ञानी अथवा ज्ञानरहित धनवान के समीप महासरस्वती का आगमन सम्भव नहीं होता। युगों से एक लोकोक्ति चली आ रही है, कि लक्ष्मी और सरस्वती का परस्पर विरोध है, अतः धनवान व्यक्ति ज्ञान रहित एवं ज्ञानवान व्यक्ति धन रहित होता है। साधक परम्पराओं का सम्मान तो कर सकता है, किन्तु इस प्रकार के चिन्तन उसे अग्राह्य ही होते हैं।

श्रेष्ठ मुनिजन भी कदाचित् इस लोक विश्वास को ग्रहण करने में असमर्थ रहे और फलस्वरूप उन्होंने इस दिशा में भी पर्याप्त मनन-चिन्तन किया। यों भी एक श्रेष्ठ मुनि अन्तःकरण से एक श्रेष्ठ साधक ही तो होता है। जैन सम्प्रदाय के साधनात्मक साहित्य में जहां एक ओर धन-सम्पत्ति प्रदायक श्रेष्ठतम साधनाएं उपलब्ध होती हैं, वहीं ज्ञान पक्ष से सम्बन्धित विलक्षण साधनाएं भी प्राप्त होती हैं। जैन साधकों के मध्य यद्यपि इनका स्वरूप परम्पराओं के कारण कुछ भिन्न है।

सनातन पद्धति में साधक जिसे 'महासरस्वती' की साधना की संज्ञा देते हैं, जैन मुनिजन उसे मेधा की साधना के नाम से विभूषित करते हैं। इनमें अर्थात् सरस्वती की साधना एवं मेधा की साधना में एक सूक्ष्म भेद है। महासरस्वती की साधना जहां

सामान्य बोलचाल में जिसे 'चतुर' कहा जाता है, मेधावी उसी का समीप पर्यायवाची है। 'चतुर' शब्द से किंचित धूर्तता का बोध होता है जबकि मेधावी का यह अर्थ नहीं है। वस्तुत: 'मेधा' शब्द का भारतीय चिन्तन में एक गहन स्थान है, किन्तु यहां उसकी चर्चा एवं विवेचना अभीष्ट नहीं है।

मूलत: ब्रह्म ज्ञान से सम्पर्कित है, वहीं मेधा की साधना सम्पूर्ण रूप से मस्तिष्क की प्रखरता एवं चैतन्यता से सम्बन्धित है।

**मेधा की साधना का अर्थ है–व्यक्ति न केवल परम ज्ञान की प्राप्ति में सफल हो, अपितु दिन-प्रतिदिन की अड़चनों आदि का भी सुगमतापूर्वक समाधान प्राप्त करता हुआ अपने जीवन को निरन्तर गतिशील रख सके।** महासरस्वती के साधकों में इसी बात की न्यूनता रह जाती है। वे परम ज्ञान या ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति में संलग्न होने के साथ-साथ व्यावहारिक जीवन से विरक्त हो जाते हैं, जिसका फल उन्हें प्राय: किसी बलिदान से भी चुकाना पड़ जाता है। यह बलिदान स्वास्थ्य, परिवार, बन्धु-बान्धव प्रतिष्ठा या सामान्य सुख-चैन में से किसी एक का अथवा इन सभी का भी हो सकता है।

हमें गर्व होना चाहिए, कि जैन मुनिजन ने भारतीय साधनात्मक जीवन की उस परम्परा को बचा कर रखा है, जिसमें योग एवं मोक्ष दोनों को ही श्रेष्ठ मान कर दोनों के उचित समन्वय की बात प्रतिपादित की गयी है। जैन समुदाय की सम्पन्नता को दृष्टिगत रखते हुए शेष किसी प्रमाण की आवश्यकता ही नहीं रह जाती।

'मेधा' का उल्लेख प्राचीन साधनात्मक ग्रंथों में भी मिलता है, किन्तु उसकी जैसी व्याख्या एवं साधना का समन्वय जैन सम्प्रदाय में मिलता है, वह एकअलग ही स्थान रखता है। प्राचीन ग्रंथों में मेधा का आध्यात्मिक अर्थ ही प्रधान है, जबकि जैन सम्प्रदाय में व्यवहारिक अर्थ। मेधा से युक्त अर्थात् मेधावी होने के लिए यह आवश्यक नहीं, कि व्यक्ति ने शास्त्रों का अध्ययन किया हो अथवा किसी विशेष मापदण्ड पर खरा उतरता हो। कोई भी व्यक्ति चाहे वह किसी आयु-वर्ग का हो अथवा किसी भी व्यवसाय से सम्बन्धित हो, वह मेधावी की श्रेणी में आने का पात्र हो सकता है, यहां तक कि एक निरक्षर व्यक्ति भी मेधावी हो सकता है। सामान्य बोलचाल में जिसे 'चतुर' कहा जाता है, मेधावी उसी का समीप पर्यायवाची है। 'चतुर' शब्द से किंचित धूर्तता का बोध होता है जबकि मेधावी का यह अर्थ नहीं है। वस्तुत: 'मेधा' शब्द का भारतीय चिन्तन में एक गहन स्थान है, किन्तु यहां उसकी चर्चा एवं विवेचना अभीष्ट नहीं है।

प्रसिद्ध जैन मुनि प्रतिपाद सूरि ने अपने ग्रंथ प्रतिपाद-सूरि-सार में इस विषय पर गहन विवेचन करने के उपरान्त वह दुर्लभ साधना विधि भी स्पष्ट की है, जिसके कारण ही ईस्वी काल के प्रारम्भ की शताब्दियों में जैन मुनि न केवल ज्ञान के, अपितु राज सम्मान एवं वैभव के भी पात्र रहे।

**जैन मुनि श्री प्रतिपाद सूरि के विषय में और अधिक उल्लेख नहीं मिलता। यद्यपि इससे हमारे लक्ष्य पर कोई अंतर नहीं पड़ता, क्योंकि साधक तो अर्जुन की भांति केवल 'मछली की आंख' अर्थात् साधना की प्रामाणिकता पर ही अपना ध्यान केन्द्रित रखता है। यहां मैं इस बात का उल्लेख करना चाहूंगा, कि यह साधना अपने आप में प्रामाणिक है।**

इस महत्वपूर्ण साधना को सम्पन्न करने का उचित अवसर सरस्वती जयन्ती (05.02.2022) है, सरस्वती जयन्ती को वसन्त पंचमी भी कहा जाता है और वसन्त पंचमी का पर्व जड़ता को समाप्त करने का पर्व माना गया है। इसके अलावा यह साधना किसी भी माह में बृहस्पतिवार की प्रात: सम्पन्न की जा सकती है। जैन मतावलम्बी साधना पद्धति होने के कारण इस साधना में श्वेत वस्त्र, आसन का ही सर्वाधिक महत्व है।

साधक को चाहिए, कि वह स्नानादि से पवित्र होकर पूर्व या उत्तर मुख होकर बैठे तथा अपने समक्ष किसी ताम्रपात्र पर कुंकुम अथवा श्वेत चंदन अथवा अष्टगंध से किसी साफ तीली के द्वारा निम्न प्रकार से अष्टदल कमल अंकित करें–
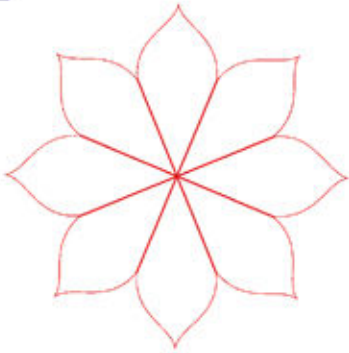
ध्यान रखें, कि कमल की आठ पंखुड़ियां (या दल) ही अंकित करनी है। इसके उपरान्त मूल साधना प्रारम्भ होती है। साधक पहले से प्राप्त किये एवं मेधा मंत्रों से सिद्ध **'आठ गोमती चक्रों'** में से एक-एक गोमती चक्र को प्रत्येक दल में रखें तथा प्रत्येक गोमती चक्र का पूजन कुंकुम, अक्षत, पुष्प की पंखुड़ियों, धूप एवं दीप से करें तथा शुद्ध घी का दीपक लगायें। कमल के मध्य में 'मेधा यंत्र' का स्थापन कर इसी प्रकार पूजन करें एवं दूध से बनी सफेद मिठाई का भोग लगायें, इसके उपरान्त 'कमल गट्टे की माला' से निम्न महत्वपूर्ण जैन मंत्र का इक्कीस माला मंत्र जप करें–

**मेधा मंत्र**

**।। ॐ ऐं श्री ऐं कमलवासिन्यै नम:।।**

इस प्रकार यह साधना सम्पूर्ण होती है। मंत्र जप के पश्चात् सभी सामग्रियों को जल में विसर्जित कर दें एवं मिठाई बालकों को प्रसाद के रूप में वितरित कर दें।

यह साधना उन साधकों के लिए विशेष लाभदायक है, जिन्हें जनसम्पर्क से सम्बन्धित कार्यों को अपनी आजीविका का साधन बनाना होता है, यथा–एडवोकेट, चार्टर्ड एकाउन्टेट, प्रचार माध्यमों से जुड़े व्यक्ति या इसी प्रकार के अन्य व्यवसायी। विद्यार्थियों के लिए भी इस साधना का महत्व स्पष्ट ही है। साधकों को चाहिए कि वे स्वयं तो यह साधना सम्पन्न करें ही, साथ ही साथ अपनी संतानों को भी इसमें संयुक्त करें, जिससे उनकी बुद्धि एवं विवेक में प्रखरता आ सके।

इस साधना को छोटी आयु के बालकों को सम्पन्न कराने के संदर्भ में एक अन्य विशेषता यह भी है, कि इसे उनको सम्पन्न करा देने के बाद शीघ्र ही स्पष्ट होने लगता है, कि वे किस क्षेत्र में तीव्रता से गतिशील हो सकेंगे, क्योंकि इस साधना के द्वारा बालक के उन गुणों का उद्दीपन हो जाता है, जो कालान्तर में उसके भविष्य का आधार बन सकें। इस विशेषता प्राप्त करने के युग में इस साधना का महत्व इस आधार से सर्वोपरि हो ही जाता है।

इस दुर्लभ साधना में जिस प्रकार से मेधा (सरस्वती) एवं ऐश्वर्य (लक्ष्मी) का योग किया गया है, वह तो अपने आप में व्याख्या हेतु एक पृथक विवेचन का ही स्थान रखती है।

साधना सामग्री- 600/-

# आयुर्वेद सुधा

# गुणकारी मेथी

मेथी शाक कुल का पौधा है, इसका जैव वानस्पतिक नाम ट्राईगोनेल्ला फोनम-ग्रेईकम है। शुष्क और गर्म प्रकृति होने के कारण वात एवं गठिया रोग में यह विशेष उपयोगी है। पेट के रोगों के लिये तो मेथी रामबाण औषधि है। विभिन्न रोगों में इसका प्रयोग और अनुपान इस प्रकार है–

**वायु एवं वात**–इन रोगों में मेथी का साग लाभ करता है। मेथी को घी में भून करके पीसकर छोटे-छोटे लड्डू बनाकर दस दिन तक सुबह-शाम खाने से वात-पीड़ा में लाभ होता है। मेथी के पत्तों की भुजिया या सूखा साग बनाकर खाने से पेट के वात-विकार में लाभ होता है।

**गठिया**–गुड़ में मेथी का पाक बनाकर खिलाने से गठिया रोग मिटता है। चार चम्मच दानेदार मेथी रात को एक गिलास पानी में भिगो दें। प्रात: पानी को छानकर गुनगुना गर्म करके पीयें। भीगी हुई मेथी को गीले कपड़े में पोटली बाँधकर रख दें। 24 घण्टे बाद पोटली को खोलें। इसमें अंकुर निकल आयेंगे। इस अंकुरित मेथी को खायें। नमक-मिर्च तथा अन्य चीज न मिलायें। ऐसा कुछ महीने करते रहें वात, गठिया, घुटनों के दर्द आदि में लाभ होगा।

**आमातिसार**–1. मेथी के पत्तों को घी में तलकर खाने से आमातिसार मिटता है। 2. मेथी के पत्तों का रस 60 ग्राम और शक्कर 6 ग्राम मिलाकर पीना चाहिये या मेथी का चूर्ण दही मिलाकर खायें।

**चोट**–मेथी के पत्तों की पुल्टिस बाँधने से चोट की सूजन मिटती है।

**ज्वर**–मेथी ज्वर दूर करती है। इसके बीज ज्वरनाशक होते हैं, पित्त ज्वर में इसके पत्तों का रस लाभकारी होता है।

**बालों का सफेद होना**–मेथी बालों को सफेद होने से रोकती है।

**मधुमेह**–1. दाना मेथी के सेवन से मधुमेह ठीक हो जाता है। इसके सेवन की मात्रा 25 से 100 ग्राम तक प्रति खुराक है। इसे किसी तरह सब्जी बनाकर, फंकी पीसकर, आटे में मिलाकर रोटी बनाकर–किसी भी तरह ले सकते हैं। जब तक रक्त एवं पेशाब में शक्कर आती रहे, इसका सेवन करते रहें। इसके सेवन में चीनी घटने के साथ-साथ कॉलेस्ट्राल भी कम होता है। मेथी के सेवन से मधुमेह के लिये ली जाने वाली दवाइयाँ धीरे-धीरे कम हो जाती हैं।

2. दाना मेथी 60 ग्राम बारीक पीसकर एक गिलास पानी में भिगो दें। इसे 12 घण्टे बाद छानकर पानी पीयें। इस प्रकार सुबह-शाम दो बार नित्य 6 सप्ताह पीने से मधुमेह ठीक हो जाता है। इसके साथ मेथी के हरे पत्तों की सब्जी भी खायें तो लाभदायक है।

**जलन**–शरीर में जलन हो या आग से जलने पर मेथी के पत्तों या दानों को ठण्डाई की तरह पीसकर पानी में घोलकर पीयें और बाहरी जगह पर लेप करें। जलन, दाह तथा भभके में लाभ होगा।

**भूख न लगना, पेट-दर्द**–मेथी पाउडर की फाँकी गर्म पानी से लेने से पेट-दर्द ठीक होता है, भूख अच्छी लगती है। कब्ज़ हो तो मेथी के पत्तों की सब्जी खायें। मेथी की सब्जी खाने से भूख बढ़ती है तथा कमर-दर्द में भी लाभ होता है।

भूख न लगती हो तो दाना मेथी में थोड़ा-सा घी डालकर सेकें। सेंकते हुए जब मेथी लाल होने लगे तो उतार लें। ठण्डी होने पर पीस लें। फिर 5 ग्राम पाउडर, 5 ग्राम शहद में मिलाकर डेढ़ महीने चाटें। इससे भूख अच्छी लगेगी।

**रक्तस्रावी बवासीर**–चार चम्मच दाना मेथी और एक गिलास पानी का काढ़ा या इसे दूध में उबालकर पीने से बवासीर में रक्त आनाबंद हो जाता है।

अनार्तव (मासिक धर्म न आना), दमा, खाँसी हो तो चार चम्मच भर मेथी एक गिलास पानी में उबालें। आधा पानी रहने पर छानकर गर्म-गर्म ही पीयें, लाभ होगा।।

(प्रयोग से पूर्व अपने वैद्य की सलाह अवश्य लें)

# श्रीकृष्ण की सीख

उद्धव के मन में श्रीकृष्ण के व्यवहार को लेकर अनेक सवाल उठ रहे थे, अतः उन्होंने श्रीकृष्ण से अपनी जिज्ञासाओं का समाधान करना चाहा।

उद्धव ने कृष्ण से पूछा, ''जब द्रौपदी लगभग अपना शील खो रही थी, तब आपने उसे वस्त्र देकर द्रौपदी के शील को बचाने का दावा किया। लेकिन आप यह दावा भी कैसे कर सकते हैं ?उसे एक आदमी घसीटकर भरी सभा में लाता है और इतने सारे लोगों के सामने निर्वस्त्र करने की कोशिश करता है। एक महिला का शील क्या बचा?आपने क्या बचाया ?अगर आपने संकट के समय में अपनों की मदद नहीं की तो आपको आपाद-बांधव कैसे कहा जा सकता है ? बताइए, आपने संकट के समय में मदद नहीं की तो क्या फायदा ?क्या यही धर्म है ?''

इन प्रश्नों को पूछते-पूछते उद्धव का गला रुँध गया और उनकी आँखों में आँसू बहने लगे। ये अकेले उद्धव के प्रश्न नहीं हैं। महाभारत पढ़ते समय हर एक के मनोमस्तिष्क में ये सवाल उठते हैं। उद्धव ने हम लोगों की ओर से ही श्रीकृष्ण से उक्त प्रश्न किए।

भगवान श्रीकृष्ण मुस्कुराते हुए बोले-''प्रिय उद्धव, यह सृष्टि का नियम है कि विवेकवान ही जीतता है। उस समय दुर्योधन के पास विवेक था, धर्मराज के पास नहीं। यही कारण रहा कि धर्मराज पराजित हुए।''

उद्धव ऐसा उत्तर सुनकर विस्मित होकर भगवान को देखने लगे।

उद्धव को हैरान, परेशान देखकर कृष्ण आगे बोले-''दुर्योधन के पास जुआ खेलने के लिए धन तो बहुत था, लेकिन उसे पासों का खेल नहीं आता था, इसलिए उसने अपने मामा शकुनि का द्यूतक्रीड़ा के लिए उपयोग किया। यही विवेक है। धर्मराज भी इसी प्रकार सोच सकते थे और अपने चचेरे भाई से पेशकश कर सकते थे कि उनकी तरफ से मैं खेलूँगा। जरा विचार करो कि अगर शकुनी और मैं खेलते तो कौन जीतता ? पासे के अंक उसके अनुसार आते या मेरे अनुसार ?

चलो इस बात को जाने दो, उन्होंने मुझे खेल में शामिल नहीं किया, इस बात के लिए उन्हें माफ़ किया जा सकता है। लेकिन उन्होंने विवेक-शून्यता से एक और बड़ी गलती की और वह यह, कि उन्होंने मुझसे प्रार्थना की कि मैं सभा-कक्ष में न आऊँ, क्योंकि वे यह खेल मुझसे छुपकर खेलना चाहते थे। वे नहीं चाहते थे, कि मुझे मालूम पड़े कि वे जुआ खेल रहे हैं।

इस प्रकार उन्होंने मुझे अपनी प्रार्थना से बाँध दिया। मुझे सभा-कक्ष में आने की अनुमति नहीं थी। इसके बाद भी मैं इंतज़ार कर रहा था कि कब कोई मुझे बुलाता है। भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव सब मुझे भूल गए। बस अपने भाग्य और दुर्योधन को कोसते रहे।

अपने भाई के आदेश पर जब दुशासन द्रौपदी को बाल पकड़कर घसीटता हुआ सभा-कक्ष में लाया, द्रौपदी अपनी सामर्थ्य के अनुसार जूझती रही, उसने भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य आदि से प्रार्थना की, युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन आदि

इस सृष्टि में हरेक का जीवन उसके स्वयं के कर्मफल के आधार पर संचालित होता है। न तो मैं इसे चलाता हूँ और न ही इसमें कोई हस्क्षेप करता हूँ। मैं केवल एक 'साक्षी' हूँ। मैं सदैव तुम्हारे नजदीक रहकर जो हो रहा है, उसे देखता हूँ। यही ईश्वर का धर्म है।

सभी पाण्डवों की ओर आर्तभाव से देखा, तब भी उसने मुझे नहीं पुकारा। उसकी बुद्धि तब जागृत हुई, जब दुशासन ने उसे निर्वस्त्र करना प्रारम्भ किया। तब उसने स्वयं पर निर्भरता छोड़कर "हरि, हरि, अभयम् कृष्णा, अभयम्" की गुहार लगाई, तब मुझे उसके शील की रक्षा का अवसर मिला। जैसे ही मुझे पुकारा गया, मैं अविलम्ब पहुँच गया। अब इस स्थिति में मेरी गलती बताओ।"

उद्धव बोले-"कान्हा आपका स्पष्टीकरण प्रभावशाली अवश्य है, किन्तु मुझे पूर्ण संतुष्टि नहीं हुई। क्या मैं एक और प्रश्न पूछ सकता हूँ?"

श्रीकृष्ण की अनुमति से उद्धव बोले-"इसका अर्थ यह हुआ कि आप तभी आओगे, जब आपको बुलाया जाएगा? क्या संकट से घिरे अपने भक्त की मदद करने आप स्वतः नहीं आओगे?"

श्रीकृष्ण मुस्कुराए-"उद्धव इस सृष्टि में हरेक का जीवन उसके स्वयं के कर्मफल के आधार पर संचालित होता है। न तो मैं इसे चलाता हूँ और न ही इसमें कोई हस्तक्षेप करता हूँ। मैं केवल एक 'साक्षी' हूँ। मैं सदैव तुम्हारे नजदीक रहकर जो हो रहा है, उसे देखता हूँ। यही ईश्वर का धर्म है।"

"वाह-वाह, बहुत अच्छा कृष्ण! तो इसका अर्थ यह हुआ कि आप हमारे नजदीक खड़े रहकर हमारे सभी दुष्कर्मों का निरीक्षण करते रहेंगे? हम पाप करते रहेंगे और आप हमें साक्षी बनकर देखते रहेंगे?आप क्या चाहते हैं कि हम भूल करते रहें, पाप की गठरी बाँधते रहें और उसका फल भुगतते रहें?"-उलाहना देते हुए उद्धव ने पूछा।

तब कृष्ण बोले-"उद्धव, तुम शब्दों के गहरे अर्थ को समझो। जब तुम स्वयं यह अनुभव करने लगोगे कि मैं तुम्हारे नजदीक साक्षी के रूप में हर पल उपस्थित हूँ, तो क्या तुम कुछ भी गलत या बुरा कर सकोगे ? तुम निश्चित रूप से कुछ भी बुरा नहीं कर सकोगे। जब तुम यह भूल जाते हो और यह समझने लगते हो कि मुझसे छुपकर कुछ भी कर सकते हो, तब ही तुम मुसीबत में फँसते हो।"

यह सुनकर उद्धव की आँखों में अविरल अश्रु धारा बह निकली, अरे ! प्रभु के लिए ऐसे विचार मेरे मन में कैसे आये? भूल तो हम लोग करते हैं और दोष.... प्रभु पर लगाते हैं।

सद्गुरुदेव ने यही तो समझाया है कि जब तुम्हारा आचरण मेरी उपस्थिति या अनुपस्थिति दोनों ही परिस्थितियों में एक समान होगा तब तुम समझना कि शिष्यता के साथ अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहे हो क्योंकि मैं तो प्रत्येक क्षण तुम्हारे पास ही उपस्थित हूँ, और तुम यह भूल जाते हो कि तुम्हारी प्रत्येक गतिविधि, मेरी नजर में है। बस आवश्यकता है, इस बात को स्वयं में अनुभव करने की, तब तुमसे कोई गलत कार्य नहीं होगा और तब तुम सही अर्थों में शिष्य कहलाने के योग्य बन सकोगे, तब सफलता तुमसे दूर नहीं होगी।

राजेश गुप्ता 'निखिल'

**मेष** - प्रथम सप्ताह कष्टमय रहेगा। सोच-समझकर निर्णय लें, शत्रुओं से सावधान रहें। फालतु की यात्रा ने करें, खर्च की अधिकता रहेगी। स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी हो सकती है। इस समय जोखिमपूर्ण कार्य न करें। वैवाहिक जीवन सुखप्रद रहेगा। व्यापारिक साझेदारों से अच्छे सम्बन्ध रहेंगे। विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई में रुचि लेगा। परिवार में किसी के रिश्ते की बात भी हो सकती है। माह के मध्य में समय अनुकूल है। तीसरे सप्ताह में कोई अप्रिय समाचार मिल सकता है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद से दूर रहें। अन्यथा अशांति हो सकती है। आप किसी महत्वपूर्ण अभियान में सफल होंगे। सरकारी कर्मचारियों की पदोन्नति के अवसर है, आप **मनोकामना पूर्ति दीक्षा** प्राप्त करें।

**शुभ तिथियाँ** - 4, 5, 13, 14, 22, 23, 24, 31

**वृष** -प्रथम सप्ताह का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। नये कार्य की शुरुआत हो सकती है। फिर भी सोच-समझकर आगे बढ़े। शत्रु पक्ष से सावधान रहें। प्रोपर्टी का सौदा हो सकता है, दूसरे सप्ताह में वाद-विवाद से दूर रहें। किसी अपने से अनबन हो सकती है। माह का मध्य आत्मविश्वास से भरा हुआ रहेगा। कार्य सिद्ध होंगे। विरोधी वर्ग भी शांत रहेगा। कोई खोई हुई चीज मिल जायेगी। किसी अपने का स्वास्थ्य खराब रहेगा। अचानक कोई टेंशन हो सकता है। आर्थिक स्थिति पर ध्यान दें। इस समय वांछित सहयोग नहीं मिलेगा। सरकारी कर्मचारियों का प्रमोशन सम्भव है। माह के अंत में सावधान रहें, किसी और के गलत कार्य आप पर थोपे जा सकते हैं। आखिरी तारीख में परिस्थितियों में सुधार होगा। आप **पूर्ण विजय दीक्षा** प्राप्त करें।

**शुभ तिथियाँ** - 6, 7, 15, 16, 17, 25, 26

**मिथुन** - माह प्रारम्भ श्रेष्ठ फल देगा। व्यापार में वृद्धि होगी, कार्य के लिए यात्रा भी हो सकती है। अधिकारी वर्ग से सहयोग मिलेगा, फालतू विवादों में न पड़ें। सफेद रंग को जीवन में प्राथमिकता दें परिवार का सहयोग मिलेगा। कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी। माह के मध्य में शत्रु परेशान कर सकते हैं, प्यार में धोखा मिल सकता है। विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई में रुचि लेगा। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। संतान पक्ष से सहयोग मिलेगा। किसी से झगड़ा हो सकता है। अशांति का माहौल रहेगा। आय से अधिक व्यय का समय है। जिनका स्वास्थ्य कमजोर है, उन्हें सचेत रहना चाहिए। मित्रों से किसी बात पर गलतफहमी हो सकती है। शरीर के स्वास्थ्य पर ध्यान दें। नया वाहन भी खरीद सकते हैं। आखिरी तारीख अनुकूल नहीं है। मानसिक परेशानी हो सकती है। **सुख-शांति दीक्षा** प्राप्त करें।

**शुभ तिथियाँ** - 1, 8, 9, 10, 18, 19, 20, 27, 28

**कर्क** - प्रारम्भ खुशनुमा रहेगा। गलतफहमियाँ दूर होकर प्रेम का वातावरण बनेगा। किसी अनजान व्यक्ति का सहयोग जीवन में खुशियाँ लायेगा। प्रेम में सफलता मिलेगी। कोई महत्वपूर्ण समाचार भी मिल सकता है। किसी को भी उधार रुपये न दें। शत्रु वर्ग से सावधान रहें। अचानक ही बिना वजह कलह का वातावरण हो सकता है। किसी साजिश के शिकार भी बन सकते हैं। माह के मध्य में जिसका भला करेंगे, वही धोखा देगा। खर्च पर नियंत्रण रखें। कोई छिपी बात दूसरों के सामने उजागर हो सकती है। दूसरों के बहकावे में आकर कोई कदम न उठायें, सोच-समझ कर निर्णय करें। शत्रु पक्ष हानि पहुंचा सकता है। धार्मिक यात्रा सम्भव है। माह के अंत में अनुकूल वातावरण बनेगा। आप **बगलामुखी दीक्षा** प्राप्त करें।

**शुभ तिथियाँ** - 2, 3, 10, 11, 20, 21, 22, 29, 30

**सिंह** - माह का प्रारम्भ उत्साहजनक नहीं रहेगा। परिणाम सोचे अनुसार नहीं होंगे, पुरानी बातें मन में उलझन करेंगी। विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। स्वास्थ्य में सुधार होगा। अचानक किसी बात पर टेंशन हो सकती है। अनजाने में की गई गलती बदनामी दे सकती है। शत्रु नुकसान पहुंचा सकते हैं। दाम्पत्य जीवन में सुखमय वातावरण रहेगा। मनचाहे कार्य सम्पन्न होने के कारण मन प्रसन्न रहेगा। तीसरा सप्ताह फालतु के कार्यों में बीतेगा। मानसिक तनाव की स्थिति रहेगी। स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। विदेश यात्रा हो सकती है। संतान व्यापार में सहयोग करेगी। अचानक कोई कलहपूर्ण वातावरण बन जायेगा। शत्रु कार्यों में रुकावट डालेंगे। स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। आप सभी को मित्रवत सलाह देंगे। आप **रोगमुक्ति दीक्षा प्राप्त** करें।

**शुभ तिथियाँ** - 4, 5, 13, 14, 15, 22, 23, 24, 25

**कन्या** - माह का प्रारम्भ शुभ है। कार्य के सिलसिले में यात्रा होगी। रुके कार्य सफल होंगे। पुत्र व्यापार में सहयोग नहीं करेगा। किसी और की गलतियाँ आप पर आ सकती है। क्रोध पर संयम रखें।

धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। परिवार में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। स्वास्थ्य पर ध्यान दें। व्यापार पर ध्यान दें, किसी बात को लेकर टेंशन हो सकती है। माह के मध्य रुके कार्य पूर्ण होने से प्रसन्नता होगी। कोई अप्रिय समाचार उदासी ला सकता है। रुका धन वसूल होगा। विद्यार्थी वर्ग की पढ़ाई में रुचि रहेगी। ज्ञान में वृद्धि होगी, मित्रों का सहयोग सफलता देगा। अफसर से नोंक-झोंक हो सकती है। कुछ अपने ही अशांति पैदा करेंगे। आप **पूर्णत्व दीक्षा** प्राप्त करें।

**शुभ तिथियाँ** - 6, 7, 15, 16, 17, 25, 26

**तुला** - माह का प्रारम्भ लाभकारी होगा। प्रॉपर्टी के चल रहे केसों में अनुकूलता मिलेगी। प्रारम्भ उत्साहवर्द्धक है। अचानक कोई अशुभ समाचार अशांति लायेगा। रुपये उधार न देवें। शेयर या सट्टे में धन न लगायें। दूसरे सप्ताह में आमदनी बढेगी, अटके रुपये प्राप्त होंगे, मार्ग की बाधाएं दूर होंगी। खर्च की अधिकता रहेगी। क्रोध से बचें। परेशानियों से मुकाबला करते हुये सफलता पायेंगे। परिवार में अशांति का वातावरण रहेगा। मेहनत के बाद भी उचित परिणाम नहीं मिलेंगे। दाम्पत्य जीवन में खटपट रहेगी। आलस्य से दूर रहें। जमीन खरीदने की प्लानिंग बनायेंगे। तीर्थ यात्रा का प्रोग्राम बन सकता है। वाहन सावधानीपूर्वक चलायें। **गृहस्थ सुख दीक्षा** प्राप्त करें।

**शुभ तिथियाँ** - 1, 8, 9, 10, 18, 19, 20, 27, 28

**वृश्चिक** - सप्ताह का प्रारम्भ संतुष्टप्रद रहेगा। कोर्ट-कचहरी के मामले में सफलता के अवसर हैं। समय उत्साहजनक एवं लाभदायक है। दूसरे सप्ताह में कोई अशुभ समाचार मिल सकता है। रुपये उधार न देवें। बेरोजगारों को रोजगार के अवसर हैं। नया व्यापार प्रारम्भ कर सकते हैं। शत्रुओं को परास्त कर सकेंगे। यात्रा से लाभ प्राप्त होगा, धैर्यपूर्वक कार्य करें, विद्यार्थी वर्ग का मन पढ़ाई में नहीं लगेगा। सेहत के प्रति सावधान रहें, क्रोध पर संयम रखें। परेशानियों से मुकाबला करते हुए सफल होंगे। मित्र वर्ग एवं घर के सदस्यों का सहयोग मिलेगा। मेहनत से ही फल मिलेगा। सुस्ती एवं आलस्य से दूर रहें। साथियों एवं सहकर्मियों के परस्पर सहयोग से कार्य क्षेत्र में विस्तार होगा। बच्चों को **सरस्वती दीक्षा** दिलवायें।

**शुभ तिथियाँ** - 2, 3, 10, 11, 20, 21, 22, 29, 30

**धनु** - माह का प्रारम्भ प्रतिकूल परिस्थितियाँ पैदा करेगा। किसी अनजान से वाद-विवाद न करें। मानमर्यादा को ठेस पहुंचेगी। थोड़ा परेशानी का दौर है। विद्यार्थियों का मन पढ़ाई में नहीं लगेगा। प्रोपर्टी के कार्य में फायदा हो सकता है। परिश्रम का फल अवश्य मिलेगा। बेरोजगारों को रोजगार के अवसर हैं। यात्रा लाभकारी होगी। कोई घटना व्यथित कर सकती है। दूसरों की तकलीफ से आप दुखी होंगे। सोचे गये कार्य पूर्ण होंगे। इस समय आप पर जिम्मेदारियां अधिक होंगी। सरकारी कर्मचारियों का प्रमोशन हो सकता है, घूमने का प्रोग्राम बन सकता है। आपकी मेहनत रंग लायेगी। नया वाहन खरीद सकेंगे। नौकरीपेशा की तनख्वाह में वृद्धि होगी। सभी के दिलों को जीतने में समर्थ होंगे। किसी कार्य को करने का सोच लिया तो पूरा करके ही दम लेंगे। आप इस माह **सर्व बाधा निवारण दीक्षा** प्राप्त करें।

**शुभ तिथियाँ** - 4, 5, 13, 14, 15, 22, 23, 24, 31

**मकर** - माह का प्रारम्भ मध्यम फलदायक है। रुके हुये रुपये प्राप्त होंगे। इस समय कोई नया कार्य शुरू करने से बचें। बेटी का रिश्ता आ सकता है। उच्चाधिकारियों से अच्छे सम्बन्ध होंगे। शत्रुओं से

| | |
|---|---|
| **सर्वार्थ सिद्धि योग** | - जनवरी-2, 11, 21, 23, 27 |
| **अमृत सिद्धि योग** | - जनवरी-11, 23 |
| **रवि योग** | - जनवरी-5, 7, 10, 12, 13, 16, 23, 24 |

विशेष सावधान रहने की आवश्यकता है। आर्थिक स्थिति ठीक नहीं रहेगी। सतर्क रहने की आश्यकता है। मित्रों का सहयोग भी नहीं मिलेगा। विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई में रुचि रखेगा। तीसरे सप्ताह में कोई अशुभ समाचार मिल सकता है, गृह स्थिति में बदलाव से परिस्थितियों में सुधार आयेगा। पुत्र का सहयोग मिलेगा। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। जमीन के लेन-देन लें लाभ होगा। इस समय विरोधियों से सावधान रहें। शेयर या सट्टे आदि में पूंजी न लगायें। कोई झूठा आरोप भी लगा सकता है, वृद्धि विवेक से आप सफलता प्राप्त कर लेंगे। आप इस माह **पूर्ण विजय दीक्षा** प्राप्त करें।

**शुभ तिथियाँ** - 6, 7, 15, 16, 17, 25, 26

**कुम्भ** - सप्ताह का प्रारम्भ श्रेष्ठकारी है। मन शांत रहेगा, पूजा-पाठ में मन लगेगा। विद्यार्थियों का मन पढ़ाई में लगेगा। जीवन में प्रसन्नता रहेगी। छोटी-छोटी बात पर वाद-विवाद हो सकता है। मित्रों का सहयोग मिलेगा। यात्रा सफल रहेगी, माह के मध्य में सावधानी बरतें। कोई बात दिल को ठेंस पहुंचा सकती है। संतान का सहयोग नहीं मिलेगा। नये व्यापार में सफलता मिलेगी। कड़ी मेहनत के बाद भी मनचाहे परिणाम नहीं मिलेंगे। आखिरी सप्ताह में सावधान रहें, किसी से उलझें नहीं, फालतू के बाद विवादों से दूर रहें। नौकरीपेशा लोग भी परेशान रहेंगे। बीमारी से ग्रस्त हो सकते हैं। नया वाहन न खरीदें। विरोधी पक्ष हावी रहेगा। बिना देखें कहीं हस्ताक्षर न करें। **बगलामुखी दीक्षा** प्राप्त करें।

**शुभ तिथियाँ** - 1, 8, 9, 10, 18, 19, 20, 27, 28

**मीन** - माह का प्रथम सप्ताह अनकूल रहेगा। अपनी सुझ-बूझ से रुके कार्यों मे सफलता प्राप्त करेंगे। किसी उच्च अधिकारी से मुलाकात भविष्य में लाभ देगी। कोई परेशानी मन को उदास करेगी, जिस पर विश्वास किया, वही धोखा देगा। रुपये उधार न देवें। किसी गलतफहमी के शिकार हो सकते हैं। नौकरी पेशा लोगों को उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलेगा। माह के मध्य में कार्य का बोझ बढ़ेगा, कोई छिपी बात उजागर हो सकती है। वाहन ध्यानपूर्वक चलायें, तीसरे सप्ताह में सावधान रहें, किसी के बहकावें में न आयें। विद्यार्थी वर्ग को मेहनत का फल मिलेगा। रुके हुये रुपये प्राप्त होंगे, भाग्योदय एवं तरक्की का समय है। बेरोजगारों को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे, जीवनसाथी के साथ प्रेम का व्यवहार रहेगा। **भाग्योदय दीक्षा** प्राप्त करें।

**शुभ तिथियाँ** - 2, 3, 10, 11, 12, 20, 21, 22, 29, 30

**इस मास व्रत, पर्व एवं त्योहार**

| | | |
|---|---|---|
| 02.01.22 | रविवार | पौष अमावस्या |
| 13.01.22 | गुरुवार | पुत्रदा एकादशी |
| 14.01.22 | शुक्रवार | मकर संक्रांति |
| 17.01.22 | सोमवार | शाकम्भरी जयंती |
| 28.01.22 | शुक्रवार | षटतिला एकादशी |
| 01.02.22 | मंगलवार | मौनी अमावस्या |

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

## ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है

| वार/दिनांक | श्रेष्ठ समय |
|---|---|
| रविवार (जनवरी-2, 9, 16) | दिन 07.36 से 10.00 तक<br>12.24 से 02.48 तक<br>04.24 से 04.30 तक<br>रात 07.36 से 09.12 तक<br>11.36 से 02.00 तक |
| सोमवार (जनवरी-3, 10, 17) | दिन 06.00 से 07.30 तक<br>09.00 से 10.48 तक<br>01.12 से 06.00 तक<br>रात 08.24 से 11.36 तक<br>02.00 से 03.36 तक |
| मंगलवार (जनवरी-4, 11) | दिन 06.00 से 07.36 तक<br>10.00 से 10.48 तक<br>12.24 से 02.48 तक<br>रात 08.24 से 11.36 तक<br>02.00 से 03.36 तक |
| बुधवार (जनवरी-5, 12) | दिन 06.48 से 11.36 तक<br>रात 06.48 से 10.48 तक<br>02.00 से 04.24 तक |
| गुरूवार (जनवरी-6, 13) | दिन 06.00 से 06.48 तक<br>10.48 से 12.24 तक<br>03.00 से 06.00 तक<br>रात 10.00 से 12.24 तक |
| शुक्रवार (जनवरी-7, 14) | दिन 09.12 से 10.30 तक<br>12.00 से 12.24 तक<br>02.00 से 06.00 तक<br>रात 08.24 से 10.48 तक<br>01.12 से 02.00 तक |
| शनिवार (जनवरी-1, 8, 15) | दिन 10.48 से 02.00 तक<br>05.12 से 06.00 तक<br>रात 08.24 से 10.48 तक<br>12.24 से 02.48 तक<br>04.24 से 06.00 तक |

| वार/दिनांक | श्रेष्ठ समय |
|---|---|
| रविवार (जनवरी-23, 30) | दिन 06:00 से 10:00 तक<br>रात 06:48 से 07:36 तक<br>08:24 से 10:00 तक<br>03:36 से 06:00 तक |
| सोमवार (जनवरी-24, 31) | दिन 06:00 से 07:30 तक<br>10:48 से 01:12 तक<br>03:36 से 05:12 तक<br>रात 07:36 से 10:00 तक<br>01:12 से 02:48 तक |
| मंगलवार (जनवरी-18, 25) | दिन 06:00 से 08:24 तक<br>10:00 से 12:24 तक<br>04:30 से 05:12 तक<br>रात 07:36 से 10:00 तक<br>12:24 से 02:00 तक<br>03:36 से 06:00 तक |
| बुधवार (जनवरी-19, 26) | दिन 07:36 से 09:12 तक<br>11:36 से 12:00 तक<br>03:36 से 06:00 तक<br>रात 06:48 से 10:48 तक<br>02:00 से 06:00 तक |
| गुरूवार (जनवरी-20, 27) | दिन 06:00 से 08:24 तक<br>10:48 से 01:12 तक<br>04:24 से 06:00 तक<br>रात 07:36 से 10:00 तक<br>01:12 से 02:48 तक<br>04:24 से 06:00 तक |
| शुक्रवार (जनवरी-21, 28) | दिन 06:48 से 10:30 तक<br>12:00 से 01:12 तक<br>04:24 से 05:12 तक<br>रात 08:24 से 10:48 तक<br>01:12 से 03:36 तक<br>04:24 से 06:00 तक |
| शनिवार (जनवरी-22, 29) | दिन 10:30 से 12:24 तक<br>03:36 से 05:12 तक<br>रात 08:24 से 10:48 तक<br>02:00 से 03:36 तक<br>04:24 से 06:00 तक |

# यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।
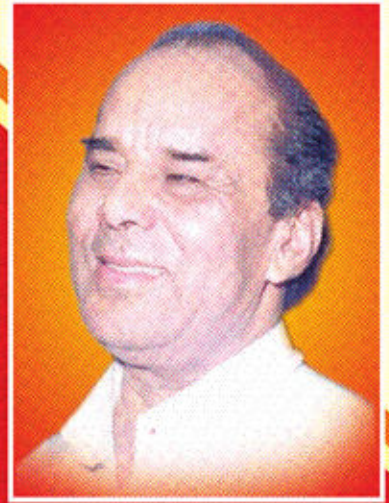
## जनवरी-22

11. आज प्रातः हनुमान चालीसा का 1 पाठ करके जाएं।
12. माँ लक्ष्मी जी के सामने घी का दीपक जलाकर आरती करें।
13. 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' का 21 बार जप करें।
14. आज मकर संक्रांति पर पत्रिका में प्रकाशित साधना सम्पन्न करें।
15. 'ह्रीं' बीज मंत्र का 21 बार जप करके ही बाहर जाएं।
16. भगवान सूर्य को जल अर्पण करें।
17. आज माघ पूर्णिमा पर प्रातः स्नान के बाद अन्न दान करें।
18. हनुमानजी के मन्दिर में गुड़, चना का भोग लगायें।
19. प्रातःकाल 6 से 7 बजे के मध्य में कम से कम 15 मिनट 'श्रीं ह्रीं श्रीं' मंत्र का जप करें।
20. किसी पीपल के वृक्ष में 1 लोटा जल अर्पण करें।
21. सद्गुरुदेव जन्मदिवस पर निखिल स्तवन का 1 पाठ करें।
22. काले तिल दक्षिणा के साथ दान करें।
23. सुबह 'ॐ आदित्याय नमः' का 108 बार उच्चारण करें।
24. भगवान भोले शंकर का पूजन करें एवं 'ॐ नमः शिवाय' का जप करें।
25. हनुमान बाहु (न्यौ. 90/-) धारण करें, शत्रु बाधा समाप्त होगी।
26. आज घर पर दूध की बनी खीर का भोग लगाकर प्रसाद बांटें।
27. सुबह 'ऐं' बीज मंत्र का जप 5 मिनट करना श्रेयस्कर है।
28. आज 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र 108 बार जप करें।
29. आज सरसों तेल कुछ दक्षिणा के साथ दान करें।
30. गायत्री मंत्र की 1 माला का जप करके ही जाएं।
31. आज किसी असहाय को भोजन करायें।

## फरवरी-22

1. आज मौनी अमावस्या है, प्रातः स्नान कर अन्न दान करें।
2. आज से गुप्त नवरात्रि प्रारम्भ है, माँ दुर्गा की आरती करें।
3. गौरी तृतीया के दिन माँ पार्वती का पूजन किसी मनोकामना के साथ करें।
4. आज गणेश जी को लड्डुओं का भोग लगाकर प्रसाद बांटें।
5. आज बसंत पंचमी है, पत्रिका में प्रकाशित साधना बच्चों को करायें।
6. प्रातःकालीन उच्चरित वेद ध्वनि सी.डी. का श्रवण करें।
7. आज अरोग्य सप्तमी पर सूर्य भगवान को अर्घ्य देकर आरोग्यता की प्रार्थना करें।
8. आज के मुहूर्त में किसी हनुमान मन्दिर में बजरंग बाण का पाठ करें।
9. पूजा स्थल में तीन श्रीफल (न्यौ. 90/-) रखकर 'श्रीं' बोलते हुये 21 पुष्प चढायें।
10. गुरु गुटिका (न्यौ. 150) धारण करें।

# जीवन

## में प्रेम का प्रस्फुटन करने वाली साधना

### जो आँखों में आकर्षण और हृदय में पवित्र प्रेम की तरंग पैदा करती है

**17.01.22**
**पूर्णिमा**
या
**किसी भी शुक्रवार**
से

# उर्वशी साधना

**जीवन का अर्थ यह नहीं होता, कि केवल श्वास-प्रश्वास की क्रिया में निमग्न रहें। रोता हुआ, उदास, मलिन, दरिद्रता से युक्त-जीवन 'जीवन' नहीं कहलाता। इस प्रकार के जीवन में कोई उन्नति भी नहीं हो सकती। जीवन में उन्नति तब होती है जब मन में प्रेम हो, आनन्द हो, प्रसन्नता हो, प्रफुल्लता हो, हर समय कुछ नया घटित कर देने की क्षमता हो और उत्साह हो।**

# ऐसी स्थिति जीवन में कब आती है?

**ऐसी स्थिति जीवन में तब आती है जब मन जाग्रत होता है, प्राणतत्त्व जाग्रत होता है, स्वचेतना का जागरण होता है। जब मन जाग्रत होता है, तभी जीवन में प्रेम की उत्पत्ति होती है।**

वास्तविकता यह है, कि व्यक्ति प्रेम के बगैर रह ही नहीं सकता। परंतु प्रेम केवल भाग्यशाली व्यक्तियों को ही प्राप्त हो पाता है, जिनके मन में प्रेम की कोंपल फूटती है, वे अति सौभाग्यशाली होते हैं। प्रेम का जागरण होने का तात्पर्य है, जीवन में अनन्त संभावनाओं के द्वार खुलना।

जिनके मन में प्रेम पैदा होता है, स्वत: ही उनके जीवन में रस प्रवाहित होने लगता है, ऐसा रस जो व्यक्ति के जीवन को आनन्द से परिपूर्ण करने में पूर्ण सक्षम होता है।

**प्रेम में कभी किसी प्रकार का सौदा नहीं होता, प्रेम तो मात्र सब कुछ देने की प्रक्रिया है। जो व्यक्ति कुछ प्राप्त करने की लालसा रखते हैं, वे प्रेम नहीं कर सकते। प्रेम तो अपने आपको विसर्जित करने की प्रक्रिया है, अपने आपको पूर्ण समर्पित करने की भावना है।**

जब ऐसी स्थिति आती है, तो समझना चाहिए कि प्रेम हुआ है।

प्रेम समर्पण की श्रेष्ठतम अवस्था है. . .और जो अपने आपको भी विसर्जित कर देते हैं, वे सब कुछ प्राप्त भी कर लेते हैं।

'प्रेम' शब्द आज समाज में अपना एक अत्यंत ही घिनौना स्वरूप धारण कर चुका है। जहां भी प्रेम शब्द का उच्चारण होता है, वहीं मानस में वासना का भाव आता है, वासना मतलब 'सेक्स'। जहां वासना होगी, वहां प्रेम हो ही नहीं सकता और जहां प्रेम नहीं है, वहां - परेशानियां हैं, अशांति है।

प्रेम तो फूलों से हो सकता है, पत्तियों से हो सकता है, उमड़ते-घुमड़ते बादलों से भी हो सकता है।

**प्रेम तो मां से भी हो सकता है, बहन से भी हो सकता है और वास्तविक प्रेम तो मात्र गुरु और इष्ट से ही संभव है।**

**प्रेम और समर्पण की कला स्त्री से ही सीखी जा सकती है, क्योंकि यह मात्र स्त्री हृदय की ही विशेषता हो सकती है। स्त्री हृदय का तात्पर्य भाव प्रधान हृदय से है।**

कोई पुरुष भी तभी प्रेम कर सकता है, जब उसके अन्दर भाव पक्ष की प्रधानता हो, क्योंकि जो पुरुष प्रवृत्ति होती है, वह केवल छीनने में ही विश्वास रखती है। पुरुष केवल सौदा कर सकता है, कि मैंने इसको क्या-क्या दिया है और बदले में मुझे इससे क्या-क्या प्राप्त हुआ है। जहां सौदा होता है, वहां प्रेम नहीं हो सकता, प्रेम के लिए तो अनिवार्य शर्त होती है अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देना, अपने आपको मिटा देना। हमने प्रेम को अत्यंत घिनौना स्वरूप दे दिया है, जबकि वास्तविकता में यह अत्यंत पवित्रतम शब्द है, मानव को ईश्वर से प्राप्त श्रेष्ठतम उपहार है। गंदगी तो हमारी ही आंखों में है। जो भाव हमारे मन में होते हैं, वहीं आंखों के माध्यम से प्रकट हो जाते हैं।

प्रेम का मतलब यह नहीं है, कि आपको कोई पुष्प पसंद आया और आपने उसे तोड़कर जेब में रख लिया - यह प्रेम नहीं हो सकता, इसे तो मात्र वासना ही कहा जाता है, वास्तविक प्रेम कभी भी फूल को तोड़ लेने की प्रेरणा नहीं देता। वह तो उसे निहारने और प्रकृति को धन्यवाद देने की प्रेरणा देता है।

जब एक भाव पक्ष प्रधान व्यक्ति फूल को अत्यंत ही प्रेम और स्नेह के साथ निहारता है, तो स्वत: ही उसके मन में उस परमात्मा के लिए प्रार्थना का निर्झर प्रवाहित होने लगता है, जिसने उस पुष्प को बनाया, जिसकी महक से सारा वातावरण ही पुलकित हो रहा है। प्रेम की परिपक्वता तो प्रार्थना पर जाकर ही पूर्ण होती है, वासना पर नहीं।

जब प्रेम परिपक्व होकर प्रार्थना पर पहुंचता है, तो प्रार्थना सीधे परमात्मा की ओर ले जाती है और एक प्रेमी का परमात्मा से मिलन होने लगता है, यही तो है प्रेम की सार्थकता, यही तो है प्रेम का रहस्य।

विकृत प्रेम ने मानव मन को अतृप्त कर दिया है। सुरसा मुख की तरह बढ़ती आवश्यकताएं और उनकी पूर्ति में व्यस्त जीवन, यह सोचने और समझने का अवसर ही प्रदान नहीं होता, कि प्रेम क्या है। स्वर्ण मृग के लिए भागता आदमी, केवल भागता ही रहता है, दौड़ता ही रहता है, अन्तत: हाथ कुछ भी नहीं लगता।

- जीवन क्या है?
- मेरा जन्म क्यों हुआ है?
- क्या मैं जो इतनी भाग-दौड़ करता हूं,
  यह प्रेम है?
- नहीं, यह तो एक सौदा है।

शादी की है, पत्नी ने अपना तन सौंप दिया, तो उसको जीवन भर खिलाना ही पड़ेगा, मजबूरी है, क्या यही प्रेम है? यह वासना है, प्रेम का तो अंश मात्र भी नहीं है।

...और यदि जीवन में प्रेम नहीं होगा, तो व्यक्ति तनावों से, बीमारियों से, चिंताओं से ग्रस्त होकर समाप्त हो जायेगा।

प्रेम और समर्पण की कला सीखी जा सकती है 'उर्वशी साधना' से। 'उर्वशी साधना' ही प्रेम को अभिव्यक्त करने का सौम्य और सशक्त माध्यम है।

जिन्होंने 'उर्वशी साधना' नहीं की, उनके जीवन में प्रेम नहीं है, तन्मयता नहीं है, प्रफुल्लता नहीं है और जिन्होंने उर्वशी साधना की उनके जीवन में रस आया, प्रेम करने की कला आई, उन्होंने जीवन को उत्सर्ग कर ध्यान और समाधि की अमूल्य निधि पाई।

उर्वशी साधना वास्तव में ही जीवन का सौभाग्य है। जीवन को निश्चित उछाल देने की क्रिया अप्सरा साधना के माध्यम से ही संभव है।

## साधना विधान

**इस साधना में 'उर्वशी सिद्धि यंत्र', 'प्रेमोत्सव माला' तथा 'दोष निवारण गुटिका' की आवश्यकता होती है।**

- यह रात्रि कालीन साधना है जो 17.01.22 को या किसी भी पूर्णिमा की रात्रि को या शुक्लपक्ष के किसी भी शुक्रवार से प्रारंभ की जा सकती है।
- इस साधना में पूर्व या उत्तर दिशा प्रमुख है।
- इसमें 21 दिन तक प्रतिदिन तीन माला मंत्र जप करना अनिवार्य है।
- साधक स्नान आदि से निवृत्त होकर, सफेद वस्त्र धारण कर, पूर्ण सुसज्जित होकर इस साधना में किसी भी रंग के आसन पर बैठें।
- प्रेमोत्सव माला को बाजोट पर रखकर उस पर यंत्र स्थापित करें, तत्पश्चात यंत्र का पूजन करें।
- इसी प्रकार दोष निवारण गुटिका का सामान्य पूजन करते हुए पूज्य गुरुदेव से दोष निवारण हेतु तथा पूर्ण पवित्रता और प्रेम प्राप्ति की प्रार्थना करते हुए गुटिका को तीन बार अपने सिर के ऊपर से घुमा कर रख दें तथा प्रथम दिन की साधना के पश्चात् किसी चौराहे पर या निर्जन स्थान में फेंक दें।
- इसमें घी का दीपक सुगंधित इत्र डालकर जलाना चाहिए। दीपक की लौ साधक की ओर होनी चाहिए।
- उर्वशी माला से नित्य तीन माला निम्न मंत्र का जप करें-

**मंत्र**

**।। ॐ पूर्णत्वं प्रेमोत्सव अप्सरा सिद्धये फट्।।**

**OM PURNATVAM PREMOTSAV APSRA SIDDHYE PHAT**

21 दिन के बाद सभी सामग्री किसी नदी, तालाब या कुंए में विसर्जित कर दें।

इस साधना का प्रारंभ पूर्ण प्रेममय होकर करें और प्रेममय ही बने रहें, किसी भी प्रकार का क्रोध व उत्तेजना मन में न लायें। यह साधना अपने-आप में ही प्रेमदायक एवं सौभाग्य वृद्धि करने वाली साधना है। **न्यौछावर - 540/-**

## शाकम्भरी जयंती

17.01.22 या किसी भी पूर्णिमा से

### लक्ष्मी से सम्बन्धित स्तोत्र

# इन्द्राक्षी स्तोत्र

**इन्द्र का तात्पर्य है वैभव, जीवन की वह उच्चतम स्थिति,**

**जिससे पूर्ण भौतिक सुख प्राप्त होने के साथ देवत्व और आनन्द की प्राप्ति हो सके,**

**इन्द्र का अर्थ इन्द्रियों को नियन्त्रण में कर जीवन का लक्ष्य प्राप्त करना,**

इन्द्र जिसके सहयोग के लिये सभी देवता तत्पर रहते हैं
और इन्द्र की आराध्या हैं भगवती इन्द्राक्षी। पुरन्दर ऋषि द्वारा वर्णित यह स्तोत्र जीवन का सौभाग्य है, जिसका पाठ ही इन्द्र वैभव अपने भीतर स्थापित करना है–

यह भगवती का श्रेष्ठ स्तोत्र है और यदि साधक अपने सामने **'इन्द्राक्षी यंत्र'** रखकर नित्य इस स्तोत्र का एक पाठ कर लें तो निश्चय ही वह सभी दृष्टियों से सम्पन्न होकर पूर्णता प्राप्त कर लेता है। यह स्तोत्र देवताओं को भी दुर्लभ है। मेरे अनुभव में यह आया है कि धन-धान्य, पुत्र-पौत्र, बन्धु-बान्धव, सुख-सौभाग्य, पूर्णता, वाहन सभी की प्राप्ति के लिए पूर्ण रूप से दरिद्रता निवारण के लिए इससे श्रेष्ठ कोई स्तोत्र नहीं है।

किसी पूर्णमासी के दिन इन्द्राक्षी यंत्र स्थापन करें। बाजोट पर पीला कपड़ा बिछाकर उसके ऊपर गुलाब के पुष्प रखकर इन्द्राक्षी यंत्र को स्थापित करें, फिर इस स्तोत्र का पाठ करें। नित्य एक बार या पांच बार पाठ करने से कुछ ही दिनों में जीवन में अनुकूलता आने लगती है और सभी दृष्टियों से सम्पन्नता प्राप्त होती है।

### विनियोग

ॐ अस्य श्री इंद्राक्षी स्तोत्र महामंत्रस्य श्री शचि पुरन्दर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः श्री इन्द्राक्षी देवता महालक्ष्मी बीजं भुवनेश्वरी शक्तिः लक्ष्मी कीलकं मम श्री इंद्राक्षी प्रसाद सिद्ध्यर्थे मम मनोकामना सिद्धय विनियोगः।

### इंद्राक्षी ध्यान

नेत्राणां दशभिः शतैः परिवृताम्, अत्युग्र मर्याविराम
हेमांभां वहति विलम्वित् शिखै मामन्त केशांविलां।।

घण्टा मण्डित पाद पद्म युगलां नागेन्द्र कुम्भस्तनी।
इन्द्राक्षी परिचिन्तयामि मनसः कल्पोत सिद्धि प्रदाम।।
इन्द्राक्षी द्विभुजां देवि, पीत वस्त्र द्वयांविता,
वाम हस्ते कमलधराम् दक्षिणेनवरप्रदाम्।।
इन्द्रार्दिभी सुरैर्वन्दयाम् वन्दे शंकरवल्लभाम्
एवम् ध्यात्वा महादेवि पठामि सर्व सिद्धये।।

## स्तोत्र

ॐ ऐं श्रीं श्रीं हुं हुं इन्द्राक्षी माम् रक्ष रक्ष, मम शत्रून् नाशय नाशय, जलरोधम शोषय शोषय दुःखं व्याधिं स्फोटय स्फोटय, दुष्टादि भंजय भंजय मनोग्रन्थिम् प्राण ग्रन्थिम रोग ग्रन्थिम घातय घातय इन्द्राक्षी माम् रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।

ॐ नमो भगवती प्राणेश्वरी प्रत्यक्ष सिंह वाहिनी महिषासुर मर्दिनी, उष्ण ज्वर पित्त ज्वर, वात ज्वर, श्लेष ज्वर, कफ ज्वर आजाल ज्वर, सन्निपात ज्वर माहेन्द्र ज्वर सत्योदि ज्वर एकांन्विक ज्वर, द्वयामविक ज्वर, संवत स्वर ज्वर, सर्वांग ज्वर नाशय नाशय, हर हर हन हन दह दह पच पच तालय तालय आकर्षय आकर्षय विद्वेषय विद्वेषय स्तम्भय स्तम्भय मोहय मोहय उच्चाटय उच्चाटय हुं फट्।

ॐ नमो भगवति माहेश्वरी महाचिन्तामणि सकल सिद्धेश्वरी सकल जन मनोहारिणी काल रात्रि अनले अजिते अभये महाघोर प्रतीतय विश्वरूपिणी मधुसूदनी महाविष्णु स्वरूपिणि, नेत्रशूल कर्णशूल कटिशूल वक्षशूल पाण्डुरोगादि नाशय नाशय, वैष्णवी ब्रह्मास्त्रेण विष्णु चक्रेण रुद्र शूलेण यमदण्डेन वरुण वज्रेण वाशववज्रेण सर्वान्अरिम् भंजय भंजय, यक्ष ग्रह राक्षस ग्रह स्कन्द ग्रह विनायक ग्रह बाल ग्रह चौर्य ग्रह कूष्माण्ड ग्रहादीन निग्रह्य राज्य क्षमा क्षयरोग ताप ज्वर निवारिणि मम सर्व शत्रून् नाशय नाशय, सर्व ग्रहान् उच्चाटय उच्चाटय हुं फट्।

महालक्ष्मीं महादेविं सर्व रोग निवारिणी। सर्वपाप हरो देवि महालक्ष्मी नमोस्तुते।

ऐसा कहकर हाथ जोड़ें और भगवती महालक्ष्मी की आरती करें। इस प्रकार से यह इन्द्राक्षी स्तोत्र अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है और नित्य इसका पाठ करना सौभाग्यदायक माना गया है।

यदि संस्कृत पाठ में कठिनाई हो तो हिन्दी में भी पाठ कर सकते हैं।

## विनियोग

इस इन्द्राक्षी महामंत्र का शची पुरन्द्र ऋषिः, अनुष्टुप्, छन्दः इन्द्राक्षी देवता, महालक्ष्मी बीजं, भुवनेश्वरी शक्तिः। लक्ष्मी कीलकं मैं इन्द्राक्षी भगवती की कृपा प्राप्ति एवं मनोकामना पूर्ति के लिए इसका पाठ कर रहा हूँ।

## ध्यान

दस हजार नेत्रों वाली, अति उग्र तेज युक्त स्वर्ण के समान आभायुक्त लम्बे केशों से सुशोभित, दोनों पैरों में घुंघरूओं से युक्त, स्थूल स्तनों वाली, भगवती इन्द्राक्षी का सिद्धि प्राप्ति हेतु सतत् ध्यान करता हूँ।

हे देवि! आप दो भुजाओं युक्त हैं, दो पीत वस्त्रों से सुशोभित बायें हाथ में कमल धारण किए हुए, दायें हाथ से साधकों को वर प्रदान करने वाली, इन्द्र आदि देवताओं द्वारा वन्दित, शंकर की प्रिया, आपके इस दिव्य स्वरूप का निरन्तर ध्यान करता हूँ।

## स्तोत्र

ॐ ऐं श्रीं श्रीं हुं हुं। हे! इन्द्राक्षी आप मेरी रक्षा करें। मेरे शत्रुओं का नाश करें। अनिष्ट को दूर करें, दुःख एवं व्याधियों का नाश करें, दुष्टों का नाश करें। मनोग्रन्थि, प्राणग्रन्थि को, रोगग्रन्थि को दूर करें। हे भगवती आप मेरी रक्षा करें।

हे भगवती इन्द्राक्षी आप प्राणों की ऊर्जा देने वाली, सिंहवाहिनी, महिषासुर मर्दिनी, उष्ण ज्वर, पीत ज्वर, श्लेष्म ज्वर, कफ ज्वर, अजाल ज्वर, शन्निपात ज्वर, महेन्द्र ज्वर, शक्तियोदि ज्वर, आधे दिन का ज्वर, दो दिवसीय ज्वर, वार्षिक ज्वर आप सम्पूर्ण ज्वरों का नाश करें। हरण कीजिये, हनन कर दें, समाप्त कर दें। आकर्षण, विद्वेषण, स्तम्भन, मोहन एवं उच्चाटन कर दें।

हे! भगवती माहेश्वरी आप सकल सिद्धियों को देने वाली हैं, चिन्तित कामनाओं की शीघ्र प्रदान करती हैं। सभी लोगों की आप प्रिय हैं। हे! कालरात्रि अग्नि स्वरूप, कभी परास्त ना होने वाली, अभय प्रदान करने वाली, महाघोर रूप वाली, विश्वरूपिणी, माधुर्य युक्त तथा आप विष्णु स्वरूपा हैं। नेत्र शूल, कर्ण शूल, कवर शूल, छाती शूल तथा पीलिया आदि रोगों को नाश करें। हे! वैष्णवी, ब्रह्मास्त्र से, विष्णु चक्र से, रूद्र त्रिशूल से, यम दण्ड से, वरुण देवता वज से, इन्द्र देवता इन्द्र वज्र से, सभी शत्रुओं का नाश करें, भंजन करें। हे! भगवती यक्ष ग्रह, राक्षस ग्रह, स्कन्द ग्रह, विनायक ग्रह, बाल ग्रह, चोर ग्रह, उष्माण ग्रह, मूक ग्रह आदि सभी ग्रहों को नियन्त्रित करें। राज यक्ष्मा, क्षय रोग तथा ताप ज्वरों का निवारण करें, मेरे सभी शत्रुओं का नाश करें तथा सभी शत्रु ग्रहों का उच्चाटन करें।

सभी रोगों को दूर करने वाली समस्त पापों का शमन करने वाली भगवती महालक्ष्मी को मैं नमन करता हूँ।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं सभी दुःखों को नाश करने वाली, दरिद्रता को दूर करने वाली, सभी कष्टों को दूर करने वाली, सभी सुखों को देने वाली, सभी सौभाग्य को देने वाली है! हे भगवती महालक्ष्मी मेरे घर में पधारिये तथा सौभाग्य प्रदान कीजिये। सौभाग्य के साथ यश, मान, प्रतिष्ठा एवं ऐश्वर्यता प्रदान कीजिये। हे! भगवती इन्द्राक्षी आपको बारम्बार नमन करता हूँ।

**इन्द्राक्षी यंत्र- 300/-**

घर में किसी प्रकार का कलह, मतभेद, समस्याएं या परेशाानियां, पति-पत्नी में मतभेद, कौटुम्बिक कलह, पुत्र का विपरीत विचार रखना, पुत्रवधू की तरफ से परेशानियां या सास का प्रतिकूल व्यवहार आदि किसी भी गृहस्थ की समस्या के निराकरण के लिए यह प्रयोग विशेष रूप से लाभदायक और महत्वपूर्ण है।

05.02.22

## गृहस्थ में
# पूर्ण सुख-शांति के लिए

प्रयोगकर्त्ता शुक्ल पक्ष की पंचमी को सफेद आसन बिछाकर पूर्व की तरफ मुंह कर बैठ जाय और सामने भोज पत्र पर निम्नलिखित यंत्र कुंकुम से अंकित कर दे एवं यंत्र के चारों कोनों पर लघु नारियल स्थाापित करें

### यंत्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| 4 | 3 | 1 | 6 |
| 2 | 6 | 7 | 7 |
| 8 | 1 | 8 | 4 |
| 8 | 4 | 2 | 6 |

फिर इस यंत्र की पूजा करे, नारियल पर अष्ट गंध से तिलक लगायें एवं पुष्प चढ़ायें फिर सफेद हकीक माला से निम्नलिखित मंत्र का जप करें। इसमें पांच माला मंत्र जप का ही विधान है। इसके बाद वह भोज पत्र किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें। इस प्रकार तीन पंचमी तक करें। जब तीनों बार प्रयोग सम्पन्न हो जाय तब उस भोज पत्र को शीशे के फ्रेम में मंढ़वाकर घर के पूजा स्थान में या किसी अन्य स्थान पर टांग दें एवं लघु नारियलों को जल में विसर्जित कर दें तो घर की कलह और समस्या मिट जाती है।

**मंत्र – ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं गृहस्थ सुखाय नमः।।**

वस्तुतः यह प्रयोग अत्यधिक अनुकूल है और घर में पूर्ण सुख-शांति के लिए इस प्रयोग को महत्वपूर्ण माना गया है।

साधना सामग्री- 300/-

## ये पांच योगासन करके आप रहेंगे

# चुस्त और सेहतमंद

**योग करते रहने से किसी भी प्रकार का रोग, शोक, संताप, तनाव, अनिद्रा और बीमारी पास नहीं फटकती है। वैसे यदि आपके पास योगासन करने का समय नहीं है तो आप सूर्य नमस्कार करके भी फिट बने रह सकते हैं और यदि समय है तो आप ये पांच आसन अवश्य करें।**

**अपको किसी भी प्रकार का**
**रोग, मोटापा, तनाव, अनिद्रा, श्वास सम्बन्धी, रीढ़ दर्द, रक्त चाप या पेट संबंधी कोई परेशानी है**

**तो निम्नलिखित पांच अत्यन्त ही सरल आसन करके आप उक्त समस्याओं से मुक्त हो सकते हैं।**

**शर्त यह है कि इन्हें नियमित करें और इनको करने के नियमों का पालन करें–**

**1. ताड़ासन**–इससे शरीर की स्थिति ताड़ के पेड़ के समान हो जाती है, इसीलिए इसे ताड़ासन कहते हैं। ताड़ासन और वृक्षासन में फर्क होता है। यह आसन खड़े होकर किया जाता है। नाक से श्वास लेकर वायु को भीतर ही रोककर, पंजे के बल खड़े रहकर दोनों हाथों को ऊपर की ओर ले जाकर फिर फिंगर लॉक लगाकर हाथों के पंजों को ऊपर की ओर मोड़ दें अर्थात् हथेलियाँ आसमान की ओर रहें। गर्दन सीधी रखें। यह ताड़ासन है।

**आसन का लाभ** – इस आसन को नियमित करते रहने से पैरों में मजबूती आती है, साथ ही पंजे मजबूत होते हैं तथा पिंडलियाँ भी सख्त होती हैं। इनके अलावा पेट व छाती पर खिंचाव पड़ने से उनके सभी प्रकार के रोग नष्ट होते हैं। पेट संबंधी रोग दूर होता है। वीर्यशक्ति में वृद्धि होती है। पाइल्स रोगियों को इससे लाभ मिलता है। यह आसन बच्चों को शारीरिक ग्रोथ और लंबाई बढ़ाने में महत्वपूर्ण है। इस आसन से आलस्य दूर होता है। बड़ी आयु में जो कम्पन होता है, वह धीरे–धीरे बन्द हो जाता है।

**2. भुजंगासन**–भुजंग अर्थात् सर्प के समान। सबसे पहले जमीन पर छाती के बल लेट जाएं। टांगे सीधी एक–दूसरे से मिली हुई रहें। अब हाथ को कोहनियों से मोड़ते हुए लाएं और हथेलियों को बाजुओं के नीचे रख दें। अब हथेलियों पर दबाव बनाते हुए सिर को आकाश की ओर उठाएं। पूर्ण आसन की मुद्रा में कुछ क्षण तक बनाये रखने के बाद सांस छोड़ते हुये धीरे–धीरे नीचे आयें, यह भुजंगासन है।

**आसन लाभ** – खासकर इस आसन से तो तोंद कम होती है और फेफड़े मजबूत होते हैं। इस आसन से रीढ की हड्डी सशक्त होती है और पीठ में लचीचापन आता है। इस आसन से पित्ताशय की क्रियाशीलता बढ़ती है और पाचन प्रणाली की कोमल पेशियां मजबूत बनती है और पेट की चर्बी घटाने में भी मदद मिलती है, कब्ज दूर होती है। नवयुवकों को स्वप्नदोष से छुटकारा मिलता है। जिन लोगों का गला खराब रहने की, दमे की, पुरानी खांसी अथवा फेफड़ों संबंधी अन्य कोई बीमारी हो इनको यह आसन अवश्य करना चाहिए।

**3. उष्ट्रासन** –यह आसन हमारे मेरुदण्ड को अपनी प्राकृतिक स्थिति में लाने के लिए बहुत उपयोगी है। चित्त की वृत्तियाँ वश में होती हैं। वज्रासन की स्थिति में बैठने के बाद घुटनों के ऊपर खड़े हो जाएं। घुटनों में फासला रखें। अब श्वास भरते हुये गर्दन को पीछे मोड़ने के साथ ही अपने हाथों को पैर के तलवों पर ले जाएं। थोड़ी देर इस स्थिति में रुकें फिर धीरे-धीरे वापस आ जाएं।

- ताड़ासन बच्चों की शारीरिक ग्रोथ और लम्बाई बढ़ाने में महत्वपूर्ण है।
- भुजंगासन पाचन प्रणाली सुचारू कर कब्ज दूर करने में महत्वपूर्ण है।
- उष्ट्रासन कमर दर्द व सर्वाइकल स्पोन्डेलाइटिस के उपचार में महत्वपूर्ण है।
- गोमुखासन बहमूत्र, मधुमेह तथा स्त्री रोगो के उपचार में महत्वपूर्ण है।
- शवासन नवचेतना जाग्रत कर मानसिक शक्ति बढ़ाने में महत्वपूर्ण है।
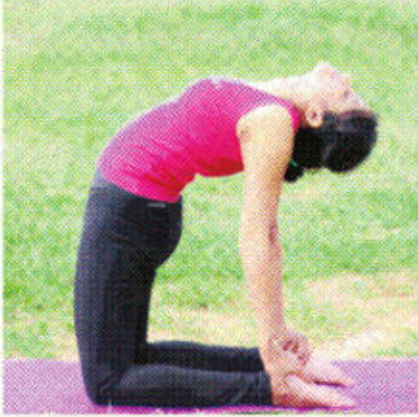
**आसन लाभ**–उदर संबंधी रोग और एसिडिटी को दूर करता है, यह आसन। उदर संबंधी रोग, जैसे-कब्ज, इनडाइजेशन, एसिडिटी रोग निवारण में इस आसन से सहायता मिलती है। गले संबंधी रोगों में भी यह आसन लाभदायक है। इस आसन से घुटने, ब्लेडर, किडनी, छोटी आंत, लीवर, छाती, लंग्स एवं गर्दन तक का भाग एक साथ प्रभावित होता है, जिससे कि उपर्युक्त अंग समूह का व्यायाम होकर उनका निरोगीपन बना रहता है। श्वास, उदर, पिंडलियाँ, पैर, कंधे, कुहनियों और मेरुदंड संबंध रोग में लाभ मिलता है। कमर दर्द तथा सर्वाइकल स्पोन्डेलाइटिस का श्रेष्ठ उपचार है।

**4. गोमुखासन**–बायीं टांग को मोड़ कर एड़ी को नितंब के नीचे ले जाकर दायें नितंब को एड़ी पर टिकाकर बैठ जाएं। अब दायीं टांग को मोड़ कर एड़ी को बायें नितंब के पास लाएं। इस स्थिति में दोनों जंघाएं एक दूसरे के ऊपर रखा जाएगी, फिर दाहिने हाथ को ऊपर उठाकर पीछे पीठ की ओर मोड़ें तथा बायें हाथ को पेट के पास से पीठ के पीछे ले जाकर दाहिने पंजे को पकड़ने का प्रयास करें। गर्दन और कमर सीधी रखें, इसी प्रकार दूसरी ओर से करें, यह गोमुखासन है।

**आसन लाभ**–इससे श्वास संबंधी सभी तरह के रोगों मे लाभ मिलता है। यह छाती को चौड़ा कर फेफड़ों की शक्ति को बढ़ाता है, जिससे श्वास संबंधी रोग में लाभ मिलता है। यह आसन सन्धिवात, गठिया, कब्ज, अंडकोष वृद्धि, हर्निया, यकृत, गुर्दे, धातु रोग, बहुमूत्र, मधुमेह एवं स्त्री रोगों में बहुत लाभदायक सिद्ध होता है।

**5. शवासन**–शवासन को करना सभी जानते हैं। यह संपूर्ण शरीर के शिथिलीकरण का अभ्यास है। इस आसन को करने के लिए पीठ के बल लेट जाएं। समस्त अंग और मांसपेशियों को एकदम ढीला छोड़ दें। चेहरे का तनाव हटा दें। कहीं भी अकड़न या तनाव न रखें। अब धीरे-धीरे गहरी और लंबी सांसें लें। फिर पैर के अंगूठे से सिर की चोटी तक एक-एक अंग को मन की आंखों से निहारें (आँखें बंद करके)। आप इस अंतरंग यात्रा को पूरी निष्ठा व समग्र चेतना से सभी इन्द्रियों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए पूरे ध्यानपूर्वक करें। इसका अभ्यास प्रतिदिन 10 मिनट तक करें।

**आसन लाभ** – यह हाई ब्लड प्रेशर (उच्च रक्तचाप), अनिद्रा और तनाव से ग्रस्त रोगियों के लिए रामबाण दवा है। इससे सभी आंतरिक अंग तनाव से मुक्त हो जाते हैं, जिनसे कि रक्त संचार सुचारू रूप से प्रवाहित होने लगता है और जब रक्त सुचारू रूप से चलता है तो शारीरिक और मानसिक तनाव घटता है। यह आसन कठिन आसन है क्योंकि मन को एकाग्र करना पड़ता है। यह आसन शरीर में नवचेतना का जागरण करता है। इससे मन शांत होता है, मानसिक शक्ति बढ़ती है।

## Saraswati is the Goddess of knowledge and intelligence

**Who can make even the so called dull children to work hard and achieve higher and better. Just try this wonderful ritual and witness the change for yourself.**

***The fact is that no child is dull or brainless. Children only need motivation. And when the counseling and scolding of parents teachers fail it is time to divine help.***

There is a wonderful verse from ancient text that states that if the Beej Mantra of Goddess Saraswati is written with honey and silver straw on tongue of a child then the child starts taking interest in studies and becomes extremely intelligent.

Is this possible in present age?

Not long ago a fourteen year old boy left home because he was constantantly told he could learn nothing Fate steered him to the holy feet of revered Sadgurudev Dr. Narayan Dutt Shrimali. Sadgurudev saw in him a strong will to achieve something in life. He allowed the child to live with him and subjected him to some very severe tests. But he came out successful in every ordeal.

And then dawned day when Sadgurudev gave him Saraswati Diksha and the flow of intelligence that he experienced within left him overawed. After this there was no looking back and within a year the boy had imbibed the knowledge all four Vedas, the Upanishads and various other texts.

***The boy grew up to be Gyaaanaanad - joy of knowledge. People who came into his cantact were left amazed y his intellect.***

If you wish your child to progress fast in life, if you want your daughter or son to top in studies, if you have a dream for him or here to choose an elite course then this amazing ritual could help you to fulfil your wish. It is a divine boon for the children of this age and surely they should not be deprived of it.

If child is too to young to try itself the mother or father could do it on behalf of their ward. Without doubt this Sadhana can meke your child rise high in life and enable him or her to become famous nationally.

On a Moday try this ritual betweem 4:30 am and 7 am. Sit facing North having had a bath, wearing yellow clothes. Sit on a yellow mat- Cover a wooden seat with yellow cloth and on it place **Saraswati Yantra.**

Bathe the Yantra with with water and then make a mark on it with sandalwood paste. The offer prayers to the Guru and chant four rounds of Guru Mantra.

Next light a ghee lamp incense.

After this chant the following verse praying to the Goddess Saraswati for success.

***Shuklaam Brahma Vichaar Saar***
***Paramaamaadhyaam jagadvyaapineem,***
***Veenaa-pustak-dhaarinneem Bhayadaam***
***maalikaaam Vid-Dhateem Padamaasane***
***Sansthitaam, Vande Taam Parameshwareem***
***Bhagwateem Buddhipradaam Shaardaam.***

Place **Meghani Gutika** on right side of Yantra. On it offer fragrance and rice grains.

Then with honey and a straw of silver write the Beej **Mantra of Saraswati** *Ayeim* on the tongue of the child. Take water in the right palm and pledge thus - ***I am accomplishing this Sadhana for my child named.... with surname.....***

Let the water flow to the ground. Then chant 11 rounds of the following Mantra with **Sfatik rosary.**

**Om Ayeim Vaagvaadinyei Ayeim Om.**

After this tie the Gutika on the arm of the child. On the next full moon night drop the Yantra and rosary in a river a pond.

**Sadhana Article- 540/-**

# Divya Suryatva Sadhana

## Healthy and Vitality

**Om Namah Sahastra Baahave Aadityaay Namo Namah,**
**Namaste Padhyam Hastaay Varunnaay Namo Namah,**
**Sarvagah Sarvabhuteshu Na Hi Kinchitvayaa Binaa.**
**Charaachare Jagatyasmin Sarva Deh Vyavasthitah.**

**I bow down before Lord Aaditya, who has thousand hands representing the rays emanating from his divine form, and I bow down before Lord Varun who holds a lotus his hand. O Lord ! You are Omnipresent and Omniscient and without you, life cannot exist. You are present in every life-form existing on this earth.**

The whole life system on this earth survives due to the vital life energy of the sun, called Surya Dev in Indian scriptures. In fact, sun is a manifestation of the Ultimate Power, the Param Brahm and is a unique conflunce of divine powers and radiance which is capable of making a person total in respect of all the four essential aspects of life i.e. - Dharma (Righteousness), Arth (Wealth), Kaam (Pleasures) and Moksh (Salvation). All living beings whether Gods, humans, animals, microorganisms or plants, depend on the energy from the Sun in order to subsist. All the realms of this solar system exist and thrive due to the energy received from it. Hence the sun is an incomparable source of vital life energy.

In the **Padam Puran** it has been expounded that a person is absolved of all sins by *the Darshan or the glimpse of Surya Dev at the time of sunrise, and he can attain salvation by worshipping the Sun. Brahmins while carrying out Sandhya (morning and evening prayers) raise their hands and thus worship the Sun.*

It is said that a sinful person becomes pious just by the contact of the sun rays with his body. A person can even get rid of all diseases by worshipping Sun. Many great boons are obtained from the sun because, although one cannot have the Darshan of

Lord Vishnu, Shiva and other Gods so easily, every life form can see the sun.

History of India reveals that much stress has always been laid on the worship of Sun and several temples have been raised in his honour. Even in other countries sun has been worshipped for ages. Temples of sun have been found in Iran, Afghanistan, Egypt, Greece, and many other countries. Among the nine planets in Astrology sun is the most important, Sadhana of sun promises fame, respect, power and success to the Sadhak.

By performing the Sadhana of Surya Dev all ailments and evil planetary effects are also vanquished. A person may be afflicted by any congenital disease yet if he accomplishes the **Divya Suryatva Sadhana** he is sure to be cured of the ailment forever. In fact this Sadhana is the best to attain a healthy and disease-free life.

### Divya Suryatva Sadhana

Before commencing the Sadhana procure a **Divya Surya Yantra.** On any Sunday get up in the Brahm Muhurat (4.30 am to 6 am) and go upto your terrace or to some open place where you can see the sun rising. You should arrange for sweets and fruit, a banana leaf, red sandal wood paste, vermilion and flowers.

Wash the place where you intend to carry out the Sadhana. Lay down the banana leaf on the floor and on it draw a circle with vermilion, and place the **Surya Yantra** in the circle. Apply a mark of red sandalwood paste on the Yantra and offer the sweets, fruit and flowers before it.

Flold your hands and bow down before the sun, and pray to him-

"O Lord! You are pure, sacred and the Preserver of the whole world. You are the life force present in all life forms and you are the protector of all life on this earth. You are vanquisher of all ailments, diseases, darkness, sorrows and poverty. You are the best friend in this world and you always keep a vigilant eye on all life in this solar system. Hence O Lord! Please vanquish all diseases present in my body and bless me with a healthy life."

After speaking out these words chant the following Divya Surya Mantra 108 times with a **Sfatik rosary**, sitting before the Yantra, facing the morning Sun.

**MANTRA : Om Ghrinnim Suryaay Phat**

**मंत्र : ।। ऊँ घृणिं सूर्याय फट् ।।**

After chanting the Mantra offer water to the Sun God. The righty way to do this is to take water in a copper tumbler and stand facing the rising sun. Then slowly pour out the water onto the ground before you, with your eyes directed at the sun. After offering water pick up the Yantra and touch it to the disease-affected parts of your body.

Continue this practice every day till the next Sunday. If you cannot do the Sadhana in the open then place the Yantra in a sacred place in your house and perform the ritual.

*Before commencing the Sadhana one should worship the Guru and chant at least one rosary of Guru Mantra. The water offered to the Sun God should contain the following articles- Holy water of the Ganga (or pure water), honey, unbroken rice grains, red sandal wood paste, milk, curd and a red flower.*

**Sadhana Articles : 500/-**

उपहारस्वरूप प्राप्त करें

## शक्तिपात युक्त दीक्षा

भगवती जगदम्बा का सर्वाधिक सशक्त स्वरूप ललिताम्बा है। यह जगदम्बा का विराट स्वरूप है।

वे ही अलग-अलग रूपों में अलग-अलग माध्यमों से हमारे जीवन का कल्याण करने वाली हैं और एक माँ के समान हमारे जीवन के सुख-दुख में सहायक हैं।

# ललिताम्बा दीक्षा

माँ कोई भी कार्य क्यों न कर रही हो, कितनी ही व्यस्त क्यों न हो उसका पूरा ध्यान अपने बच्चों पर लगा ही रहता है। वह अपने बच्चे की हर भाषा पहचानती है। देवी ललिताम्बा महाकाली का ही एक स्वरूप है। महाकाली के तेजस्वी व सौन्दर्यमय स्वरूप का नाम ही ललिता है। यह हमारे जीवन में सुख, सौभाग्य, धन-धान्य, यश-प्रतिष्ठा देने में सहायक है एवं इस दीक्षा को ग्रहण करने से साधक को आध्यात्मिक क्षेत्र में दिव्य अनुभूतियाँ होने लगती हैं।

**मंत्र**

**।। ॐ श्री ललितायै ह्रीं ऐं फट् ।।**

**योजना केवल 11, 12 एवं 19 जनवरी 2022 के लिए है**

किन्हीं पांच व्यक्तियों को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 2250/- 'नारायण मंत्र साधना विज्ञान', जोधपुर के बैंक के खाते में जमा करवा कर आप यह दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। दीक्षा के लिए फोटो आप हमें संस्था के वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर भेज दें। अधिक जानकारी के लिए गुरुधाम जोधपुर कार्यालय के फोन नम्बर पर सम्पर्क करें।

## 9 जनवरी 2022

# सूर्य लक्ष्मी साधना शिविर

**शिविर स्थल :** संताजी सभागृह, बुधवार बाजार, सोमवारी क्वार्टर, , **नागपुर (महाराष्ट्र)**

आयोजक मण्डल-नागपुर- वासुदेव ठाकरे-9764662006, छत्रपाल सिंह गौर-9422673269, किशोर वैध्य-9371710599, आकाश गुप्ता 9284549716, गुलाब सिंह बैस, गणेश भोयर, प्रेम सिंह बघेल, शामलालजी राम, अशोक पाण्डे, उज्वल येरणे, उत्तम सिंह गहरवार, संजय सिंह गहरवार, भरत सिंह बैस, मधुकर अंतुरकर, दिलीप गुल्हाणे, संदीप पोहेकर, खुशाल कोरेकर, नरेन्द्र ठाकरे, सारंग चौधरी, प्रविण नागरकर, अजय वांढरे, तुषार अंतुरकर, संजय रेड्डी, सौरभ बारके, शोभाराम लोटे, संजय डवरे, ललित सावरकर, रवि भाके, तुषार तलखंडे, गिरीघर, भण्डारा : देवेंद्र काटेखाये-7744946669, नरेन्द्र काटेखाये, तिलकचंद कापगते, ग्यानेश्वर बेंदेवार, संजय खेडीकर, चन्द्रपुर : वतन कोकास- 94221 14621, पंकज घाटे, विलास खाण्डरे, पवन कांडलकर, विजय जयसवाल, वर्धा-चन्द्रकान्त दोड-8379080867, शिवा गव्हाने, आकाश बुरले, धीज वाघाडे, अनिकेत ऊरकुडे, अर्पित कोटमकार, अकोला-राजेश सोणोने 9823033719, रविन्द्र अवचार, भास्कर कापडे, शाम दायमा, पुंजाजी गावंडे, यवतमाल-श्रीकांत चौधरी-9822728916, देवांशु दिपक येण्डे, सचिन ईंगले, नंदकिशोर भागवत, कैलाश शेबे, अमरावती-रोहीत काले-8554068558, हरीश गिरी, ललित गेडेकर, विष्णु जायले, गडचिरोली-दुल्लुराज ऊईके-9422615423, नेताजी कुनघाडकर, ऊत्तम पिंपरे, पतीराम मडावी, अरविंद पेद्दिवार, गोंदिया-डि के डोये 92262 70872, संजय पिल्लारे, सुरेन्द्र लिल्हारे, कमल जी,देवेन्द्र देशमुख, बालाघाट-नरेन्द्र बोम्परे-9406751186, सुरेश रावते, संतोष परिहार, अखिलेश श्रीवास्तव, कृष्णकुमार ठाकरे

## 14 जनवरी 2022

# सूर्य साधना शिविर

**शिविर स्थल :** कमला भवन (गेस्ट हाऊस) नियर, जार्ज टाऊन थाने के पास, सोहबतिया बाग, संगम पेट्रोल पम्प के बगल में, **प्रयागराज (उ.प्र.)**

आयोजक मण्डल-प्रयागराज- इन्द्रजीत राय-8210257911, 9199409003, सूर्यनारायण दुबे एवं विद्या देवी-7408169214, अजीत श्रीवास्तव-9889041343, सदानंद राय, राजेश श्रीवास्तव एवं श्वेता श्रीवास्तव-7985467138, सिद्धनारायण त्रिपाठी, अजय दुबे, गयाप्रसाद यादव, ज्ञानचंद जयसवाल, मनीष शेखर,, अतिन्द्र सिंह, रामचन्द्र केशरवानी, विनय कुमार, सिपाही लाल, हरिशंकर शर्मा, आश सिंह, विनीता श्रीवास्तव, बृजेश कुमार श्रीवास्तव, सन्तोष निगम, गायत्री बाजपेयी, एस. ए. अवस्थी, विजय शुक्ला, ए.के. साहू, गाटगी राय, चन्द्रबाला, भोलेश्वर मिश्रा, चित्रकूट-राजेश दुबे, मिर्जापुर-अनिल जयसवाल, मनोज सेठ, मनोज शर्मा, रामआचार्य पाण्डे, विजयानंद गिरी, देवेन्द्र नाथ मिश्रा, मुनमुन दुबे, अमित, अंशु मिश्रा, संतोष मिश्रा, आ.सि.सा. परिवार मुगलसराय-सुनील सेठ, जयदेव घोष, मनोज पाण्डे, पप्पू, शिवकुमार जयसवाल, भानुप्रताप यादव, आ.सि.साधक परिवार वाराणसी-अजय जयसावल, प्रेमनंदन पाण्डेय, दिनेश सेठ, आशीष दुबे, लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी, ललन शर्मा, जौनपुर-अमरनाथ पाण्डे, राजपत सिंह, डॉ. जयप्रकाश, प्रभात, सुल्तानपुर-महन्त त्रिपाठी, राजेश मिश्रा, पवन तिवारी, बादशाहपुर-अजय गुप्ता, राजू गुप्ता, लखिमपुर-भोले सिंह, बाबा सूरज मालदास, बबेरू, सोनुजी, लखनऊ-अजयसिंह, सतीश टण्डन, आ.सि. साधक परिवार आजमगढ़, लाटघाट, रौनापार, अम्बेड़कर नगर, बरहलगंज, दोहरी घाट के समस्त गुरु भाई-बहन, गोरखपुर-के.के. शुक्ला, बलिया-विंद्याचल पाण्डे, सतना (म.प्र.)-डी.के. पाण्डे

## 16 जनवरी 2022

# गुरु-शिष्य मिलन समारोह शिविर

**शिविर स्थल :** मां कमला उत्सव हॉल, मीठापुर बस स्टैण्ड, बाईपास मोड़, विग्रहपुर, **पटना (बिहार)**

आयोजक मण्डल - इंद्रजीत राय-8210257911, 9199409003, महेन्द्र शर्मा-9304931127, संजय सिंह-9934682563, टुनटुन यादव- 99050 22385, अनुराग शर्मा-7834999000, मुन्ना सिंह, पंकज, दिव्यांश-9608241286, मनोज मिश्रा, कौशलेन्द्र प्रसाद, डॉ. संजय जी, डॉ. मधुरेन्द्र कुमार, रंजनकुमार गुप्ता, खगौल-तारकेश्वर, एकंगर सराय-मुकेश विश्वकर्मा, अरविन्द, गया-उमाशंकर यादव, सुरेश पण्डित, रविन्द्र कुमार, निखिल, धर्मेन्द्र कुमार, औरंगाबाद-कामता प्रसाद सिंह, धनंजयसिंह, कुदरा-शिवशंकर गुप्ता, आ.सि.साधक परिवार बिदुपुर के समस्त गुरु भाई-बहन, आ.सि. साधक परिवार मुजफ्फरपुर-पंकज कुमार, रजनी रंजन त्रिवेदी, रमन झा, प्रकाश कुमार, धीरज झा, धर्मेश, आ.सि. साधक परिवार दरभंगा-अभय कुमार सिंह, ताजपुर-प्रभुजी, लगनिया-संजीव चौधरी, राजकुमार दास, मोतिहारी-सुरेश भारती, रामेश्वर भगत, हत्था कलौंजर -अरुण कुमार सिंह, रामसियार भंडारी, आ.सि. साधक परिवार बेगुसराय, अनिल पासवान, ढोली-प्रवीण कुमार, पुसा-प्रेमलाल पासवान, परबत्ता-अनिरुद्ध झा, आ.सि. साधक परिवार मुरलीगंज के समस्त गुरु भाई-बहन मुंगेर-निवास सिंह, मंजु देवी, तोई मजरोई (बरबीगाह)-तरुण कुमार प्रभाकर, विपिन कुमार सिंह, डॉ. रमाकान्तसिंह, पप्पूजी, बरबीगाह-देवेन्द्र कुमार, सुभाष पण्डित, डॉ. बिरमनी कुमार, प्रवेश दास, सुधीर कुमार, प्रभानन्द पासवान, नवादा-दिनेश कुमार पण्डित, नादिर गंज (राजगीर) -बारहन विश्वकर्मा, रामअवतार चौधरी, शम्भूजी, शेखपुरा- प्रवीण कुमार और चंदन, अ.सि. साधक परिवार लक्खीसराय के समस्त गुरु भाई-बहन, बाढ-प्रह्लाद सिंह, मोकामा-रोजकानंद बत्स, कटिहार-शैलेष सिंह, मधेपुरा-आनंद निखिल, पुरनिया-दयानंद शर्मा, आदित्य, भागलपुर-शिवानंद झा, सुनील यादव

## 26 जनवरी 2022

# गुरु शिष्य मिलन समारोह

**शिविर स्थल :** होटल M 4 U (एम फॉर यू) हमीरपुर रोड, नजदीक बस स्टैंड, **घुमारवीं, जिला-बिलासपुर (हि.प्र.)**

**आयोजक मण्डल-घुमारवीं-** ज्ञान चन्द रतन-9418090783, धर्म देव शर्मा-9805820830, राजेश कुमार 8219200398, संजय शर्मा एडवोकेट -9218502781, हेम लता कौण्डल-9816048648, प्रदीप गुप्ता- 9816047662, गोवर्धन-9816093560, हेम राज-9418673737, प्रेम सागर -7018166875, नरेन्द्र-8219547388, डॉ. सुरेश ठाकुर-7018035767, पिंकी-9817068928, रोशन लाल (सन्तोषी)-9418266838, प्रकाश राणा-8580903884, सुषमा-9805139373, बीना- 9418528102, जगदीश ठाकुर-7018265076, यशवन्त राणा-8218259028, कमलेश ठाकुर-8219597325, बलदेव भाटिया-9817194811, विजय भाटिया-9418091433 जय पाल शर्मा-9418075136, शुकां राम-9736298911, तिलक राज-8219834869, रविन्द्र कुमार-9816307688 ललित कुमार-9643676057, स्नेह लता-8278849848, उत्तम-9817190815, कश्मीर सिह-9816125858, सागर-9459318584, यसुमति-9418520478, सुरेन्द्र शुक्ला-7018176331, राजू सेन 9882966096, अवतार-9829262928, सिरी राम-9816491011, डॉ. सुमन-9418257738, संतोष-9816160261, सुभाष नड्डा-9817171928, जगदीश गदी-9816764766, सतपाल-8988724134, मंशा राम -8894880584, अमर नाथ शर्मा-9817083130, सन्जू बाबा -9418005236, सुरेन्द्र-9817044770, अश्वनी-9817724090, चमन -9805876001, विजय-9817055316, 9625474643, रानी- 9817481437, जगदीश (मरहोल)-9816592904, सुन्दर-9736144322, रामस्वरूप-9418460221, बरठीं-प्रकाशो-9418084207, तलाई-गोपाल-9805986985, डॉ. राजेश-9625478910, राम लाल-98168417466, विश्वानाथ-9816574250, बिलासपुर-जीवन लता-9418046965, राजेश भारद्वाज -7018418938, धर्म पाल-9418450251, पुरुषोत्तम भारद्वाज (ETO)-9816859201, अंकुश-9736257462, कन्दरौर-सुरेश चन्देल-7018535326, सदा राम-9816243101, पालमपुर-संजय सूद-9816005757, देव गौतम-9894075015, सीमा चन्देल, ओंकार राणा, सुनन्दा, धर्मशला- केसर गुरंग, संध्या, नगरोटा सूरियां-ओम प्रकाश शर्मा-9418250674, काँगड़ा-अशोक कुमार-9736296077, राजू, सुनील नाग, चौतड़ा-संजीव कुमार-8894513763, रमेश, सुन्दरनगर-जयदेव शर्मा-9816314760, रविन्दर नाथ-9418726430, नीलम, पृथ्वीसिंह, सरकाघाट-रोशन लाल, जगदीश वर्मा, अशोक कुमार, के.डी. शर्मा, जाहू-सागरदत्त, प्रभुदयाल, मण्डी-महिन्दर गुप्ता-9418043420, बंशी राम ठाकुर-9805042544, डॉ. भुवन, ऊना-अमरजीत-9418350285, प्रदीप-8847627196, शिमला-तुलसीराम कौण्डल, चमनलाल कौण्डल-9418040560, हमीरपुर-राजेन्द्र शर्मा-9418134039, डॉ. गगन-9418125421, प्यार सिंह-9625304976, कुलदीप-9459012418

## 30 जनवरी 2022

# महामृत्युंजय सदाशिव साधना शिविर

**शिविर स्थल :** मिश्रा क्लासेज कैम्पस, **लाटघाट** (निकट यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया), **जिला - आजमगढ़ (उ.प्र.)**

**आयोजक मण्डल-**इन्द्रजीत राय-8210257911, 9199409003, अजय जायसवाल, व्यास मिश्रा-9454337040, विन्ध्यवासिनी राय-8009857156, 9450734456, दुर्गा प्रसाद मौर्य-9454618123, डॉ. सुमन नारायण-7007692878, हेमन्त दुबे-9506480297, लाटघाट -दया शंकर शुक्ला, द्विग्विजय नाथ दुबे, संजय राय, कमलेश राय, श्रीमती निर्मला चौरसिया, डॉ. राम किसूनसिंह, डॉ. शशांक राय, डॉ. दिनेश सिंह, डॉ. रत्नेश पाण्डेय, डॉ. शिवम यादव, डॉ. अनिरुद्ध सिंह, डॉ. श्रीकृष्ण मौर्य, दिनेश चौरसिया, रामकेवल सिंह, योगेन्द्र सिंह, रामसिंह मौर्य, विनोद कुमार, विजय कुमार, संजय कुमार, विजय बरनवाल, विजय शंकर यादव, अनिल जायसवाल, मुनिष चन्द्र मिश्रा, लालती देवी, रौनापार-अभय नारायण सिंह पटेल, रविशंकर यादव, अनिल यादव, जयबहादुर पटेल, बालचंद सिंह, ओमप्रकाश गोड़, राममूरत यादव, मनोज श्रीवास्तव, अरुण श्रीवास्तव, उमेश गुप्ता, शंकर गुप्ता, पतिराम यादव, सीताराम यादव, रामरूप यादव, आजमगढ़-लवकुश महाराज जी, रामदर्शन यादव, विंध्याचल पाण्डेय, घ्नश्याम तिवारी, रवि उपाध्याय, संजय पाण्डेय, चुन्नीलाल, विजय मिश्रा, जितेन्द्र यादव, राजदेव राय, राधेश्याम दूबे, दोहरी घाट, बड़हलगंज -दयाशंकर तिवारी, राजकुमार राय, अजय राय, डॉ. राजीव पाण्डेय, संतोष राय, संतोष गुप्ता, संतोष मौर्य, मोती चौहान, रामकुंवर सिंह, शंकर साहनी, नित्यानन्द मिश्रा, शिवांकर तिवारी, आनन्द तिवारी, सुजीत राय, विरेन्द्र शाही, जितेन्द्र यादव, अच्छेलाल चौरसिया, रामगोबिन्द यादव, गुणाकेश पाण्डेय, श्रीकृष्ण यादव, मऊ-विंध्याचल चौहान, अशोक गोड़, बलिया-सरोज, प्रवीन प्रजापति, वाराणसी-लक्ष्मीकांत त्रिपाठी, अरुण पाण्डेय, आशीष दुबे, गोरखपुर-के.के. शुक्ला, रामनारायण पटवा, योगी रमेश नाथ, शकुंतला यादव, सेतभान यादव, बद्रीनारायण श्रीवास्तव, पुनीत श्रीवास्तव, श्याम सुन्दर पाण्डे, अशोक इस्त्री, राजकिशोर गिरी, प्रमोद कुमार चौहान, खुशबू गुप्ता, अमर नाथ

## 13 फरवरी 2022

# माँ धूमावती सायुज्य माँ बगलामुखी साधना शिविर

**शिविर स्थल :** वृन्दावन धाम, सीतासागर के सामने, गैस एजेन्सी के पास, **दतिया (म.प्र.)**

**नोट : 12 फरवरी को पूज्य गुरुदेव के साथ हवन सम्पन्न होगा एवं 13 फरवरी को साधना शिविर।**

**मुख्य आयोजक मण्डल-**इन्द्रजीत राय-8210257911, 9199409003,

गिरीश विद्रोही-9755833301, रमाशंकर तिवारी-7974917887, शिवराम मीणा (महोवा) राजस्थान-7055064356, अनुराग द्विवेदी (बुढ़ार)-9826612023, राकेश श्रीवास्तव (कटनी)- 8839566954, जगदीष जी, मकवाना (धार)-9893868418, बागसिंह पवार (खलगाट)-9826860921, बासुदेव ठाकरे (नागपुर विदर्भ महाराष्ट्र), 9764662006, सत्यनारायण शर्मा (जयपुर)- 9352010718, राजेन्द्र वैष्णव (चित्तौड़गढ़) राजस्थान - 9649350821, चैतन्य गुंजन योगी, (भुवनेश्वर) उड़ीसा, झांसी - विनोद रायक - 8004274246, प्रमिला शर्मा, राकेश तिवारी-मिसरी लाल मिश्रा, विनय कुमार श्रीवास्तव, राजीव पाठक, ग्वालियर - सुमित अहुजा, संजीव बुंदडेला, संतोश कुमार सिंह, गौरव चौधरी, विनोद कुमार गुप्ता, हरीशंकर तिवारी, टीकमगढ़ - अजय केवट, रामलाल वारण, पन्नालाल रावत, शिवपुर - मरदान सिंह धाकर। भोपाल (नरसिंहगढ़) - मांगीलाल शर्मा, भोपाल - सूर्यदेव सोलंकार, अरूण कोरासिया, कृति सोनलकार, पीयुष सोलंकार, मीष्ठी सोनलकार, सृष्टि सोनलकार, कल्पना ठाकुर, इंदौर - रूपल चावड़ा, रूपेश लकशरी, चंचला शर्मा, संजय शर्मा, खलगाट - रवि सोलंकी, अंतिम शुक्ला, मुकेश खंडेलवाल, जितेन्द्र पटेल, धार - विजय जी दनगाया, नारायण जी चरण, जगदीश जी तवंर, शांति लाल जी पाटीदार, सीताराम जी पटेल, लालराम पाटीदार, निखिल कुमरावत, देवास - संतोष पठारे, उज्जैन - सुरेश खत्री, कटनी - अभिषेक तिवारी, बरही - सुभाष पटेल, मधुरानन्द, सतना - डी. के. पाण्डेय, ए.पी. मिश्रा, रीवा - अमित मिश्रा, डॉ. राजेश्वर वर्मा, संजय शर्मा, बैतुल - आकाश मुलीक, प्रयागराज - अजित श्रीवास्तव, सूर्यनारायण दुबे, वाराणसी - वेद प्रकाश जयसवाल, आजमगढ़ - विंध्याचल पाण्डेय। लालघाट - दुर्गा प्र. मौर्या, विंध्यवासिनी राय, डॉ. सुमन चौरासिया, गोरखपुर - के.के. शुक्ला, मिर्जापुर - अनिल जयसवाल, कानपुर - महेन्द्र यादव, शैलेन्द्र सिंह, मथुरा - मदन मोहन जी, वृंदावन - रेवती रमन जी, उन्नाव - प्रभात जी, लखनऊ - अजय सिंह, सतीष टंडन, आ. सि. सा. परिवार आगरा के समस्त गुरु भाई एवं गुरु बहन। आगरा सिकरी - मुकेश जी, चित्रकुट, गायत्री तिवारी-सरोज सिंह, शिव बाबू सिंह, बबेरू - अरूणेश गुप्ता, रामचरण कुशवाहा, मऊरानीपुर - जगदीश अग्रवाल, ओरछा - जितेन्द्र सिंह, गुरसराय - उमाकांत गुप्ता, नरेन्द्र अग्रवाल, अंबिकापुर (छत्तीसगढ़) - राजकुमार यादव, विवेक श्रीवास्तव, कृष्णा गोस्वामी, देवदत्त साहु, सरजू राम, राजकुमार सत्यनारायण जयसवाल, कैलाश प्र. देंवागन, शक्ति (छत्तीसगढ़) - समेलाल चौहन, चांपा (छत्तीसगढ़) - अजय पटेल, महोवा (राजस्थान) - दिलीप कुमार सैनी-8058420359, जगमोहन मिश्रा, जयपुर - नीरज शर्मा, परम शिवम शर्मा, रघु शर्मा, डबोक उदयपुर (राजस्थान)- बंसीलाल मेनारिया, लीला पालीवाल, लोगर लाल मली, लक्ष्मण लाल मली, शंकर लाल रावत, नाना लाल जी मेघावल, रतन लाल जी सोनी, रमेश चन्द्र वैष्णव, श्रीमती सीमा वैष्णव, अजमेर - श्रीमती सुशीला बाथम, आसाम - पवन दत्ता, बैंगलोर - बाडु पदमगोड्डा, दीनदयाल जी।

## 27 फरवरी 2022

## धूमावती सायुज्य
## माँ बगलामुखी साधना शिविर

**शिविर स्थल :** गुजराती गार्डेन, महावीर नगर (मिलरोड़) भोलेनाथ मन्दिर के पास, **देवास (म.प्र.)**

**आयोजक मण्डल देवास** -संतोष पठारेजी-8319884804, प्रवीण सिंह जादौन-9926060642, धनंजय गायकवाड़-9425043332, गौरव कानुनगो, सुधीर यादव-8871141416, पंकज सिसोदिया- 82696 10232, चेतन राजभट्ट-9993118548, नीरज ठाकुर- 90095 71444, पंकज जैन-7999402935, दिनेश शर्मा-9993063967, दीपक शर्मा-9752266678, बंटी जाधव-8517874555, पियूष शर्मा, भगवान मालवीय, वैभव डाबी, मयंक पठारे, ब्रजेश शर्मा, कृष्णकांत शर्मा, वासुदेव लिखीवकर, रितेश पठारे, मनोज भिलाला जी, जितु जाधव, पूरणमल टेलर, सदानंद बारमासे, सुरेश चंद्र महाजन, अंतिम पूराणीक, दीपक वाकडे, संजय शर्मा, मयूर निमोणकर, ओमप्रकाश परिहार, विमल चौधरी, प्रहलाद प्रजापत, जयदेव चौकटे, लखन विश्वकर्मा, ब्रजमोहन भाटीया, खातेगाँव-हरिओम मीणा, करनावद-आनंद शर्मा, विशाल पाटीदार, जयदीप शर्मा, इन्दौर-अमित हरियाणी, विनोद गोर, नितिन नंदवाल, दिलीप वैद्य, बरखेड़ा सोमा-गोविन्द पाटीदार (निखिल)-9977051225, देवकरण पाटीदार, लक्ष्मीनारायण गामी, संतोष गामी, हुकमचंद गामी, देवराज पाटीदार, जयंतीलाल पाटीदार, हेमराज गामी, शाजापुर-कमलसिंह सोनगरा, सोनकच्छ-नरेश चंद्र जोशी, लक्ष्मीनारायण जोशी, मनीष जोशी, सोनू सोलंकी, करनावद-नन्दकिशोर जाधव, इन्दौर-प्रदीपजी पटोरीया, सोनकच्छ-जितेन्द्र नामदेव, सुरेशचंद्र सेठी, चन्द्रकांत जोशी।

## 01 मार्च 2022

## महाशिवरात्रि महोत्सव
## साधना शिविर

**शिविर स्थल : वैद्यनाथ धाम, देवघर (झारखण्ड)**

**आयोजक मण्डल** -इन्द्रजीत राय-8210257911, 9199409003, सौरभदास गुप्ता (चितरंजन)- 9932858697

## 16-17 मार्च 2022

## होली महोत्सव साधना शिविर

**गुरुधाम, जोधपुर**

# दसुआ में आयोजित साधना शिविर के दृश्य

# रायपुर में आयोजित साधना शिविर के दृश्य

दिल्ली कार्यालय - सिद्धाश्रम 8, सन्देश विहार, एम.एम. पब्लिक स्कूल के पास, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034
फोन नं. : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

Printing Date : 15-16 December, 2021
Posting Date : 21-22 December, 2021
Posting office At Jodhpur RMS

RNI No. RAJ/BIL/2010/34546
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2019-2021
Licensed to post without prepayment
License No. RJ/WR/WPP/14/2018-
Valid up to 31.12.2021

# माह : जनवरी एवं फरवरी में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

**स्थान**
**गुरुधाम (जोधपुर)**
19 जनवरी
10 फरवरी

**स्थान**
**सिद्धाश्रम (दिल्ली)**
11-12 जनवरी
11-14 फरवरी

प्रेषक —
**नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान**
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
पोस्ट बॉक्स नं. : 69
फोन नं. : 0291-2432209, 7960039,
0291-2432010, 2433623
वाट्सअप नम्बर : 8890543002